जीवन से साक्षात्कार

मुझे मोक्ष तथा सच्ची शांति कैसे मिली

बृजेश चौरोटिया

जीवन
से
साक्षात्कार

जीवन से साक्षात्कार

मुझे मोक्ष तथा सच्ची शांति कैसे मिली

आओ, पाओ, जाओ

बृजेश चोरोटिया

जीवन से साक्षात्कार

मुझे मोक्ष तथा सच्ची शांति कैसे मिली

कॉपीराइट © 2008, बृजेश चोरोटिया
पहला संस्करण 2008

इस पुस्तक में लिखे सभी बाइबल वचन, बाइबल सोसायटी ऑफ़ इंडिया द्वारा हिन्दी में प्रकाशित 'पवित्र बाइबल' (The Holy Bible, Hindi O.V. Re-edited, ISBN 81-221-2141-1) से लिये गये हैं।

सर्वाधिकार सुरक्षित

इस पुस्तक का कोई भी भाग तथ्यों को बदलकर किसी भी रूप में लेखक की लिखित अनुमति के बिना नहीं संचारित किया जा सकता है। तथ्यों को बदले बिना सुसमाचार प्रचार के उद्देश्य से इस क़िताब की फोटोकॉपी इत्यादि करने की अनुमति लेखक की ओर से इसी अधिकार सूचना में दी जाती है।

प्रकाशक:
बृजेश चोरोटिया
अपनी प्रति सुरक्षित करने के लिये सम्पर्क करें - Chorotia@gmail.com

FREE ! Download and Print. Not for Sale

मूल्य: 50 रुपये

स्मृति

मेरे पिता स्व. श्री रामस्वरुप चोरोटिया की याद में

समर्पित

यह क़िताब प्रभु यीशु मसीह को तथा पवित्र आत्मा को समर्पित है जिन्होंने मुझे अपने असीम अनुग्रह से अनंतकाल का जीवन दिया तथा मुझे इस क़िताब को लिखने की प्रेरणा दी।

मैं यह क़िताब उन सभी लोगों को भी समर्पित करता हूँ जो आत्मिक जीवन को प्राप्त करने के इस दुनिया के असंख्य तरीकों में खोये हुए हैं कि किसी प्रकार शांति तथा मोक्ष प्राप्त कर सकें। मेरा प्रयास है कि मैं उनके सवालों के जवाब दे सकूँ जो कभी मेरे मन में भी उठे थे।

आभार

मैं सर्वप्रथम मसीह में मेरी बहन, रश्मि का धन्यवाद करता हूँ जिसने परमेश्वर के प्रेम के बारे में मुझे बताया और उद्धार के लिए मेरा मार्ग प्रशस्त किया।

मैं उन सभी भाइयों तथा बहनों का भी धन्यवाद करना चाहता हूँ जो मेरे इस प्रथम प्रयास को सार्थक करने में प्रार्थनाओं में मेरे साथ रहे।

अपने उन सभी मित्रों और सहायकों का भी मैं आभार व्यक्त करना चाहता हूँ जिन्होनें इस क़िताब की आरंभिक प्रतिलीपी को पढ़कर अपने विचार व्यक्त किए।

मैं मेरी मम्मी श्रीमती मीरा चोरोटिया के लिये प्रभु का धन्यवाद करता हूँ जो मेरे लिये प्रेरणाश्रोत रही हैं। मेरी पत्नी प्रेरणा के लिये भी मैं प्रभु का धन्यवाद करता हूँ जिसके प्रेम तथा साथ के बिना मेरी गवाही अधूरी है।

मैं मेरे भाई-बहनों का तथा उन सभी मित्रों, शुभचिंतकों तथा मसीही अगुवों का धन्यवाद करता हूँ जिनका नाम मैंने इस क़िताब में बिना उनकी अनुमति के लिया है। मैं ऐसा कर सका क्योंकि मेरे प्रति उनके प्रेम में मुझे पूरा विश्वास है।

प्रस्तावना

📖 *"जो परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है वह अपने ही में गवाही रखता है। जिसने परमेश्वर पर विश्वास नहीं किया उसने उसे झूठा ठहराया, क्योंकि उसने उस गवाही पर विश्वास नहीं किया जो परमेश्वर ने अपने पुत्र के विषय में दी है। और वह गवाही यह है कि परमेश्वर ने हमें अनंत जीवन दिया है, और यह जीवन उसके पुत्र में है। जिसके पास पुत्र है उसके पास जीवन है; और जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं, उसके पास जीवन भी नहीं है।"*

[1युहन्ना 5:10-12]

वे सभी लोग जो प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमात्मा में विश्वास करते है वो अपने जीवन में एक गवाही रखते हैं।

मैं भी उनमे से एक हूँ।

जीवन से साक्षात्कार मेरे जीवन में ईश्वर की असीम कृपा से किये गये कार्यों का वर्णन है। यह मेरी आत्मकथा नहीं है परन्तु मेरे जीवन की गवाही है। मैंने अपने जीवन के उन सभी पहलुओं का वर्णन किया है जिनमें प्रभु की कृपा से बड़ा परिवर्तन आ गया है।

मैं भौगोलिक सूचना प्रणाली (GIS)से जुड़े व्यवसाय में कार्यरत हूँ तथा उपग्रह से प्राप्त चित्र कई बार अपने कार्य के दौरान देखता हूँ। मैने पाया है कि जो चीजें हम ऊँचाई से देख पाते हैं उनको समान धरातल पर रहते हुए देखना और समझना असंभव है। आज जब मैं जीवन को मानवीय दृष्टिकोण से ऊपर उठकर आत्मिक नज़र से देखता हूँ तो जीवन का एक अलग ही चित्र मुझे नज़र आता है। वही मैं आपको इस पुस्तक के द्वारा दिखाना चाहता हूँ।

मेरा जन्म हिंदू परिवार में हुआ था, इसलिए मेरी अपनी एक विचारधारा थी तथा जब मैंने पहली बार मसीही विश्वास (ईसाई धर्म नहीं) के बारे में सुना तो मेरे लिए यकायक

इसमें विश्वास करना आसान नहीं था । मेरे मन में कई प्रश्न उठे थे जिनके उत्तर पाये बिना मेरे लिये इस मत पर विश्वास करना नामुमकिन था। स्वयं ईश्वर ने मेरे उन सभी सवालों का जवाब दिया जो मेरे विज्ञान प्रभावित तथा तर्क संचालित दिमाग में उठे थे।

मैंने उन सभी विषयों को छूने की चेष्ठा की है जो मेरे सामने तब आये जब मैंने ईश्वर की वास्तविकता की खोज करना शुरू किया। मेरे विचार में हरेक वो व्यक्ति जो ईसाई परिवार में पैदा नहीं हुआ, जब वह ईश्वर की सच्चाई की खोज शुरू करता है तो इन सवालों का सामना ज़रूर करता है ।

इस क़िताब की विषय़वस्तु इतनी विशाल है कि मुझे लगता है कि शायद मैं इससे पूरा न्याय न कर सकूँ फ़िर भी मैं प्रयास करूँगा की अपना सारा अनुभव इन पन्नों में उंडेल दूं। मैं अपने आपको इस योग्य नहीं समझता की परमेश्वर के वचन (बाइबल) के सिद्धांतों को समझा सकूँ, इसलिए मैंने अपने अनुभव और विश्वास के अनुसार सिर्फ़ वो बातें लिखीं हैं जो मेरे जीवन में घटी हैं और प्रभु ने मुझे समझाई हैं।

जैसा कि मैंने कहा है कि यह क़िताब मेरे जीवन की गवाही है इसलिए कई जगह नामों, स्थानों तथा समयों का उल्लेख भी इसमें मिलेगा। मैंने अपनी जानकारी में सभी बातें सच्चाई के साथ लिखी हैं। फिर भी सभी घटनाएँ समयानुसार क्रम में लिखीं हों, ऐसा आवश्यक नहीं है। मैंने अपनी बात को समझाने के लिए गवाहियों का उल्लेख वहीं किया है, जहां ज़रूरी था ।

कहीं कहीं मैंने व्यक्ति विशेष के नाम आज़ादी के साथ लिये हैं, क्योंकि वे सभी मेरे जीवन में प्रमुख स्थान रखते हैं और मेरे लिए आशीष का कारण रहे हैं।

प्रकाशक तथा लेखक,
बृजेश चोरोटिया

विषय-सूची

आओ!

परिचय 13
यह पुस्तक क्यों 21
क्या आप तैयार है 31
पारिवारिक पृष्ठभूमि 39
परमेश्वर से मिलन 51
परिवर्तन 59
उद्धार 71

पाओ!

प्रार्थनाओं के उत्तर 81
परमेश्वर की विश्वासयोग्यता 107
आशीषें 121

जाओ!

ईश्वरीय जीवन कैसे जीयें 141
निष्कर्ष 153

परिशिष्ट- प्रश्न और भ्रातियां i

आओ!

1 परिचय

जीवन!

जी हां; यह क़िताब जीवन के विषय में है। उनके बारे में जो जीवन को भरपूरी से जी रहे हैं और उनके विषय में जो इसे खो रहे हैं।

क्या आपको नहीं लगता कि आप जिन्दगी से कुछ और चाहते हैं?

क्या आपको ऐसा लगता है कि जीवन में कुछ तो कमी है? क्या आप अपनी जिन्दगी बेहतर जीना चाहते हैं – भरपूरी के साथ? उससे कहीं बेहतर, सफल और सार्थक, जैसी वो आज है!

अगर आपका उत्तर 'हां' है, तो मेरे साथ इस यात्रा में शामिल हो जाइये!

"प्रसिद्ध दार्शनिक, इतिहासकार और तर्कशास्त्री, बर्ट्रांड रसैल, जो अनेक दार्शनिक ग्रथों के लेखक रहे है तथा जो अपने नास्तिक विचारों के लिए जाने जाते हैं, उन्होंने कहा है – जब तक हम एक ईश्वर की कल्पना ना करें या उसके अस्तित्व को ना मान लें, तब तक जीवन के उद्देश्य के बारे में सोचना निरर्थक है।"

एक समय मैं भी अपनी जिन्दगी के महत्वपूर्ण पहलुओं से अनजान था और एक भरपूर ज़िंदगी से महरूम था, पर आज मैं अपने जीवन को बहुत गहराई से, भरपूरी के साथ जी रहा हूँ। मेरे जीवन में मैं एक ऐसी शांति और आनंद का अनुभव करता हूँ जो मेरी समझ से बाहर है। मेरा पूरा विश्वास तथा मेरी अटूट आस्था ईश्वर में है जो कि मेरा परममित्र हो गया है और मेरे जीवन का अधिकार अपने हाथों में रखता है। वो मेरे सारे टेढ़े मेढ़े मार्गों को सीधा करता है, हर मुश्किल में मेरी सहायता करता है, अपनी आशीर्षें मुझे देता है और एक विजयी जीवन जीने में मेरी सहायता करता है।

मैं ये सारी आशीर्षें आपके साथ बांटना चाहता हूँ।

***

मेरा विश्वास है कि हमारे सृष्टिकर्ता ने हम सबकी सृष्टि किसी उद्देश्य के साथ की है। हम भी जब किसी चीज़ का निर्माण करते हैं तो उसके पीछे कुछ ना कुछ लक्ष्य और उसके इस्तेमाल के लिए कुछ योजना ज़रूर होती है। उसी प्रकार मेरा मानना है कि हमारे सृष्टिकर्ता ईश्वर ने हम में से हरेक के लिए एक योजना रखी है और हरेक के जीवन का एक उद्देश्य रखा है।

अनंत आशा से भरपूर, आशीषित तथा संतुष्ट जीवन जीने की कुंजी है – उस *उद्देश्य को खोजना* तथा *उसको पूरा करना*। मैं ऐसा हर दिन करता हूँ और हम साथ में इसे सीख सकते हैं।

प्रसिद्ध दार्शनिक, इतिहासकार और तर्कशास्त्री, बर्ट्रांड रसैल, जो अनेक दार्शनिक ग्रथों के लेखक रहे है तथा जो अपने नास्तिक विचारों के लिए जाने जाते हैं, उन्होंने कहा है – जब तक हम एक ईश्वर की कल्पना ना करें या उसके अस्तित्व को ना मान लें (काल्पनिक ही सही), तब तक जीवन के उद्देश्य के बारे में सोचना निरर्थक है। दूसरे शब्दों में कहें तो जीवन के सही उद्देश्य के बारे में विचार करते समय एक ईश्वर का होना अवश्य है।

यह उसी तरह का सिद्धांत है जैसा हमने बचपन में स्कूल में सीखा था। गणित के सवाल (और प्रमेय अर्थात थ्योरम) हल करने के लिए हम किन्हीं बातों को मान लेते थे और उसी पूर्वधारणा के तहत अपने सवाल हल कर लेते थे।

किसी ने कभी इस बात पर प्रश्न नहीं किया कि हमने अपने सवाल कल्पना के आधार पर क्यों हल किये।

तो क्यों न हम ऐसा ही करें। यदि आप ईश्वर पर आस्था नहीं भी रखते तौभी हम कुछ देर के लिए इस बात को मान लेते हैं की *ईश्वर है* और *हम में दिलचस्पी रखता है*।

यदि आप ईश्वर में विश्वास तो करते हैं परंतु उसे व्यक्तिगत रूप से नहीं जानते, यह ऐसा है जैसे सम्भवतया आप भारत के प्रधानमंत्री को जानते तो हैं, परंतु व्यक्तिगत तौर पर नहीं, तौभी हम कुछ देर के लिए इस बात को भी मान लेते हैं की ईश्वर हमसे व्यक्तिगत सम्बंध रखने में रूचि रखता है।

हम इसी अवधारणा के साथ आगे बढ़ते हैं। जैसे जैसे हम आगे चलेंगे, यदि आप विश्वास करें तो ईश्वर का अनुभव कर सकेंगे। आपका इस क़िताब को पढ़ने का निर्णय इस बात का संकेत है कि आपकी इच्छा ईश्वर को पाने की है। प्रभु आपको मनचाहा वरदान दें।

आप कौन हैं, आपने क्या हाँसिल किया है, आप किन बातों में सफ़ल या निष्फ़ल रहे हैं, इन बातों से ईश्वर के प्रेम पर कोई फ़र्क नहीं पड़ता। मैं आपको एक बात बताना चाहता हूँ कि हम अपनी सीमित बुद्धि और संकुचित दृष्टिकोण के कारण *जीवन* की एक बहुत छोटी और धुंधली तस्वीर देख सकते हैं, क्योंकि हमारी सोच का दायरा उन सभी बातों से बनता है जो कि हम अपने परिवार की परम्परा, हमारी संस्कृति, हमारा धर्म जिसमें हम पैदा हुए, हमारी परिस्थिति, हमारी शिक्षा तथा हमारे अनुभवों के कारण, सीखते हैं। परंतु हमारे सृष्टिकर्ता के पास इस जीवन की सम्पूर्ण तथा स्पष्ट तस्वीर है।

हमारी इस यात्रा के अंत तक आप ईश्वर की आपके बारे में योजना और उद्देश्य को समझ सकेंगे; और यदि आप उसे पूरा करने का निर्णय लेंगे तो शांति, आनंद तथा ईश्वर की आशीषों से भरपूर जीवन आपका होगा।

***

अपनी इस यात्रा को शुरू करने से पहले हम कुछ खास बातों को समझ लें जो इस क़िताब को सही तरीके से पढ़ने और ईश्वर से आशीष पाने में हमारी सहायता करेगी।

आइए, एक वैज्ञानिक डाक्टर का उदाहरण देखें-

मान लीजिए, किसी डाक्टर ने एक आम बीमारी का टीका या दवा का अविष्कार किया, जैसे की – सरदर्द या कुछ और, जो गम्भीर ना हो और जिससे हमें डर ना लगता हो; तो हममें से कितने लोग इस अविष्कार में रूचि लेंगे?

मेरे ख़्याल से ज़्यादा नहीं, या शायद कोई नहीं।

परंतु उसी वैज्ञानिक ने यदि कैंसर या एड्स जैसी गम्भीर तथा घातक बीमारी के टीके का निर्माण किया हो तो शायद सारी दुनिया की नज़रें उसी अविष्कार पर लग जाएँगी, खासतौर पर तब, जब यह बीमारी महामारी की तरह फ़ैल रही हो। हम ज़रूर अपने आपको और अपने परिवार को सुरक्षित करना चाहेंगे।

उसी प्रकार यदि हम इस यात्रा के महत्व को ना समझें, तो बहुत संभव है कि हम इस क़िताब को पढ़ने के उद्देश्य को भी खो दें। जीवन बहुत महत्वपूर्ण है और पाप घातक है। *पाप* कैंसर और एड्स से भी ज्यादा घातक बीमारी है – जो न सिर्फ़ इस जीवन का नाश करता है बल्कि मृत्यु के बाद के आत्मिक जीवन का भी नाश करता है।

मैं आपको सावधान करना चाहता हूँ और यह बताना चाहता हूँ की जीवन बहुत क़ीमती है – यह सिर्फ़ ईश्वर की ओर से मिलता है।

विचार कीजिए – आज की सबसे आधुनिक चिकित्सा विज्ञान और तकनीक के बावज़ूद वैज्ञानिक जीवन पैदा नहीं कर सकते हैं और न ही किसी मृत व्यक्ति में जान फ़ूँक सकते हैं। यह सिर्फ़ ईश्वर का काम है।

शायद कोई मुझसे विवाद करना चाहे की वैज्ञानिकों ने डॉली भेड़ का क्लोन बनाया है। बिना किसी विवाद में पड़े, मैं सिर्फ़ इतना कहूँगा की जो क्लोन वैज्ञानिकों ने बनाया था उसमें भी आरम्भिक ऊत्तक या डी.एन.ए. पहले से जीवित भेड़ से उठाया गया था, जिसको ईश्वर ने ही रचा था।

मेरे एक प्रिय मित्र, जो कि सूक्ष्म-जैविकी (माइक्रोबायोलॉजी तथा बायोटैक्नोलॉजी) में विज्ञान अनुसंधान छात्र हैं, उनके साथ ईश्वर, सृष्टि, पाप तथा उद्धार के सम्बंध में बातचीत करते समय एक बार उन्होंने कहा की वह भी ईश्वर होने का दावा कर सकते हैं क्योंकि उन्होंने अपने अनुसंधान के दौरान रसायनों के प्रयोगों से कुछ नए प्राणी-जीवों का निर्माण किया है।

जितने विद्वान वो हैं, मुझे इस बात में संदेह नहीं है कि उन्होंने ऐसा प्रयोग किया हो, परंतु मैं इस बात से आश्वस्त नहीं हूँ कि वो सफ़ल रहे होंगे। जितने लोग ऐसा दावा करते हैं, उन सभी से मैं एक सवाल करना चाहता हूँ तथा एक सुझाव देना चाहता हूँ।

मेरा प्रश्न है – ऐसे तमाम प्रयोगों के लिए ज़रूरी सामग्री (अर्थात रसायन इत्यादी) किसने बनाया – क्या वैज्ञानिकों ने या ईश्वर ने? मेरा सुझाव है – यदि आप ईश्वर में विश्वास नहीं करते, तो कोई बात नहीं, किसी दिन शायद करें – परंतु अपने आपको ईश्वर बनाने की या सच्चे ईश्वर का बहिष्कार करने की गलती भयंकर भूल कभी ना करें।

परमेश्वर आपसे प्रेम करता है, यदि आप इस बात को समझ नहीं सकते – तो सिर्फ़ *विश्वास* ही कर लीजिये। यूं भी, आत्मिक तथा आध्यात्मिक जीवन का सम्बंध समझ से नहीं बल्कि विश्वास से होता है।

मैं समझता हूँ की कोई भी वैज्ञानिक अपने पिता को पिता मानने से पहले डी.एन.ए. (DNA) टेस्ट नहीं कराते। वे भी अपनी माँ, परिजनों तथा अन्य परिचित लोगों की गवाही से यह बात मान लेते हैं। शायद ऐसी परीक्षा करने की बात का विचार भी उनके दिमाग में ना आता हो।

परमेश्वर पर विश्वास करना भी इसी तरह है। आपने उसको नहीं देखा तो क्या हुआ, जिन्होंने उसे देखा है, उसको महसूस किया है, उसके साथ चले हैं – उनकी गवाही पर विश्वास कीजिये। अपने जीवन में बहुत से काम हम *विश्वास* के द्वारा करते हैं। उन बातों को समझना और साबित करना मुश्किल या नामुमकिन हो सकता है। यहाँ तक कि हम इस बात की ज़रूरत भी नहीं समझते।

उदाहरण के लिए – क्या हम बस या टैक्सी में बैठने से पहले ड्राइवर का लाइसेंस देखते हैं कि वो बस चलाना जानता भी है या नहीं, या फिर क्या हम हवाईजहाज में बैठने से पहले पाइलट की हवाईजहाज उड़ाने की क्षमता को जानने की कोशिश करते हैं। कुर्सी पर बैठने से पहले क्या हम इस बात को जाँचते हैं कि वो हमारा बोझ संभाल सकती है या नहीं या फिर क्या हम सरदर्द की दवा लेने से पहले दवाइयों का रासायनिक विष्लेषण करते हैं? बैंक में पैसा जमा करने से हम अपने कड़े परिश्रम से कमाये पैसे को क्यों सुरक्षित समझते हैं? महीना भर काम करने से पहले हमारे पास क्या आशा होती है कि हमारी तनख़्वाह (सैलेरी) हमें मिल जाएगी? ये सभी काम हम विश्वास से ही तो करते हैं।

जब हम कार या बस में यात्रा करते हैं तब तो हम निशान, हॉर्डिंग तथा दिशा-निर्देशों को देखकर ये जान लेते हैं कि हम किस दिशा में जा रहे हैं और कहाँ तक पहुँचे हैं, परन्तु जब हम हवाईजहाज में यात्रा करते हैं, तो हमें ना तो दिशा-निर्देश दिखते हैं न कुछ और – सिर्फ़ बादल; और यदि और ऊँचाई पर चले जाएँ तो कुछ भी नहीं बल्कि गहरा नीला आकाश। फ़िर भी क्या हमें विश्वास नहीं रहता की हम अपने गंतव्य (लक्ष्य/ठिकाने) पर पहुँचेंगे?

जब हम पाइलट पर भरोसा कर सकते हैं, तो परमेश्वर पर क्यों नहीं?

इस भौतिक दुनिया में, हम एक कहावत अक्सर सुनते हैं – विश्वास, देखने से होता है – परंतु आत्मिक दुनिया में – देखना, विश्वास से होता है। परमेश्वर को सिर्फ़ विश्वास से ही देखा जा सकता है। यदि आप उसे देखना चाहते हैं तो विश्वास कीजिए की *वो है* और उन्हें मिलता है जो पूरे मन तथा विश्वास से सही जगह उसको खोजने की इच्छा रखते हैं।

इन सब बातों के कहने से मेरा मतलब यह है कि – जिस प्रकार व्यक्तिगत गवाहियाँ आज भी दुनियाभर में ज़्यादातर अदालतों में मुक़दमों को सुलझाने तथा निर्णय लेने में इस्तेमाल होती हैं – उसी प्रकार यह क़िताब मेरी गवाही है कि किस प्रकार परमेश्वर ने मेरे जीवन में बड़ा परिवर्तन किया है। मैंने पूरा प्रयास किया है कि सब बातें सच्चाई के साथ बता सकूँ कि कैसे परमेश्वर ने मेरा जीवन सार्थक बना दिया है।

मैं अपने जीवन का खुला चित्र आपके सामने रखना चाहता हूँ – कि मैं कौन था, किस प्रकार ईश्वर से मेरी मुलाक़ात हुई, किस प्रकार उसने मेरा जीवन परिवर्तन किया, कैसे उसने पाप की मेरी बड़ी समस्या का निवारण किया, किस प्रकार उसने मुझे शैतान की गुलामी से स्वतंत्र किया और किस प्रकार वो हर पल मेरे साथ रहकर आशीषित जीवन जीने में मेरी सहायता करता है।

***

आइए, इस यात्रा के लिए हम कुछ नियम बना लें, ताकि इस यात्रा का पूरा लाभ उठा सकें। आप इनमें से कुछ या सारे नियमों को तोड़ना चाहें तो मैं

आपको रोकूंगा नहीं, परंतु तब आप इस क़िताब के पढ़ने का उद्देश्य खो देंगे। हम निम्नलिखित नियमों का पालन करेंगे:

- हम बाइबल को परमेश्वर का पवित्र तथा जीवित वचन समझेंगे, चाहे आपस में हमारे कितने भी वैचारिक (या धार्मिक भी) मतभेद क्यों न हों।
- जहां भी बाइबल के वचन इस क़िताब में लिखे हैं उन्हें हम ऊँची आवाज़ में पूरी निष्ठा के साथ पढ़ेंगे और उस पर कुछ देर विचार करेंगे कि परमेश्वर हमसे क्या कहना चाहता है। संभव है की ऐसा करके आप परमेश्वर की मीठी महीन आवाज़ को सुन सकें। उसके बाद (बिना पढ़े और बिना विचार किए नहीं) आप अपने निष्कर्ष निकाल सकते हैं।
- शायद आपने ईश्वर को उस तरह से ना पहचाना हो, जैसे मैं आपको बता रहा हूँ; फ़िर भी आप उसे जीवित मानेंगे, ठीक उसी तरह जैसे आप जीवित हैं। शुरू में शायद ये थोड़ा अज़ीब लगे, पर आप उससे वैसे ही बात कर सकते हैं जैसे किसी भी दूसरे जीवित व्यक्ति से करते हैं। उसकी बातें सुनने के लिए हमें बाइबल से पढ़ने की ज़रूरत पड़ती है क्योंकि परमेश्वर आत्मा है और शारीरिक कानों से उसकी आवाज़ सुनना मुश्किल है (परंतु नामुमकिन फ़िर भी नहीं)।
- हम इस बात को आधार लेकर आगे चलते हैं कि आप सच में ईश्वर को जानना और पहचानना चाहते हैं और आप इसके लिये सभी वो बातें पूरा करेंगे जो ज़रूरी हैं। मेरा मानना है कि यदि आप नम्रता और दीनता के साथ प्रभु के सम्मुख आएँगे तो वो आपको निराश नहीं करेंगे।
- इस क़िताब में दी गई सभी जानकारीयों तथा विवरणों को आप मेरे व्यक्तिगत अनुभव की दृष्टि से देखेंगे।
- 🕮 - बाइबल से पढें और विचार करें
- 💬 - सामान्य विचार हेतु बिन्दु

***

इस समय, जब आप इस क़िताब को पढ़ते हैं, तो मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि वो आपके हरेक प्रश्न का उत्तर दे जो आपके दिमाग में वर्षों से रहे होंगे। मुक्तिदाता, शांतिदाता परमेश्वर आपके साथ रहे। आइए हम साथ में प्रार्थना करें -

हमारे सृष्टिकर्ता परमेश्वर, हम मानते हैं और विश्वास करते हैं कि आप ही ने सारी सृष्टि की रचना की है। सूरज, चाँद, तारों और सारे ग्रहों अर्थात पूरे ब्रहमांड के रचनाकार आप हैं। धरती और इसमें दिखनेवाली हरेक वस्तु को आपने सृजा है। हम आपके आभारी हैं कि आपने हमें यह पुस्तक दी है। जब हम इसको पढ़ते हैं, हमें अपना अनुग्रह दीजिए ताकि हम परमसत्य को जान सकें। हमारी सहायता करें ताकि हम आपसे उद्धार पा सकें। हमारे व्यक्तिगत पापों को क्षमा कर दीजिए और अपने पवित्र आत्मा से भर दीजिये और हमारी आत्मिक आँखों को खोल दीजिये ताकि हम आपको देख सकें और सारे शारीरिक तथा आत्मिक बंधनों से छूट जाएँ। आमीन

2 यह पुस्तक क्यों

क्या आपको आश्चर्य हो रहा है कि जब इतनी सारी क़िताबें, शायद लाखों, पहले ही ईश्वर तथा विश्वास के विषय में लिखी जा चुकी हैं तो फ़िर एक और क़िताब की क्या ज़रूरत है?

मेरे पास इस बात का उत्तर है। किताब से बढ़कर, यह मेरे जीवन में घटी घटनाओं का लिखित वर्णन है जो मुझे हरदम याद दिलाएगी कि परमेश्वर ने मेरे लिए क्या किया है। मेरे इन अनुभवों से न सिर्फ मैं बल्कि अन्य लोग भी परमेश्वर की सामर्थ को देख सकते हैं ताकि उसमें विश्वास कर सकें।

कुछ लोग ईश्वर को किसी के अनुभव की दृष्टि से समझना पसंद नहीं करते क्योंकि किसी के भी अनुभव को नकारना या उसकी जाँच करना, असम्भव नहीं भी, तो मुश्किल ज़रूर है। लेकिन मेरे सारे अनुसंधान तथा खोज से मुझे यह मालूम हुआ कि हम ईश्वर को समझ (सीख) नहीं सकते पर उसके प्रेम का अनुभव कर सकते हैं और उसकी सर्वव्याप्त उपस्थिति को महसूस कर सकते हैं।

"कुछ लोग ऐसा मानते हैं और कहते भी हैं कि ईश्वर, नर्क तथा उद्धार इत्यादि कमज़ोर लोगों द्वारा गढे हुए विचार हैं जो जीवन की कठिन परिस्थितियों से लड़ने की हिम्मत नहीं रखते और इन बातों का सहारा लेते हैं। पर मेरे विचार में, हम में से हरेक को परमेश्वर के अस्तित्व में विश्वास करना ही चाहिए, चाहे हम किसी भी धर्म के अवलम्बी क्यों न हों।"

इसका मतलब यह नहीं है की वो है ही नहीं, या काल्पनिक है। नहीं ऐसा नहीं है, परंतु उसके स्वरूप को समझाना कठिन है। इसे सिर्फ़ विश्वास से समझा जा सकता है।

यदि आप उन लोगों में से एक हैं जो अनुभव से नहीं बल्कि सिद्धांत और ज्ञान से उसे जानना चाहते हैं, तो शायद यह क़िताब आपके लिए ना हो; फ़िर भी मैं आपसे आग्रह करूँगा कि इसे आप पूरा पढें; इससे आपको पता

चलेगा, कि परमेश्वर अपने लोगों के जीवन में क्या क्या करता है और कैसे वो जीवन परिवर्तन करता है। क्या पता, कल को यह आपका भी अनुभव साबित हो।

***

परमेश्वर ने मुझे प्रेरणा दी की मैं अपनी गवाही को लिखूँ ताकि ऐसा न हो की मैं खास और ज़रूरी बातों को भूल जाऊं। तब मैंने एक पन्ने की गवाही लिखकर इंटरनेट पर डाली। उसको पढ़ने के बाद एक बहन ने कहा कि सच में प्रभु के मेरे जीवन में किए बड़े कामों की गवाही को पढ़कर उनका उत्साहवर्धन हुआ था और उन्होंने मुझसे आग्रह किया कि मैं इसे और विस्तार से लिखूँ। उस बहन के कहने पर मैंने इसे 3 पन्नों में लिखा। उसके बाद जब मैं अपनी पत्नी सहित गिडियन्स सेवा का भाग बना और उन्हें मालूम हुआ कि जो पहली बाइबल मुझे दी गई थी वो एक गिडियन बाइबल थी तो संस्था के अगुवा लोगों ने मुझे इसे और विस्तृत रूप से लिखने को कहा ताकि सेवकों को उत्साहित किया जा सके। मैं इस बात का जीवंत उदाहरण था कि जब किसी को परमेश्वर का वचन दिया जाता है तो उससे कैसा अनूठा काम होता है। मैंने अपनी गवाही को और विस्तृत रूप में लिखा।

इसके बाद मेरा ऐसा कोई विचार नहीं था कि मैं इसे एक क़िताब के रूप में लिखूँ।

***

कुछ दिनों पहले मैंने एक कहानी सुनी जिसने मुझे इस क़िताब (मेरी विस्तृत ग़वाही) को लिखने के लिए प्रेरित किया। इसके पीछे परमेश्वर ने जो उद्देश्य मुझे दिया है वो ये है कि वो सभी लोग जो उसी धर्म में पैदा हुए हैं, जिसमें मैं भी हुआ और जो अपने सृष्टिकर्ता परमेश्वर से दूर होकर अंधकार में भटकते हुए ईश्वर की खोज कर रहे हैं पर उससे कोसों दूर हैं (परंतु वो उनके इतना नज़दीक है, फ़िर भी वे उसे देख नहीं सकते), उसको जान सकें और उसे पा सकें।

कहानी जो मैंने सुनी, वो एक जवान लड़के संजय (परिवर्तित नाम – असली नाम ब्रायन) के विषय में थी। वह 17 वर्ष की उम्र में एक सड़क दुर्घटना में

मारा गया। इसे एक सत्य घटना भी माना जाता रहा है। जोशुआ हेरिस द्वारा लिखी गई पुस्तक (आई किस्ड डेटिंग गुडबाय) में एक कहानी में संजय अपनी असामयिक मृत्यु से पहले एक लेख लिखता है।

उस लेख में संजय ने लिखा कि उसने एक स्वप्न देखा जिसमें एक विशाल कमरा था। उसकी दीवारों पर चारों तरफ़ दराज़ें लगी थीं, जैसे की बैंक के लॉकर में या पुस्तकालय (लाइब्रेरी) में, जहां पुस्तकालय में उपलब्ध सभी क़िताबों की सूची, लेखक तथा क़िताब के नाम से लगी होती है। उस कमरे में इन फ़ाइलों का जैसे अंबार सा लगा था।

जैसे वो पास गया, पहली दराज़ जो उसने देखी, उसपर लिखा था – 'लड़कियां जिन्हें मैं चाहता था'। उसने उसे खोला और सूची-पत्रों (कार्ड) को पढ़ने लगा। उसे यह देखकर बड़ा झटका लगा कि वो उन नामों को जानता था। वो जल्दी जल्दी सभी दराज़ों को खोल खोल के देखने लगा। उस निर्जीव कमरे में उसके जीवन की सभी छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी बातों का पूरा कच्चा चिट्ठा मौजूद था; यहां तक कि उन बातों का भी ज़िक्र था जिन्हें वो कभी का भुला चुका था।

एक एक कर खोल कर देखते समय कुछ अच्छी तो कुछ बुरी बातें, कुछ गौरवान्वित करने वाली तो कुछ शर्मिंदा करने वाली बातें सामने आने लगीं। अपने लेख में संजय लिखता है कि कुछ बातें तो उसे इतना शर्मिन्दा कर रहीं थीं कि वो इधर उधर देख लेता था कि कोई उसे देख तो नहीं रहा।

वो आगे लिखता है - 'दोस्त' नामक दराज़ में जो फ़ाइलें थीं उनमें से एक थी – "दोस्त: जिन्हें मैंने धोखा दिया"। उस फ़ाइल के सभी पन्ने सच्चाई से मेरी दास्तां बयान कर रहे थे।

उसने आगे लिखा है की सभी पन्नों पर अलग अलग शीर्षक (टाइटल) लिखे थे। उसके आश्चर्य का कहीं ठिकाना नहीं था क्योंकि उसके जीवन की हरेक बात इन फ़ाइलों में लिखीं थी। हरेक पन्ने पर अंत में उसका नाम तथा हस्ताक्षर अंकित थे।

इस तरह उसके जीवन के हर क्षेत्र के शीर्षक से फ़ाइलें तथा पन्ने (सूची-पत्र) वहां थे – क़िताबें जो मैंने पढ़ीं, झूठ जो मैंने बोले, सहायता जो मैंने की, चुटकुले जिनपर मैं हँसा इत्यादि।

अन्ततः उसको एक फ़ाइल मिली – 'हवसपूर्ण विचार' ।

वो लिखता है कि एक सिहरन उसके सारे शरीर में दौड़ गई। यह फ़ाइल कुछ ज्यादा ही मोटी थी। उसने थोड़ा सा फ़ाइल को बाहर निकालकर पढ़ने की कोशिश की लेकिन उसमें दी गई बारीक जानकारियों को देखकर वो हक्का बक्का रह गया। वो सोच रहा था कि कौन है जो उसके बारे में इतना कुछ जानता है।

वो आगे कहता है – "सिर्फ़ एक विचार मेरे मन में कौंध रहा था – कोई इस फ़ाइल को कभी ना देखे – यहाँ तक कि कोई भी कभी इस कमरे को न देखे, मुझे यह सब नष्ट करना है।"

पागलों की तरह वह उस फ़ाइल को फ़ाड़ने की कोशिश करने लगा। आश्चर्य की बात यह थी की वह एक भी पन्ना फ़ाड़ नहीं सका, वो पन्ने जैसे स्टील के बने थे। वो अपना सिर पकड़कर दीवार के सहारे खड़ा होकर सोचने लगा की इस घड़ी में वो क्या करे। उसने एक दीर्घ सांस ली – जैसे कह रहा हो "क्या मेरे बस में कुछ भी नहीं"। वह बहुत निराश हो चला था।

वो नीचे बैठ गया जैसे उसके घुटनों में जान न हो और ज़ोर ज़ोर से रोने लगा। उसे अपने आप पर शर्म आ रही थी। वो फ़ाइलें उसकी आंखों के सामने घूम रही थीं। बस यही विचार बार बार आ रहा था कि कोई कभी भी इस कमरे के बारे में ना जाने – हो सके तो इस कमरे को हमेंशा के लिए ताला लगाकर चाबी कहीं छुपा दे।

इतने में उसने देखा कि यीशु मसीह ने उस कमरे में प्रवेश किया और हरेक फ़ाइल को पढ़ने लगे। संजय आगे लिखता है कि उसने यीशु मसीह की आँखों में बहुत वेदना देखी – इतना दुखः जितना खुद उसे भी नहीं था। वो हरेक पन्ने पर संजय की जगह अपने हस्ताक्षर करने लगे।

प्रभु को हस्ताक्षर करते देख संजय बेतहाशा उन पन्नों को देखने लगा और प्रभु यीशु को हस्ताक्षर करने से रोकने लगा। वह बोल रहा था - नहीं, नहीं,

आपका नाम वहां नहीं होना चाहिए। पर सारे पन्नों पर यीशु मसीह के हस्ताक्षर थे, पता नहीं प्रभु ने यह कैसे किया। वो हस्ताक्षर इतने गहरे थे कि संजय का नाम कहीं दिखता ही नहीं था। वे प्रभु यीशु के लहू से लिखे थे। प्रभु यीशु ने हरेक पन्ने पर, जो संजय के पापों के लेख थे, एक एक कर अपने हस्ताक्षर कर सारे पापों का ज़िम्मा अपने ऊपर ले लिया।

संजय पापमुक्त हो गया था क्योंकि यीशु ने उसके सारे पाप क्षमा कर दिए थे।

***

जब मैंने पहली बार इस कहानी को सुना था तो मेरी आँखों से आंसू निकल पड़े थे। इस कहानी ने मुझे इस क़िताब को लिखने के लिए प्रेरित किया क्योंकि मुझे यह अहसास हुआ कि यह सिर्फ़ संजय कि कहानी नहीं है बल्कि यह हम में से किसी की भी कहानी हो सकती है।

सोचिए. क्या यह आपकी कहानी नहीं हो सकती है?

ज़रा सोचिए, आपने अपने जीवन में क्या क्या किया है जो आप सबसे छुपाना चाहेंगे। आपकी असफ़लताएँ, आपकी गलतियां, वो सारे ग़लत विचार जो आपने अपने माता-पिता और भाई-बहन के बारे में किए। वो समय जब आपने अपने सबसे अच्छे मित्रों की आलोचना की, वो समय जब आपने किसी लड़के अथवा लड़की को व्यभिचार के लिए लुभाने की कोशिश की, आपके कामुकतापूर्ण विचार, वो पुस्तकें और कहानियां जो आपने पढ़ीं, वो चुनाव जो आपने किए, वो झूठ जो आपने बोले, वो लोग जिनको आपने सताया, यह सूची क़ाफी लम्बी हो सकती है।

यदि आप अपने आप से सत्य बोल सकते हैं तो आप जानेंगे कि जो मैंने कहा वो एक सच्चाई है। आप इस यात्रा में मुझपर आपकी अगुवाई करने के लिए विश्वास कर सकते हैं।

***

विश्वास आत्मिक जीवन का आधार है, और जो ईश्वर को जानना चाहे, उसे इस बात पर विश्वास करना चाहिए कि बाइबल परमेश्वर का वचन है जिसके द्वारा परमेश्वर अपने आपको मानवजाति पर प्रकट करना चाहता है। मैं कई

तर्कों और सबूतों के आधार पर यह साबित करने की कोशिश कर सकता हूँ की बाइबल परमेश्वर का जीवित वचन है – परंतु फ़िर भी विश्वास के बिना आप इसे समझ नहीं सकते।

इतने पर भी यदि आप बाइबल पर विश्वास नहीं करते, तो भी एक बार को सोचिये – क्या हो यदि बाइबल ही एकमात्र सच्चाई हो। अग़र बाइबल ही परमसत्य है तो आप इसपर अविश्वास करके कहां जाएँगे? और यदि बाइबल में लिखी बातें सच हैं तो आप अपना अनंतकाल का जीवन कहां बिताएँगे।

बाइबल में सुसमाचारों[1] में ऐसा लिखा है -

📖 "*कुछ ढका नहीं, जो खोला न जाएगा; और न कुछ छिपा है, जो जाना न जाएगा। इसलिए जो कुछ तुम ने अन्धेरे में कहा है, वह उजाले में सुना जाएगा; और जो तुम ने कोठरियों में कानों-कान कहा है, वह छत पर से प्रचार किया जाएगा।*"

[लूका 12:2, 3]

संजय के स्वप्न को हम एक ईश्वरीय दृष्टांत के रूप में देख सकते हैं। हम में से हरेक को इस दुनिया को छोड़ने के बाद न्याय सिंहासन के सामने खड़ा होना पड़ेगा। क्या आप उस पवित्र परमेश्वर के सामने खड़े हो सकेंगे?

कदापि नहीं। जब तक आपके पापों का लेखा मिट ना जाए जैसे कि वो कभी थे ही नहीं, तब तक आप स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकते और न ही परमेश्वर से नज़रें मिला सकते हैं।

यीशु मसीह इस पापमय दुनिया में इसलिये आए थे, ताकि क्रूस पर अपने प्राणों का बलिदान कर हमें पापमुक्त करें। प्रभु यीशु ने अपना रक्त बहाकर हमारे पापों को धोकर साफ़ किया है और हमें मृत्यु के बन्धनों से मुक्त किया हैं। इसे हम विश्वास द्वारा अनुभव कर सकते हैं।

1[मत्ती, मरकुस, लूका तथा युहन्ना रचित सभी सुसमाचार परमेश्वर के मानव रूप में मनुष्यजाति के पाप क्षमा करने के लिए एक उद्धारकर्ता के स्वरूप में आने की खुशखबरी है। यह मत्ती, मरकुस, लूका तथा युहन्ना नामक चेलों की नज़र से तथा पवित्र आत्मा की प्रेरणा से यीशु मसीह के आने की तथा उनके द्वारा किए गए पवित्र बलिदान का विवरण है जो हमें परमेश्वर के असीमित प्रेम तथा दया के बारे में बताते हैं]

मैं यह खुशखबरी सबको सुनाना चाहता हूँ और यह पुस्तक इस दिशा में मेरा एक कदम है। आप इस बात निम्न दृष्टांत के द्वारा समझ सकते हैं।

कल्पना कीजिए कि मैं एक गरीब आदमी था और मुझे एक ऐसी बीमारी हो गई जिसका इलाज मेरे शहर में उपलब्ध नहीं था। मुझे बताया गया कि दूसरे देश में एक चिकित्सक (डॉक्टर) था जो मेरी बीमारी का इलाज कर सकता था। तो क्या मैं उस चिकित्सक से सिर्फ इसलिये इलाज नहीं करवाता क्योंकि वो मेरे देश में नहीं रहता? मैं तो तैयार था मगर मेरे पास इतने पैसे नहीं थे। फ़िर भी मैंने उससे बात की और उसने अपने खर्चे पर आकर मेरे घर में मेरा इलाज किया। मुझे कहीं जाने की ज़रूरत नहीं पड़ी। वो मेरी परिस्थिति को समझता था और इसीलिए उसने मुझसे कुछ फ़ीस भी नहीं ली।

क्या ये मेरी कृतघ्नता नहीं होगी कि मैं अपने दिल की गहराई से उसका धन्यवाद ना करूँ?

क्या आप मुझे स्वार्थी नहीं कहेंगे यदि मैं अपने चारों और उन लोगों को देखूं जो उसी बीमारी से ग्रसित हैं जिसमें कभी मैं भी था, और फिर भी चुपचाप रहूं? क्या आप को यदि उस बीमारी से छुटकारा मिला होता और आप अपने परिजनों तथा मित्रजनों को उस बीमारी में दुखः पाते देखते, तो क्या आप उस डॉक्टर का पता उन सबको न बताते?

हम सब 'पाप' की गंभीर बीमारी से ग्रसित हैं जो अन्ततः आत्मिक मृत्यु को लाती है जो कि कुछ और नहीं बल्कि हमेंशा के लिए ईश्वर से अलगाव और नर्क की आग में जलना है। प्रभु यीशु हमें इससे छुटकारा दिला सकते हैं। आप मेरी बात पर यक़ीन करें या न करें – परन्तु यही सच्चाई है।

***

कुछ लोग ऐसा मानते हैं और कहते भी हैं कि ईश्वर, नर्क तथा उद्धार इत्यादि कमज़ोर लोगों द्वारा गढ़े हुए विचार हैं जो जीवन की कठिन परिस्थितियों से लड़ने की हिम्मत नहीं रखते और इन बातों का सहारा लेते हैं।

यदि ईश्वर को मैंने व्यक्तिगत रूप से अनुभव के द्वारा नहीं जाना होता तो मैं भी ऐसे ही लोगों में शामिल होता। लेकिन अपने जीवंत अनुभव के द्वारा मैं जानता हूँ कि परमेश्वर एक सच्चाई है, यीशु मसीह परमेश्वर के पुत्र हैं, पवित्र आत्मा जीवित हैं जो हमें हर दिन जीने की सामर्थ देते हैं।

किसी का भी अविश्वास इस सच्चाई को बदल नहीं सकता।

यदि मैं कहूं कि मैं 'कार' नामक किसी वस्तु में विश्वास नहीं करता और इसी विश्वास (या कार में अविश्वास) के साथ यदि सड़क के बीचों-बीच चलता रहूँ तो सामने से तेज गति से आती कार से मैं अपने आप को बचा नहीं सकता और न ही उस दुर्घटना के परिणाम से।

मेरे विचार में, इंडोनेशिया में आए सूनामी, अमरीका में आए कतरीना तथा ओमान में आए गोनू समुद्री चक्रवातीय तूफ़ानों में सबसे ज़्यादा नुकसान उठाने वाले (यहाँ तक कि जान गवाँने वाले) लोग वो ही थे जिन्होनें या तो इन चेतावनियों पर यकीन नहीं किया या समय रहते सुरक्षित जगहों पर शरण नहीं ली। जो सबसे कम प्रभावित हुए वो वे लोग थे जिन्होनें चेतावनी पर विश्वास किया और सही समय पर सुरक्षित स्थानों पर चले गए।

ईश्वर, स्वर्ग, नर्क, पाप, मृत्यु तथा उद्धार सभी सच हैं – तथ्य हैं। हालांकि हम इन पर विश्वास करने या ना करने के लिए स्वतंत्र हैं परंतु जो विश्वास नहीं करते उनको ईश्वर के न्याय के दिन के लिए कोई आशा नहीं होती। परमेश्वर का वचन तथा उसके सेवक समय समय पर लोगों को इनके विषय में चेतावनी देते रहे हैं। कलीसिया (चर्च) पिछले 2000 वर्षों से इस दुनिया को पाप तथा मृत्यु के खतरे से आगाह करती रही है और मनुष्य के लिए परमेश्वर की आवश्यकता तथा उसके प्रेम के बारे में बताती रही है – क्या आप चेतावनी पर ध्यान देकर अपने आपको अनंतकाल के लिए सुरक्षित करना नहीं चाहेंगे?

परमेश्वर विद्यमान है। जो लोग इस बात को नहीं मानते (नास्तिक) वे या तो इस बात का विरोध करते हैं या वो सिर्फ़ सच्चाई से मुँह मोड़कर और अपनी आँखें बंद किए रहते हैं। यदि हम इस ब्रह्मांड की विशालता को देखें, सारे ग्रहों को, चाँद-सितारों को और धरती में के सारे सुव्यवस्थित (नियमशील) प्राकृतिक प्रकियाओं को देखें तो हम किसी भी तरह ईश्वर के अस्तित्व को

नकार नहीं सकते। हम अवश्य ही यह जान लेंगे कि यह सब ज़रूर एक समझदार और अति विद्वान सृष्टिकर्ता के द्वारा रचा गया है जो जीवित है और जो कि इस प्रकृति का भाग कतई नहीं हो सकता। मेरे विचार में ईश्वर के ना होने का प्रमाण ढूंढना ज़्यादा मुश्किल है।

इस बात में कोई संदेह नहीं कि हम में से हरेक को परमेश्वर के अस्तित्व में विश्वास करना ही चाहिए, चाहे हम किसी भी धर्म के अवलम्बी क्यों न हों। परमेश्वर धर्म की परवाह नहीं करता क्योंकि धर्म परमेश्वर के द्वारा नहीं अपितु मनुष्य के द्वारा ईश्वर के बारे में बनाये गये विचार तथा उसे पाने के तौरतरीके और रीतिरिवाज हैं। धर्म की तो भले ही नहीं पर परमेश्वर हमारी परवाह ज़रूर करता है क्योंकि उसे हम से प्रेम है।

***

मैं इसी सच्चाई के बारे में सबको बताना चाहता हूँ, चाहे वो किसी भी धर्म, जाति अथवा विचारधारा के मानने वाले क्यों न हों। उन सभी लोगों तक पहुंचने के लिए, जिन तक मैं व्यक्तिगत रूप से नहीं पहुँच सकता, मैंने अपने अनुभव इस पुस्तक में लिखे हैं ताकि परमेश्वर की महिमा हो।

इस धरती पर जो जीवन हम बिताते हैं वो एक बहुत ही सीमित समय के लिए है जो कि अनंत जीवन की तुलना में कुछ भी नहीं है। यह इस प्रकार है जैसे कि यहाँ से लेकर चाँद अथवा सूरज तक खींची गई एक रेखा पर, जो कि अनंत जीवन के समान मानी जा सकती है, एक बिंदु भर अंकित कर दिया जाए तो वो इस धरती पर हमारे मानवीय जीवन का समय होगा। हम इस बिंदु जितने जीवन के लिए तो सब कुछ करते हैं पर अनंत जीवन के लिए कुछ नहीं। वह परमेश्वर जो हमारे शरीर में इतनी नसें लगा सकता है जो कि लम्बाई में जोड़ने पर धरती के तीन चक्कर काट सकती है तो क्या वो अपनी सामर्थ्य से हमारा उद्धार नहीं कर सकता? क्या उसे हमारे कर्मों की ज़रूरत है, पर धर्म में हम ऐसा ही करते हैं।

इस क़िताब को लिखने का उद्देश्य यह नहीं है कि मैं किसी धर्म विशेष या पंथ की आलोचना करूँ, परंतु ये कि परमेश्वर द्वारा मेरे जीवन में किए गए विस्मयकारक कामों का बयान करूँ। मैं आपको उत्साहित करना चाहता हूँ

कि आप भी सच्चे ईश्वर में विश्वास करें, उसके प्रेम का अनुभव करें, उसकी सामर्थ में चलें और उसकी महिमा को अपने जीवन में काम करते देखें।

3 क्या आप तैयार हैं

सामान्यतया हम अपने धर्म का चुनाव नहीं करते हैं बल्कि यह हमारे जन्म के साथ ही तय हो जाता है कि हमारा धर्म क्या होगा ठीक उसी प्रकार जैसे जन्म के साथ ही हमारा लिंग भी तय हो जाता है। हमें इनमें से किसी को भी बदलने की ज़रूरत नहीं है, हालांकि कुछ लोग ऐसा करते हैं। धर्म हमें जीवन जीने की नैतिक बातें तो सिखा सकता है पर मोक्ष नहीं दिला सकता, उसके लिये हमें ईश्वर के साथ आत्मिक संबंध बनाना पड़ता है। क्या आप इसके लिये तैयार हैं?

अपनी जिन्दगी के इक्कीस वर्ष मैंने बिना सुख-शांति के गुज़ार दिए। मैं अपने परिजनों के साथ दुःखों में जीवन व्यतीत करता रहा। मैं मुट्ठी में से निकलती रेत के समान अपना जीवन खोता जा रहा था।

21 वर्ष की उम्र में मैंने जाना कि केवल ईश्वर ही आनंदित, शांतिमय और अनंत जीवन का स्रोत है। वह हमें ऐसी शांति और आनंद देता है जो हमारी परिस्थितियों पर निर्भर नहीं करते बल्कि ये दुःख की कठिन घड़ी में और भी ज्यादा उभर आते हैं। वो निराशा के समय में आत्मविश्वास और आशा का संचार करता है।

यीशु मसीह को अपने उद्धारकर्ता प्रभु के रूप में जान लेने के बाद मैंने इस बात पर गहन विचार किया कि सच्ची शांति तथा आशीष का अनुभव करने में मुझे इतने वर्ष क्यों लगे।

अपनी सारी खोज तथा विचार के बाद मैंने यह निष्कर्ष निकाला कि प्रभु यीशु को जानने से पहले मैं परमेश्वर के समीप ही नहीं जाता था और न ही उसके बारे में कुछ सोचता था। मैं बस जीवन से या तो संघर्ष करता जा रहा था या सभी बातों को ऐसे लेने लगा था जैसे वे मेरी नियति थी, जैसे कई लोग कहते थे – मेरी किस्मत।

सच्ची शांति और खुशी सिर्फ़ परमेश्वर की ओर से आती हैं। इन्हें धन, सम्पत्ति, संबंधों, यौन सहवास, प्रसिद्धि इत्यादि दुनिया की अन्यान्य चीज़ों में

खोजने के बजाय यदि आप परमेश्वर की चाहत करें तो वो आपके जीवन में सुख-शांति व आनन्द की भरपूरी देगा।

किसी भी व्यक्ति के लिए, जो सच में परमेश्वर से भेंट करना चाहता हो, उसे कुछ प्रश्नों के उत्तर खोजने की ज़रूरत पड़ेगी। संभवतया, पहले कुछ सवाल 'कौन' से शुरू होंगे, जैसे -

मैं *कौन* हूँ?

ईश्वर *कौन* है?

सृष्टि का रचनाकार *कौन* है?

मेरे पापों का न्याय *कौन* करेगा?

कौन मुझे मेरे पापों से छुड़ा सकता है?

दुसरे तरह के सवालों में 'क्या' की श्रेणी आती है -

पाप *क्या* है?

मेरे पापों का परिणाम *क्या* है?

मैं ईश्वर को पाने के लिए *क्या* करूँ?

मेरे जीवन का उद्देश्य *क्या* है?

मृत्यु के बाद *क्या* होता है?

स्वर्ग और नर्क *क्या* होता है?

सच्चाई की खोज के दौरान अगले प्रश्नों की श्रेणी 'क्यों' वाली होगी-

मैं *क्यों* मानता हूँ कि कोई ईश्वर है?

मुझे उससे मिलने की इच्छा *क्यों* होती है?

परमेश्वर ने मुझे और सारी मानवजाति को *क्यों* बनाया?

हम पाप *क्यों* करते हैं?

दुनिया में बीमारियां और दुःख *क्यों* होते हैं?

हमें मृत्यु *क्यों* आती है?

आखिरी प्रश्नों की माला 'कैसे' वाले सवालों से पूरी होती है।

इस सारी सृष्टि का निर्माण *कैसे* हुआ?

मेरी रचना *कैसे* हुई?

मेरे पाप *कैसे* क्षमा हो सकते हैं?

मैं ईश्वर से *कैसे* मिल सकता हूँ?

अपने आप से आप ये सवाल करें और देखें कि आपको क्या उत्तर मिलते हैं?

मैं *कैसे* आशीषित, शांतिमय तथा सार्थक जीवन जी सकता हूँ?

हमें सत्य की प्राप्ति के लिये इन सारे और शायद कुछ और सवालों के उत्तर खोजने की ज़रूरत पड़ेगी। यदि हम ऐसा कर सकें तो कुछ रुकावटें तो स्वतः ही हट जाएँगी। मैं आपको इन सवालों के हल ढूंढने के लिए प्रेरित करना चाहता हूँ।

***

यीशु मसीह के बारे में प्रथमतया सुनने के तुरंत बाद जो पहला काम मैंने किया वो ये था कि मैंने ईश्वर, धर्म तथा मोक्ष के बारे में अपने सारे ज्ञान को जो कि हिन्दू शास्त्रों, सन्तमत, अम्बेड़करवाद की क़िताबें तथा बौध धर्म और राधास्वामी सत्संग के ग्रंथों को पढ़कर अथवा सत्संगों में जाकर मैंने सीखा था, उन सबको मैंने उपरोक्त प्रश्नों की कसौटी पर कसा और पाया कि ये सभी एक समान बातें करते हैं परंतु मेरे सारे सवालों का उत्तर देने में असमर्थ हैं।

अपने इन प्रश्नों के उत्तर पाने के लिए मैंने बाइबल को भी पढ़ा। मैंने पाया कि बाइबल तो शुरू ही इन प्रश्नों के उत्तर के रूप में होती है। बाइबल का प्रथम अध्याय इस बात को खोलकर बताता है कि कैसे परमेश्वर ने सृष्टि का निर्माण किया। बाइबल आगे यह बताती है कि कैसे और किस उद्देश्य के

साथ परमेश्वर ने प्रथम नर और नारी (आदम तथा हव्वा) की सृष्टि की और फ़िर कैसे उन्होंने परमेश्वर की नज़र में पहला पाप किया और दुःख, मृत्यु तथा बीमारियों के श्राप को अपने ऊपर ले लिया।

बाइबल स्पष्ट रीति से सभी बातों का खुलासा करती है कि क्यों हम पाप करते हैं, क्यों हम जीवन में अलग अलग समस्याओं का सामना करते हैं। बाइबल ये भी बताती है कि परमेश्वर ने मानव की सृष्टि विशेष तरीके से इस उद्देश्य के साथ की कि वो उसके साथ संगति करे और अपनी स्वतंत्र इच्छा से उससे प्यार करे, यही कारण है कि क्यों सिर्फ़ मनुष्य ही ईश्वर को पाने की इच्छा रखता है परंतु जानवर नहीं और यह ही इस बात का भी कारण है कि क्यों मानव ईश्वर को पाने के लिए अलग अलग धर्म के रूप में नए नए तरीके इज़ाद करता है।

बाइबल हमें परमेश्वर के स्वभाव तथा हमारे प्रति उसकी योजनाओं का भी उल्लेख करती है। बाइबल में मेरे सभी प्रश्नों का सुस्पष्ट जवाब मिला। और गौरतलब बात ये है कि बाइबल का अनुवाद विश्व की बहुत सी भाषाओं में तथा भारत की बहुत सी स्थानीय भाषाओं में हो चुका है। आप इस पुस्तक में लिखी बातों को परमेश्वर के वचन से जांच सकते हैं। आप आज ही बाइबल की एक प्रति लेकर ऊपर बताये सभी सवालों के उत्तर पा सकते हैं। यह एक अनोखी पुस्तक है जो जीवन देती है। जब हम परमेश्वर की आवाज़ सुनना चाहते हैं तो यह हमसे जीवंत रूप में बात करती है।

बाइबल परमेश्वर का जीवित वचन है जो कि पवित्र आत्मा की प्रेरणा से लिखा गया। यह अपने आप में एक पूरा पुस्तकालय है जो कि ऐसी 66 क़िताबों का संकलन है जो कि 40 अलग अलग लेखकों के द्वारा, जो कि अलग अलग व्यक्तित्व के स्वामी थे तथा जीवन क्षेत्रों से संबंध रखते थे (जैसे कोई गडरिया, कोई राजा, कोई वैद्य और कोई चुंगी लेने वाला और कोई मछुआरा), तथा जो कि 1500 वर्षों के समयकाल में 3 अलग अलग महाद्वीपों (अफ़्रीका, एशिया और युरोप) में 3 अलग अलग भाषाओं में लिखी गईं। इतने विविध कारकों के होते हुए भी सभी क़िताबें परमेश्वर के प्रेम के एक ही विषय के बारे में बात करती हैं और जिनमें किसी प्रकार का विरोधाभास नहीं हैं।

क्या ये आश्चर्यचकित करने वाली बात नहीं है?

ये सभी तथ्य इस बात को साबित करने के लिए काफ़ी हैं कि बाइबल परमेश्वर द्वारा रचित ग्रंथ है। यदि आप इस बात पर विश्वास नहीं करते तो मैं आपको एक नम्र चुनौती देता हूँ कि आप इस दुनिया के किसी भी पुस्तकालय से ऐसी 66 क़िताबों को ढूंढें जो 40 लेखकों के द्वारा (जो कि विभिन्न श्रेणी के लोग हों) 3 विभिन्न महाद्वीपों में 1500 वर्षों के समयकाल में लिखी गई हों जो कि एक ही विषयवस्तु का विवरण हो और उनमें आपस में किसी भी तरह का कोई विरोधाभास न हो। मैं समझता हूँ कि आप इस चुनौती को पूरा नहीं कर पाएँगे।

ईश्वर के मेरे अनुभव के निचोड़ में मैं आपसे सिर्फ़ एक ही बात कह सकता हूँ – हम परमेश्वर को अपनी सीमित बुद्धि से जान नहीं सकते, तौभी परमेश्वर के लिए ऐसी कोई बाधा नहीं जिसे पारकर वह हमें ढूंढ ना सके या अपने आप को हम पर प्रकट ना कर सके। इसीलिए प्रभु यीशु मसीह इस दुनिया में इंसान बनकर आए। वह कोई परदेसी नहीं है बल्कि हमारा सृष्टिकर्ता परमेश्वर है जिसे पाने की आकांक्षा और प्रार्थना हम जीवनभर करते रहे हैं। हालांकि हम उसे समझ नहीं सकते परंतु विश्वास के द्वारा उसका अनुभव ज़रूर कर सकते हैं।

मैं आपको पापों की क्षमा तथा अनंत जीवन की आशा पाने के लिए दो तरीके बता सकता हूँ। पहला ये कि आप विश्वास करें कि यीशु मसीह परमेश्वर के पुत्र हैं जो आपके व्यक्तिगत पापों की क्षमा कराने तथा स्वर्ग के द्वार आपके लिए खोलने के लिए मानव रूप में आए। यह विश्वास करने के बाद आप उनको अपना उद्धारकर्ता स्वीकार करें और उन्हें अपने जीवन का सम्पूर्ण अधिकार दे दें। अन्यथा दूसरा तरीका यह है कि इस विषय में आप पूरी खोज करें और सारे निष्कर्ष निकालने के बाद जब आप पाएँ कि यीशु मसीह ही सच्चा परमेश्वर है (जो कि मेरा विश्वास है कि ऐसा ही होगा) जो आपसे प्रेम करता है और जो आपके पापों को क्षमा कर सकता है तो फ़िर उसपर विश्वास करें और प्रार्थना के द्वारा उसे अपने जीवन का स्वामी बनाएँ।

मेरे विचार में, यदि आप पूरा विश्वास कर सकते हैं तो पहला तरीका अच्छा है अन्यथा आप दूसरे तरीके पर विचार करें।

***

मेरे व्यक्तिगत जीवन में, मैं परमेश्वर को पाने की अथवा उसे ढूंढने की कोई इच्छा नहीं रखता था, फ़िर भी अपने असीम प्रेम के कारण परमेश्वर ने मुझसे भेंट की तथा मुझे सच्चाई का मार्ग दिखाया ताकि मैं आशीषित तथा सार्थक जीवन जी सकूँ।

मेरा जन्म हिन्दू परिवार में हुआ था। हम लोग इस धर्म की पालना मूर्तिपूजा के द्वारा नहीं करते थे, बल्कि हम मौन साधना तथा सत्संग पद्धति में विश्वास करते थे। जैसा हमें सिखाया गया था उसके अलावा हम ईश्वर के बारे में किसी भी और तरीके से नहीं सोचना जानते थे।

सामान्यतया हम अपने धर्म का चुनाव नहीं करते हैं बल्कि यह हमारे जन्म के साथ ही तय हो जाता है कि हमारा धर्म क्या होगा ठीक उसी प्रकार जैसे जन्म के साथ ही हमारा लिंग भी तय हो जाता है। हमें इनमें से किसी को भी बदलने की ज़रूरत नहीं है, हालांकि कुछ लोग ऐसा करते हैं। हम स्वाभाविक तौर पर ही अपने अपने धर्म का पालन करने लगते हैं और इसी कारण कई बार हम अपने आप को उसी धर्मविशेष की सीमाओं में ऐसे बांध लेते हैं कि सच्चाई की खोज करने तथा उसे स्वीकार करने में हमें असुविधा होती है, खासतौर पर तब, जब सत्य हमें किसी और ही धर्मग्रंथ और विश्वास की ओर संकेत करता है।

मैंने धर्म-परिवर्तन नहीं किया, और न ही धर्म ने मेरा जीवन परिवर्तन किया; इसलिए मैं किसी धर्म में विश्वास नहीं करता और इसीलिए किसी भी धर्म की पैरवी नहीं करूँगा। मैं समझता हूँ कि धर्म हमें अपने रीतिरिवाजों में बांधता है जबकि परमेश्वर हमें स्वतंत्रता देता है। बाइबल के अनुसार उसने हमें यहां तक स्वतंत्रता दी कि हम स्वयं इस बात का चुनाव करें कि हम उससे प्रेम करना चाहते हैं या उसका तिरस्कार। मैं आपको आश्वस्त करना चाहता हूँ कि मैं धर्म के विषय में बात नहीं करूँगा न ही किसी बात को मानने के लिए आपको बाध्य करूँगा इसलिए आप बिना किसी संकोच के इस पुस्तक को पढ़ सकते हैं।

हाँ, मैं बीच बीच में आपको आत्ममंथन के लिए उत्साहित ज़रूर करता रहूँगा। मैं आपसे नम्र निवेदन करता हूँ कि आप भी अपने पूर्वाग्रहों को छोड़कर परमेश्वर को नये तरीके से देखने का प्रयास करें।

चाहे आप किसी भी सम्प्रदाय के मानने वाले क्यों न हों, रोमन कैथोलिक, मुस्लिम, हिंदू, ईसाई (जिसने नये जन्म का अनुभव नहीं किया), अथवा किसी भी और मत को मानने वाले, सच्चाई ये है कि ईश्वर ने किसी धर्म का प्रतिपादन नहीं किया इसलिए धर्म के विषय में सोचना अथवा विवाद करना व्यर्थ है। मेरे विचार में परमेश्वर को तथा अनंत जीवन को पाना तभी संभव है जब कि हम उसके साथ एक प्रेम संबंध स्थापित करें। हम सभी हाड़-मांस के इंसान है और सांसारिक रूप से शरीर में जन्मे हैं, परन्तु परमेश्वर के साथ संबंध बनाने और उसमें जीवन व्यतीत करने के लिए हमें आत्मिक जन्म लेना आवश्यक है। परमेश्वर आत्मा है और हम उससे आत्मिक तौर पर ही सम्बंध रख सकते हैं।

***

मैं मध्यमवर्गीय परिवार में पैदा हुआ और पला बढ़ा। मैंने वो सब कुछ किया जो अपनी बढ़ती उम्र में शायद हरेक लड़का करता है। मैंने गलतियां भी की और अपनी समझ में अच्छे काम भी किये। अपने जीवन में मैंने खुशी के क्षण भी देखे और दुःख की घड़ियां भी बिताईं। जीवन निरंतर अपनी गति से एकसमान चलता जा रहा था जब तक कि यीशु मसीह से मेरा साक्षात्कार नहीं हुआ जो कि स्वयं हमारे जीवन के लेख का लेखक है। जीवित परमेश्वर को जान लेने से मेरा जीवन समूल परिवर्तित हो गया। उसने अपनी चुनी हुई एक बेटी के द्वारा अपने आप को मुझ पर प्रकाशित किया।

कई बार हम ऐसा सोचते हैं कि हम ईश्वर की खोज करते हैं परन्तु सच्चाई इसके विपरीत है। परमेश्वर हमसे प्यार करता है और उसका यह प्रेम हम पर इसी रीति से प्रकट हुआ है कि जब हम पाप ही में थे तभी मसीह हमारे खातिर मानवरूप में आया ताकि हमें हमारे पापों से छुटकारा दिलाए तथा परमेश्वर के साथ, जो कि हमारी जड़ है और जिसके बिना हम सूखते जा रहे हैं, हमारा मेल कराये। उसने हमारे जैसा साधारण परन्तु पापरहित जीवन जीया, हमारे लिए कांटों और कोड़ों की मार को सह लिया, हमारे पापों की कीमत चुकाने के लिए क्रूस पर अपने प्राण त्याग दिए तथा तीसरे दिन जी उठकर 40 दिन तक अपने चेलों के साथ रहा और फ़िर जीवित स्वर्ग में उठा लिया गया। अब वो पिता परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठा है और हमारे

निमित्त वकालत करता है। मैंने इस संदेश पर विश्वास किया है और इसलिए मेरे पास अनंत जीवन है तथा परमेश्वर में संपूर्ण आशा है।

ये क़िताब आपके हाथ में है यह इस बात का संकेत कि परमेश्वर आपमें रुचि रखता है और अपनी योजना आप पर प्रकट करना चाहता है। क्या आप उससे आशीष पाने के लिए तैयार हैं? क्या आपने परमेश्वर को व्यक्तिगत रूप से जानने का निर्णय कर लिया है? मैं प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर आपको इस क़िताब के पढ़ने पर आशीष दें।

4 पारिवारिक पृष्ठभूमि

मेरा जन्म 17 फरवरी 1977 को भारत के राजस्थान प्रदेश के जयपुर जिले में रैगर परिवार में हुआ था। मेरे दादाजी रेल विभाग में सेवारत थे। दादीजी के खराब स्वास्थ्य के कारण उन्होंने चालक पद से सफ़ाई निरीक्षक के तौर पर तबादला ले लिया।

अपने बचपन में हम जब भी गाँव जाते तो हमें बड़ा प्यार और आदर मिलता था। दादाजी को बच्चे 'अंग्रेज बाबा' के नाम से पुकारते थे।

दादाजी राधास्वामी सत्संगी थे और संतमत के मानने वाले थे। उनके साथ ही साथ, पूरे तौर पर न सही, परंतु आंशिक रूप से तो हम सभी इसी मत के अवलम्बी थे।

***

संतमत का शाब्दिक अर्थ होता है – संतों का मत। संत का एक सामान्य अर्थ माना जाता है – 'एक अच्छा व्यक्ति' परंतु ऐतिहासिक तौर पर इस शब्द का इस्तेमाल मध्य सामयिक भारत के कवि गुरुओं के सम्बंध में किया जाता है।

तेरहवीं शताब्दी से लेकर आगे समय समय पर उत्तर तथा मध्य भारत में संत कवि आध्यात्म की नई नई शिक्षाएँ लेकर आते रहे। विभिन्न संत कवि जैसे कबीर, मीराबाई, नामदेव, तुकाराम आदि ने हिन्दू धर्म में प्रचलित जातिप्रथा के विरोध में आम बोलचाल की भाषा में तथा लोकभाषाओं में विभिन्न रचनाएँ की। आमतौर पर सभी संत कवियों कि शिक्षा, ईश्वर की खोज अपने ही अंदर भक्ति के द्वारा करने की रही है।

यूं तो मैं ईश्वर के हमारे अंदर होने की बात की बाइबल की दृष्टि से विवेचना करने की इच्छा रखता हूँ पर मैं अपनी विषयवस्तु से दूर नहीं जाना चाहता और इसलिए सिर्फ़ इतना कहूँगा कि बाइबल के अनुसार ईश्वर हमारे अंदर नहीं रहता। वह यह चाहता है कि हम अपने पापों से मन फिराकर उसको

अपना प्रभु अंगीकार करें और उसे अपने जीवन में आमंत्रित करें। हमारे ऐसा करने पर वो हमारे शरीर रूपी मन्दिर में रहने लगता है। सामान्यतया ये साधना घरों में ही शान्त वातावरण में की जाती है। इसमें हर दिन 2.5 घन्टे की साधना को अच्छा माना जाता है।

उत्तर भारत में राधास्वामी सम्प्रदाय संतमत की विचारधारा के अनुयायी हैं। राधास्वामी सत्संगियों को सात्विक जीवन जीने की सलाह दी जाती है जिसमें मांस तथा मदिरा का सेवन और मूर्तिपूजा प्रतिबंधित है। सत्संगी को नाम के भजन की कमाई करने की शिक्षा दी जाती है जिसके द्वारा वे अपने मोक्ष की ओर अग्रसर हो सकें।

इस मत में ऐसा सिखाया जाता है कि गुरू मोक्ष की मूल कड़ी हैं तथा उनके सानिध्य में ही चेले साधना के द्वारा ईश्वर का अनुभव कर सकते हैं। इतनी सारी शिक्षाओं को सीखने तथा मेहनत करने के बाद भी उद्धार का स्पष्ट आश्वासन कोई नहीं देता तथा सब गुरू महाराज की कृपा पर निर्भर करता है।

उनकी क़िताबों में बाइबल की आयतों का उल्लेख भी मिलता है। बाइबल के वचनों के ऐसे इस्तेमाल से मैं सहमत नहीं हूँ क्योंकि वे उसे उसके असली संदर्भ से बाहर लाकर उसका प्रयोग करते हैं जो कि तर्क-सम्मत नहीं है और ठीक भी नहीं। वे अलग अलग धर्मशास्त्रों के अंश अपनी विचारधारा के प्रसार के लिए उपयोग तो करते हैं पर इस मिश्रित ज्ञान के कारण वे उन सारे प्रश्नों के उत्तर देने में असमर्थ हैं जो मैंने पिछले अध्याय में लिखे हैं।

कुल मिलाकर ये पंथ भी और धर्मों की भांति कर्मों के द्वारा उद्धार कमाने की शिक्षा देता है जो कि मेरी समझ में नामुमकिन है। कम से कम आज तक मुझे एक भी व्यक्ति नहीं मिला जिसने अपनी सभी इंद्रियों पर नियंत्रण कर लिया हो तथा जिसे उद्धार का पूरा आश्वासन हो जैसा कि मुझे यीशु मसीह में है।
यूं वे सच्चाई के काफ़ी करीब लगते हैं और नैतिक जीवन जीने के लिये उनकी शिक्षाएँ अच्छी भी हैं परंतु उद्धार कराने की सामर्थ नहीं रखती जो कि सिर्फ़ परमेश्वर के द्वारा संभव है।

***

मैं सोचता था कि या तो अपनी समझ की कमी के कारण दादाजी जो कि पिछले 40 वर्षों से राधास्वामी विश्वास में थे, मेरी जिज्ञासाओं को पूरा नहीं कर पाए। बाद में अपनी खोज में मैंने पाया कि उनके पास असल में सत्य की पूरी जानकारी ही नहीं थी क्योंकि उनके पास सच्चा परमेश्वर नहीं था। उनका राधास्वामी विश्वास हमारे परिवार में कोई बड़ी आत्मिक उन्नति नहीं लेकर आया। पापा बचपन में कुछ इतवार को हमें सत्संग में लेकर जाया करते थे। बाद में हमारा सत्संग में जाना बंद हो गया क्योंकि वो इस मत की शराब ना पीने की मूल शर्त को ही पूरा नहीं कर पा रहे थे। अन्ततः हम इस विश्वास में मज़बूत नहीं हुए।

इस मत के विश्वासी होने का प्रभाव ये हुआ कि हमारे घर में मूर्तिपूजा नहीं होती थी। मैं यदा कदा अपने दोस्तों के साथ मंदिर चला जाता था।

इन सब बातों का दुष्प्रभाव ये हुआ कि मैं ईश्वर के बारे में लापरवाह हो गया था। भजन और साधना वैसे भी मेरे लिए बहुत मुश्किल थी और मूर्तियों में मेरा विश्वास था ही नहीं। सो कुल मिलाकर परमेश्वर के विषय में बेपरवाह हो गया जैसे कि कोई ईश्वर हो ही नहीं। मैं विश्वासहीन और ईश्वररहित इंसान बन गया था।

दादाजी राधास्वामी सत्संग में तब तक जाते रहे थे जब तक कि यीशु मसीह ने उनके जीवन के आखिरी साल में उनको छू नहीं लिया। हमारे संपूर्ण घराने में ज्यादातर लोग जो राधास्वामी सत्संग में विश्वास करते हैं और सबका जो झुकाव आध्यात्म की तरफ़ है, उसका श्रेय मैं फिर भी दादाजी को ही देना चाहता हूँ।

***

पापा हमें अपने बचपन की कई बातें बताया करते थे। उन्होंने बताया कि उन्होंने बचपन में कुछ अंग्रेजों को देखा और कुछ तो उनके मित्र भी बन गए थे। उन्होंने ये भी बताया कि कैसे उन्होंने ईसाई मित्रों के साथ शराब पीना भी सीखा था।

मुझे उन्होंने कभी यह बताने का मौका नहीं दिया कि ईसाई परिवार में ही पैदा हो जाने से कोई व्यक्ति मसीही नहीं हो जाता अपितु अपने पापमय

स्वभाव को क्रूसित कर मसीह में नया जन्म लेने पर ही कोई व्यक्ति असली मसीही संतान हो सकता है।

***

हमारे मूर्तिपूजक नहीं होने का एक सकारात्मक प्रभाव यह हुआ कि हमारा पालन पोषण काफ़ी खुले विचारों के साथ हुआ और इसलिए हम किसी भी विचारधारा या विश्वास को जानने, उसपर विचार करने तथा यदि हम चाहें तो उसका पालन करने के लिए स्वतंत्र थे। मैं इसे सकारात्मक इसलिए मानता हूँ क्योंकि बाइबल से मैंने सीखा है कि जीवित परमेश्वर मूर्तिपूजा से प्रसन्न नहीं होता बल्कि नाराज होता है । बाइबल बताती है कि हम उस अनदेखे परमेश्वर की अनश्वर महिमा को अपनी कल्पनाओं के द्वारा नश्वर चीजों में परिवर्तित करने की कोशिश करते हैं, जो कि ठीक नहीं है।

न जाने क्यों आमतौर पर तो हम किसी व्यक्ति के देह छोड़ देने के बाद ही उसकी तस्वीर अथवा मूर्ति पर माल्यार्पण करते हैं पर अपनी श्रद्धा से अभिभूत होकर ईश्वर की मूर्ति अथवा तस्वीर पर माला तथा फ़ूल चढ़ाते हैं। क्या परमेश्वर जीवित नहीं है?

बाइबल कहती है:

📖 *"तुम मूरतों की ओर न फिरना, और देवताओं की प्रतिमाएँ ढालकर न बना लेना; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।"*

[लैव्यव्यवस्था 19:4]

📖 *"तुम अपने लिये मूरतें न बनाना, और न कोई खुदी हुई मूर्ति या लाट अपने लिये खड़ी करना, और न अपने देश में दण्डवत् करने के लिये नक्काशीदार पत्थर स्थापित करना; क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।"*

[लैव्यव्यवस्था 26:1]

मैं यह बात अपने गले नहीं उतार पाता हूँ कि हम कैसे अपने सृष्टिकर्ता का निर्माण कर सकते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि उन्हें विश्वास करने के लिए किसी मूर्ति या तस्वीर को देखने की जरूरत पड़ती है। वो लोग जो ऐसा कहते हैं वे बताएँ कि हवा के अस्तित्व में विश्वास करने से पहले क्या

उन्होंने हवा का चित्र देखा था। बिजली के अस्तित्व का पता हमें उसकी तस्वीर देखकर चलता है या तब जब बिजली के प्रभाव से पंखा चलता है? जब हम दुनियावी चीजों में बिना देखे विश्वास कर लेते हैं तो परमेश्वर पर विश्वास करने के लिए हमें मूर्ति अथवा तस्वीर की क्या ज़रूरत है?

***

जहाँ तक मुझे याद पड़ता है, पापा ने कुछ दोस्तों के साथ बीयर पीने से शराब पीने की शुरूआत की थी। फ़िर जैसे जैसे नशे की आदत और ज़रूरत बढ़ती गई, बीयर पीछे छूट गई और शराब हावी होती चली गई। हालांकि उन्होंने अच्छा जीवन जीने की भरपूर कोशिश की परंतु कुछ हद तक ही सफ़ल हो सके। इससे मुझे यह यकीन हो गया कि अपने प्रयासों से अच्छा जीवन जीना दुश्वर है।

पापा ने हमें बताया कि उन्होनें अपने जीवन में कभी बुरे तो कभी अच्छे समय देखे। उन्होंने बहुत सी ऐसी बातें बताईं जो उन पर गुज़री थीं – जैसे उन्होंने रेल्वे स्टेशन पर सामान बेचा और अपनी पढ़ाई का खर्च उठाने के लिए ट्यूशन पढ़ाया। उनकी माताजी (हमारी दादीजी) हमेंशा बहुत बीमार रहती थीं इसलिए बचपन से उन्होंने बहुत दुःख भी उठाए। बहुत सी बातें ऐसी थीं जिनके कारण उनका मन कड़वा हो गया था जिसके फ़लस्वरूप उनका स्वभाव काफ़ी कड़क और गुस्सैल हो गया था, और शायद इसी कारण वो किसी की सुनते भी नहीं थे।

पापा धार्मिक स्वभाव के व्यक्ति नहीं थे, कम से कम मैं तो ऐसा ही समझता हूँ; परंतु वो सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन में बढ़ चढ़कर भाग लेते थे तथा पिछड़ी जातियों के उत्थान के लिए अथक प्रयास करते रहते थे।

उन्होंने हम तीनों बच्चों के लिए काफ़ी बड़े बड़े लक्ष्य लिए और बहुत हद तक उनको पूरा भी किया। मेरी उच्च शिक्षा उसी का एक परिणाम है। वो मेरे लिए कई मायने में प्रेरणास्रोत रहे हैं। उन्होंने मुझे हमेंशा ऊँचा लक्ष्य रखने तथा उसे पाने के लिए निरंतर कार्यशील रहने के लिए उत्साहित किया।

पापा ने अपनी पहली नौकरी भारतीय सेना के अभियांत्रिकी विभाग (मिलिटरी इंजीनियरिंग सर्विसेज) में की थी। बाद में वो भारतीय स्टेट बैंक में आ गए तथा जीवनपर्यंत उसी में सेवारत रहे। वो कर्मचारी संगठन के नेता भी थे और अपने ओजस्वी भाषणों से, नेतृत्व के स्वाभाविक गुणों के कारण लोगों के मन में जगह बनाने में सक्षम रहे थे।

***

मेरी मम्मी एक सरल औरत हैं। वो हमेंशा से ग्रहिणी ही रही हैं और कम से कम पैसे में घर चलाने की उनकी दक्षता देखते ही बनती है। मैंने हमेंशा उनको घर की ज़रूरतों के लिए अपनी इच्छाओं को दबाते देखा है। वो हमसे इतना प्यार करती हैं कि हमारे खातिर उन्होंने सारी शारीरिक व मानसिक प्रताड़नाओं को भी सह लिया ताकि हमारे उज्जवल भविष्य से किसी प्रकार का समझौता न हो।

मैंने हमेंशा से उनको धार्मिक प्रवृति का ही पाया है। पहले वो बड़ी आस्था से राधास्वामी साधना में लगी रहती थीं। अपने जीवन की परेशानियों का हल ढूंढने के लिए ऐसी शक्ति को ढूंढती थी जो उनकी परेशानियों से उन्हें निज़ात दिला सके। उनको सच्ची शांति सिर्फ़ प्रभु यीशु को अपना उद्धारकर्ता मान लेने के बाद ही मिली।

मेरे एक भाई और एक बहन भी है। भाई का नाम पंकज है तथा बहन का नाम हेमा है। और कुछ हो न हो, हम तीनों में एक बात काफ़ी लम्बे समय तक एकसमान रही है (कम से कम यीशु मसीह को अपना प्रभु मान लेने तक) – कि हम तीनों ही का गुस्से पर काबू नहीं था। प्रभु में विश्वास कर लेने के बाद से हमारे विश्वास के अनुसार हमारे व्यवहार में परिवर्तन आ गया है।

हम तीनों में से कोई भी पढ़ने में बहुत होशियार तो नहीं ही रहे फ़िर भी हेमा और पंकज ने बचपन से बहुत अच्छे परिणाम दिखाए थे। बचपन में, हेमा जयपुर के सबसे प्रतिष्टित विद्यालयों में से एक, जयपुर की MGD पब्लिक स्कूल में पढ़ती थी जो कि पापा के अथक प्रयासों का एक परिणाम था, तथा पंकज को भी पिलानी के प्रतिष्ठित विद्यालय, बिड़ला पब्लिक स्कूल में प्रवेश मिल गया था परन्तु किसी नेता की किसी दूसरे विद्यार्थी की

सिफ़ारिश के कारण उसका एडमिशन रद्द कर दिया गया। जैसे भी हो, मुश्किल परिस्थितियों से जूझते हुए सभी ने अच्छा मुकाम हाँसिल कर ही लिया है और प्रभु से प्रेम करते हुए अपने अपने तरीके से जीवन बसर कर रहे हैं।

आज मैं जानता हूँ कि वे सब किसी ना किसी रूप में मेरे लिए आशीष का मूल रहे हैं और सभी ने मुझे कुछ न कुछ प्रेरणा दी है।

***

परिवार में मुसीबतें

पापा हमसे बहुत प्यार करते थे। वो हमें अच्छा खिलाने-पिलाने में तथा बेहतरीन कपड़े पहनाने में रुचि रखते थे। मेरे दसवीं कक्षा में आने तक मेरे कपड़े पापा ही सिलते थे। मैं आज तक यह समझ नहीं पाता हूँ कि इतना प्यार करने वाले हमारे पिता बाद में कैसे हमसे इतना दूर होते चले गए कि हमारे प्यार को और उनके प्यार की हमारी ज़रूरत को समझ ही नहीं सके।

वो शराब के विषय में किसी के सुझावों को नहीं सुनते थे। धीरे धीरे वो पूरी तरह से शराब के चंगुल में फ़ँसते चले गए और सभी से अपने सम्बंध खराब कर बैठे। उनके परम मित्र, परमार अंकल, तँवर अंकल, खान अंकल, सब उनको समझाकर थक चुके थे।

हर शाम को पापा शराब के नशे में धुत्त लौटते थे और घर में घुसने के साथ ही मारपीट शुरू कर देते थे। उनको गुस्सा होने के लिए किसी सही कारण की ज़रूरत नहीं होती थी। बाद में वो समय भी आ गया जब वो सबके सामने मम्मी और हम सब बच्चों को पीटने लगे। हम उनकी इस आदत से बहुत शर्मिंदा होते थे पर कोई रास्ता भी नहीं था, वो इस आदत के खिलाफ़ कुछ भी सुनने को ही तैयार नहीं थे।

सन 1990 और उसके बाद, रात-ब-रात हमें अपना घर छोड़कर किसी पड़ोसी के घर शरण लेना एक आम बात हो गई थी। कभी कभी तो दिसम्बर-जनवरी की सर्द रातों में, पूरी पूरी रात हमें ठंड में खड़े खड़े पापा के बड़बडाने को समझते हुए भी गुज़ारनी पड़ती थीं।

हर शाम को हमारा दिल बैठने लगता था। हम मनाते रहते थे कि शायद आज पापा शराब पीकर ना आएँ पर हमारी दिल की इच्छा शायद ही कभी पूरी होती हो। कभी अग़र ये आस पूरी हो भी जाती थी तो खुशी ज़्यादा देर टिकती नहीं थी क्योंकि तरोताज़ा होकर सबसे पहला काम वो ये ही करते थे कि स्कूटर निकालकर शराब खरीदने चल देते थे और हमारा दिल फ़िर मुँह को आने लगता था कि आज क्या होगा। पूरी रात आराम से निकालना हमारे लिए एक चुनौती होता था। हम लोग शारीरिक और मानसिक तौर पर प्रताड़ित हो रहे थे, मम्मी इस सब में सबसे ज्यादा पिसती थीं।

इस रोज के चलन से हम बहुत दुःखी हो चुके थे और इसका प्रभाव हमारी पढ़ाई पर भी पड़ने लगा। पाप हमेंशा हमें पढ़ते देखना चाहते थे, और हम सिर्फ़ उनको दिखाने के लिए क़िताबें लिए बैठे रहते थे। शाम को पढ़ाई में हमारा मन नहीं लगता था। मैं दसवीं कक्षा में दूसरी श्रेणी से पास हुआ, 11वीं में एक विषय में फ़ेल हुआ और 12वीं में पूरी तरह फ़ेल हो गया।

एक स्थाई वैचारिक द्वंद हमारे परिवार में पैदा हो गया था। जब भी मैं पापा को शराब पीना बंद करने के लिए बोलता था, वो कहते, "मैं इसलिए पीता हूँ क्योंकि तुम अच्छे परिणाम नहीं लाते।" और मैं कहता, "मैं अच्छे परिणाम नहीं ला सकता क्योंकि मुझे पढने के लिए अच्छा वातावरण नहीं मिलता...।" यीशु मसीह में उद्धार पाने के बाद स्वयं पापा ने ही ये गवाही दी कि शायद उन्होनें कुछ लाखों रुपयों की शराब तो पी ही डाली होगी।

हम अपने पापा से ही डरने लगे थे, और हमारे पास कोई आशा नहीं थी। हमारे और उनके बीच में एक दरार आ रही थी जो बढ़ती ही जा रही थी। हम अन्दर से टूट रहे थे – आत्मिक, भावनात्मक और धन के तौर पर भी। सच में जब तक प्रभु यीशु हमको नहीं मिले, हम आशाहीन रहे और तिल तिल कर मरते रहे।

आज मैं इस बात को समझता हूँ और जानता भी हूँ कि शैतान हमारे परिवार का नाश करने की कोशिश कर रहा था ताकि हम ईश्वर से दूर बने रहें और सच्ची खुशी से वंचित रहें। प्रभु यीशु ने इस बारे में चेताते हुए कहा है कि शैतान तो एक झूठा है जो लूटने, घात करने और नाश करने के लिए ही आता है। वो काफ़ी हद तक इस में सफल भी हो गया था।

शराब मानवजाति पर एक बहुत बड़ा श्राप है और यह बहुत से परिवारों को तोड़ रही है। परमेश्वर की रचना को नाश करने के लिए शैतान के सबसे खतरनाक हथियारों में से यह एक है। ये सिर्फ़ हमारे परिवार की कथा नहीं है बल्कि शायद आपके परिवार, या रिश्तेदारी या पड़ोस में भी ऐसा ही कुछ घट रहा हो। आप उन्हें न सिर्फ़ सांत्वना दे सकते हैं बल्कि परमेश्वर में आशा भी दे सकते हैं।

जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ तो पाता हूँ कि हमारे परिवार पर एक श्राप था जो की अभी टूटना था, पर हमें पता नहीं था – कैसे...।

***

बाल्यकाल से जवानी तक का सफ़र

मेरे बचपन में जब भी कभी मुझे स्कूल पहुंचने में देरी होने लगती थी तो मार पड़ने के डर से मैं अपने राधास्वामी गुरूजी को याद कर प्रार्थना करने लगता था कि वो मुझे सज़ा से बचा लें। मैं उनसे अपने पापा की शराब की आदत छुड़ाने के लिए भी प्रार्थना करता था। मेरी लगभग सभी प्रार्थनाएँ अनुत्तर चली जाती थीं।

मैंने अपने मन में यह ठान लिया कि कोई ईश्वर है ही नहीं। जैसे जैसे मैं उम्र में बढ़ता गया, ईश्वर से और दूर होता चला गया। मेरे लिए संकट में कोई सहायता नहीं थी, कठिन परिस्थितियों में कोई आशा नहीं थी। ऊपर से सब रिश्तेदार मुझे कहते थे कि मैं पापा को कुछ समझाता नहीं – जो कि जले पर नमक का काम करता था। मैं अपनी पूरी कोशिश कर रहा था पर हमेंशा असफ़ल हो जाता था। कोई हमारा दुःख नहीं समझता था।

मैं अपने व्यक्तिगत जीवन के बारे में बात करूँ तो मैं यही कहूँगा कि मैं अपने परिवार से, खासतौर पर अपनी मम्मी से और अपने भाई-बहन से मैं बहुत प्यार करता था। फ़िर भी हेमा और पंकज को बहुत सताता भी था। मैं बिलकुल भी दयालु स्वभाव का व्यक्ति नहीं था और अपने स्वार्थ के लिए उनको परेशानी में भी डाल देता था।

इस बारे में मुझे एक किस्सा याद है जब मैंने पंकज को पतंग लाने के लिए वो पैसे दिये जो मैंने रसोई से उठा लिए थे जहाँ मम्मी अकस्मात जरूरतों के लिए खुले पैसे रख देती थी। जब मम्मी ने उसे पतंग लिए आते देखा तो

वो आगबबूला हो गईं और पूछने लगी कि उसे वो पैसे कहाँ से मिले। जवाब ना मिलने पर मम्मी ने उसे बहुत पीटा। मैं वहीं था पर मैंने अपनी गलती होते हुए भी सच बोलकर उसे पिटने से नहीं बचाया और अपने खातिर उसे परेशानी में डाल दिया।

दूसरा किस्सा तब का है जब मैं 8वीं कक्षा में था और पंकज शायद तीसरी या चौथी कक्षा में रहा होगा। हम लोग गूजर की थड़ी नाम की जगह पर रहते थे। मालवीय नगर स्थित हमारे स्कूल से घर तक की कुल दूरी करीब 8-10 किलोमीटर होगी। यातायात के सुलभ साधन न होने के कारण सुबह तो पापा हमें छोड़ देते थे पर वापस आते समय कई बार हम पैदल ही आ जाते थे। उसके पीछे मेरा दूसरा उद्देश्य अपने जेबखर्च के लिए पैसे बचाना भी होता था।

इस सड़क पर भारी वाहनों (ट्रक) की आवाजाही बहुत रहती थी। पैदल चलते समय मैं पंकज का पूरा ख़्याल रखता था और उसे काल्पनिक फ़िल्मी कहानियां भी सुनाता था ताकि उसे दूरी का भान न हो।

परन्तु मैं एक बात में बहुत दुष्टता दिखाता था। पैदल चलते समय जब मैं थकने लगता था तो तेज़ चलकर मैं थोड़ा आगे जाकर बैठ जाया करता था और जब वो मुझतक पहुँचकर बैठने की कोशिश करता तो मैं घर पहुंचने में देर होने के डर से उसे चलते रहने के लिए बाध्य करता था। इस बात को सोचकर मैं आज बहुत आश्चर्यचकित होता हूँ कि मैं ऐसा क्यों किया करता था, यकीनन ऐसी दुष्टता करने से मुझे कभी कोई लाभ नहीं हुआ था।

मैं अपने बड़े होने का नाजायज़ फ़ायदा उठाता था और अपने भाई-बहन से लड़ता था। ज़्यादातर तो मैं ही उन्हें पीटा करता था। खासतौर पर हेमा अपने अड़ियल स्वभाव के कारण कुछ ज्यादा ही पिटती थी। मेरी बुरी आदतों के कारण वे दोनों मुझे पसंद नहीं किया करते थे। मैं समझ नहीं पाता था कि वो ऐसा क्यों करते थे क्योंकि मैं मन से तो उनसे बहुत प्यार करता था। मैं यह समझ ही नहीं सका कि मुझे अन्तर्मन से ही नहीं अपितु बाहर भी प्रेम दिखाने की ज़रूरत है क्योंकि वे मेरे मन में नहीं झांक सकते थे।

***

अपनी किशोरावस्था में मैं बहुत दबाया गया, इसलिए आक्रोश मेरे अंदर जमा होता चला गया और जवान होने पर मैं इसे कहीं न कहीं निकालना चाहता था। इसलिए मैं लड़ाई झगड़ों में पड़ने लगा।

मेरे पास बहुत सी ऐसी मीठी यादें नहीं है जिनको याद कर मेरा मन गुदगुदाने लगे। मैं पढ़ाई में असफ़ल था, बिगड़ा हुआ बच्चा था, गंदा भाई था, परिवार पर बोझ था। हर तरफ़ से हार, असफ़लता और दुख ने मेरा दामन थाम रखा था।

इसके अलावा सबसे आखिर में अगर मैं कुछ लिखना चाहूं तो वो मेरा चरित्र है। शायद कुछ कामों के विषय में तो लोग जानते भी हों जो मैंने अपने जीवन में किये परंतु उनसे अलग ऐसे काम भी थे जो सिर्फ़ मैं या मेरा ईश्वर जानता है। बहुत से पाप तो मैंने बस कल्पना में किए थे। बाइबल पढ़ने के बाद मुझे पता चला कि परमेश्वर हमें हमारे विचारों में किए गए पापों के लिए भी उत्तरदाई ठहराता है क्योंकि वो हमारे मस्तिष्क से गुजरने वाले हर विचार को भी जांचने वाला परमेश्वर है। वासनामयी विचारों पर मंथन करना, गंदी फ़िल्में देखना, लड़कियों पर फ़िकरे कसना, सस्ता साहित्य पढ़ना आदि मेरे किशोरावस्था से जवानी तक के वे पाप थे जिन्हें बहुत कम लोग जानते हैं।

ये बड़े दुःख की बात है कि शारीरिक संबंधों से जुड़े पाप जवान लोगों पर अपना शिकंजा जकड़ लेते हैं कि चाह कर भी वे इसमें से अपनी सामर्थ्य से तो बाहर नहीं ही आ पाते हैं।

ऐसे पाप करते समय मेरा मुख्य बहाना ये होता था कि सभी ऐसा करते हैं तो इसमें कौन सी बड़ी बात है। शायद कई लोग इन बंधनों में बंधे हैं परन्तु इसका अंगीकार करने की हिम्मत उनमें नहीं है। सिर्फ वे लोग जो पवित्र आत्मा के द्वारा प्रेरित किए जाते हैं वे उसका अंगीकार तो करते ही हैं साथ ही साथ क्षमा मांगकर आगे का जीवन प्रभु के साथ चलाते हैं।

5 परमेश्वर से मिलन

परमेश्वर की मेरे जीवन में तैयारी

स्कूल की पढ़ाई के बाद, 1995 में मैं कॉलेज गया। कॉलेज की पढ़ाई के पहले साल में मुझे 55% अंक मिले। द्वितीय वर्ष में मैंने कॉलेज के चुनावों में नामांकन पत्र भरा, चुनाव लड़ा और हार गया। इस वर्ष में मेरे 45% अंक ही आए। मैं अंधकारमय भविष्य की ओर अग्रसर था।

कॉलेज के दिनों में छात्रावास (हॉस्टल) में रहने वाले छात्र बसों में किराया नहीं देते थे। हालांकि मैं हॉस्टल में नहीं रहता था परन्तु फ़िर भी उनके नाम से मुफ़्त में सफ़र किया करता था। बस वाले छात्रावास के नाम से डरते थे इसलिए पैसा नहीं मांगते थे। फ़िर भी यदि किसी ने मांग ही लिए तो मैं उनको डराने की कोशिश करता था और मारपीट भी कर लेता था।

एक बार मैनें एक बस वाले से किराए के मामले में हुई नोक-झोंक को इतना बढ़ा दिया कि हमने बहुत से वाहनों को रोका, क्षति पहुंचाई, चालकों और सहचालकों को पीटा और यहाँ तक कि एक बस को आग लगाने की भी कोशिश की। इसके कारण निजी बसों की बहुत बड़ी हड़ताल हो गई। कई बस वाले हथियार लेकर मुझे ढूंढते थे कि मुझे सबक सिखाएँ। मैं बहुत डर गया था। मुझे कई दिनों तक छुपना पड़ा ताकि बात ठंडी हो जाए। मैं अकेले कहीं नहीं जाता था और बस में तो कतई भी नहीं। पापा ने अपना स्कूटर मुझे दे दिया था। मैं स्कूटर में अपनी सुरक्षा के लिए हथियार रखता था कि कुछ अनहोनी हो तो संभाल सकूँ।

ऐसी कुछ घटनाओं के अतिरिक्त ज्यादातर लड़ाईयां मेरी अपनी नहीं होती थीं बल्कि मैं दूसरों के लिए लड़ता था। मैं सोचता था कि दूसरों की सहायता करने से ही शायद मुझे शांति मिले, पर मेरी इस आदत ने कभी कभी मुझे बहुत शर्मिंदा भी किया।

***

जब मैं विज्ञान स्नातक की कॉलेज की पढाई के तीसरे वर्ष में आया तो एक अंजान ताकत ने मुझे अपने बीते जीवन का अवलोकन करने तथा भविष्य के लिए एक उद्देश्य ढूंढने के लिए प्रेरित किया। जब मैंने यह विचार किया तो पाया कि मैं पूरी तौर पर एक असफ़ल जीवन जी रहा था जिसका कोई स्वर्णिम भविष्य नहीं हो सकता था।

मेरी स्नातक की पढ़ाई के दो वर्षों का औसत 50% ही आ रहा था।

ईश्वर के बारे में न तो मैं विचार करता था और न ही उसका कोई भय मेरे मन में था। 'मेरे जीवन का उद्देश्य क्या है', बस यही सवाल मेरे मन-मस्तिष्क में घूमता रहता था।

पहली बार मेरे जीवन में ऐसा समय आया था कि मैं इस तरह की असमंजस की स्थिति में पड़ा था। मैं एक अच्छी जिन्दगी जीना चाहता था और अपनी मम्मी तथा भाई-बहन को खुशमयी जीवन देना चाहता था, उनके चेहरे पर खुशी की झलक देखना चाहता था, पर जैसा जीवन मैं जी रहा था, उससे यह कतई संभव ही नहीं था। मुझे अपने आप पर शर्म भी आती थी।

उस अंजान सामर्थ्य की अगुवाई में मैंने अपने आप ही तीसरे वर्ष में 84% अंक लाने का निर्णय लिया। आप सोचेंगे की जो गिरते पड़ते पास होता हो वो ऐसे सपने कैसे ले सकता था, मैं भी ऐसा ही सोचता था। यह एक ऐसा पहाड़ था जिसे मैं अपने आप से नहीं हिला सकता था, तौभी उस अंजान ताकत के चलाए मैं मेहनत करने लगा और आश्चर्य की बात ये हुई कि आधे साल में ही मैंने लगभग सब पढ़ाई पूरी कर ली। मैं अपनी कक्षा के सबसे कुशाग्र छात्रों की भी मदद करने लगा और मेरे कुछ सहपाठियों ने तो ट्यूशन जाना ही बंद कर दिया। मैं उनकी मदद करने में सक्षम हो गया था। मैं नहीं जानता था कि कौन मेरे लिए यह सब कर रहा था पर यह बात सच है कि मेरा जीवन बदलने लगा था। आज मैं भलीभांति जानता हूँ कि परमेश्वर मेरे जीवन में एक बड़े परिवर्तन की तैयारी कर रहा था।

***

मुझे सुसमाचार सुनाया गया

स्नातक पढ़ाई के तीसरे वर्ष में, भौतिकी के कुछ सवालों के लिए मैंने एक ट्यूशन पढ़ना शुरू किया। उसी ट्यूशन में मेरी मुलाकात रश्मि से हुई। मैं तो उससे दोस्ती करना चाहता था परंतु परमेश्वर की योजना कुछ और ही थी।

लड़की जो मेरे लिए एक कमज़ोरी थी उसे ही परमेश्वर ने अपनी महिमा प्रकट करने के लिए इस्तेमाल किया।

एक बार हमारे ट्यूटर चाहते थे कि हम सब अतिरिक्त कक्षा के लिए इतवार की सुबह आ जाएँ पर रश्मि बिलकुल तैयार ही नहीं थी। बहुत समझाने पर वो 1:00 बजे के बाद आने को तैयार हुई। मैंने जब उससे इसका कारण जानना चाहा कि उसके जीवन में परीक्षा की तैयारी से बढ़कर ऐसा क्या था कि वो आने को तैयार नहीं थी, तब उसने बड़े स्पष्ट शब्दों में बताया, "मैं चर्च जाती हूँ और किसी भी कारण से उसे छोड़ नहीं सकती।"

मैंने फ़िर पूछा, "तुम तो हिंदू हो, फ़िर चर्च क्यों जाती हो?" और उसका जवाब था कि वो एक जीवित परमेश्वर को जान गई थी जो कि उससे प्यार करता था, जिसने उसके पापों को क्षमा कर दिया था तथा उसे उद्धार (मोक्ष का आश्वासन) दिया था। इनमें से कोई भी बात मेरे दिमाग में नहीं घुस पाई। मुझे यह सारी बातें बड़ी भारी लग रही था और मैं सोच रहा था – कौन इस उम्र में यह सब बातें करता है।

उसने बताया कि परमेश्वर ने इंसान को बनाया ही इसलिए कि उसके साथ संगति करे, इसीलिए, यद्यपि पाप के कारण इंसान आज परमेश्वर से दूर है तौभी उसे पाने के लिए अलग अलग तरीके से प्रयास करता रहता है। उसने और भी बताया कि हम अपने सृजनहार अनश्वर परमेश्वर की सृष्टि अपने नश्वर हाथों नहीं कर सकते। किसी ने ईश्वर को नहीं देखा और इसीलिए उसकी सही तस्वीर या मूर्ति बना पाना असंभव है। उसका तर्क काफ़ी शक्तिशाली था, मेरे पास उसका कोई तोड़ भी नहीं था।

उसने मुझे बताया कि कैसे परमेश्वर ने इस पूरी दुनिया से, बिना किसी जातिगत तथा धर्मगत भेदभाव के, इतना प्रेम किया कि अपना इकलौता पुत्र

दे दिया और यह भी कि कि कैसे यीशु मसीह ने पापरहित होते हुए भी हमारे पापों की क्षमा के लिए अपने प्राण देकर हमारे सभी पापों की कीमत चुका दी।

कई बार यह विचार हमारे मन में आ सकता है कि कैसे कोई हमारे पापों के लिए हमारे जन्म से भी पहले उसकी कीमत चुका सकता है। और यह भी की पापों की क़ीमत चुकाने के लिए किसी को मरने की क्या ज़रूरत है और वह भी स्वयं ईश्वर को। तो इसके उत्तर में यहां सारांश में मैं यह कह सकता हूँ कि बाइबल के अनुसार सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं और पापों से छुटकारा पाए बिना स्वर्ग में प्रवेश नहीं मिल सकता। पाप की मज़दूरी अर्थात क़ीमत मृत्यु (परमेश्वर से आत्मिक अलगाव) है। सभी को यह क़ीमत चुकानी ही पड़ेगी। क्योंकि हम लोग इस योग्य नहीं कि इस क़ीमत को चुका सकें इसलिए परमेश्वर ने अपने आपको मानवरूप (प्रभु यीशु) में दिया जिसने हमारे पापों के लिए 2000 साल पहले ही कीमत चुका दी। इसे हम बीमा की तरह देख सकते हैं जो हम पहले से करते हैं परंतु यह लागू तब ही होता है जब हम किसी दुर्घटना का सामना करते हैं।

अगले दिन उसने मुझे एक गिडियन बाइबल उपहार स्वरूप भेंट की। मैं नास्तिक नहीं था इसलिए उस किताब को फ़ेंका नहीं पर अपने घर में रख लिया। कई महीनों तक मैंने उसे कभी नहीं पढ़ा। इस दौरान हमारी मित्रता बढ़ती चली गई और हमने आने वाली परीक्षाओं की तैयारी साथ में करना शुरू कर दिया।

एक बार उसने मुझे चर्च (कलीसिया) आने के लिए आमंत्रित किया। पहली बात तो ये कि मैं चर्च की आराधना पद्धति नहीं जानता था, और दूसरी ये कि फ़िल्मों को देखकर चर्च की जो तस्वीर मेरे दिमाग में बनी हुई थी उससे बाहर आ पाना मेरे लिए मुश्किल हो रहा था। मैंने अपनी पुरज़ोर कोशिश की कि मैं वहाँ न जाऊं पर उसके आग्रह के आगे मेरी एक न चली और आखिरकार मैं उसके साथ जाने के लिए तैयार हो गया।

पहली बार चर्च जाने का मेरा अनुभव सच में अविस्मरणीय रहा। यह चर्च कतई भी वैसा नहीं था जैसा मैंने सोचा था। मैं सोचता था कि चर्च का मतलब एक अंग्रेजों के जमाने की पुरानी इमारत जिसमें एक चर्च फ़ादर हो जो कि बड़े शान्त मगर रोबदार शब्दों में बेंचों पर बैठे लोगों को कुछ सिखा

रहे हों या फ़िर एक छोटे से जालीदार कमरे में किसी के पापों का अंगीकार सुन रहे हों।

लेकिन यहाँ जो मैंने देखा वो ये था कि एक घर जैसी इमारत थी जिसके एक बड़े हॉल के बाहर बहुत से चप्पल-जूते बाहर उतरे हुए थे। अंदर जाकर मैंने देखा कि कुछ बुजुर्ग लोग कुर्सियों पर बैठे थे पर बाकि सब लोग जमीन पर बिछी हुई दरी पर बैठे थे। एक सरसरी नज़र से देखने पर मैंने पाया कि मेरी कल्पना के उलट सभी औरतें और लड़कियां सलवार सूट या साड़ी पहने थीं और सभी ने अपने सिर चुन्नी या साड़ी के पहलू से ढँक रखे थे। एक बड़ी सी गीत मंडली के बजाय 2-3 जवान लड़के-लड़की आराधना के गीत गिटार और अन्य बाजों के साथ गा रहे थे। पूरी सभा जैसे ईश्वर की वंदना में खोई हुई थी। मेरी कल्पनाओं के विपरीत चर्च के पास्टर ने एक बड़े से सफ़ेद चोगे के बजाय साधारण पतलून-कमीज पहन रखी थी और वो ही सबको परमेश्वर की आराधना करने को प्रेरित कर रहे थे।

यह सब कुछ अभिभूत कर देने वाला दृश्य था। मैं इसे देखते हुए अपने ही विचारों में मग्न था कि तभी आराधना का समय खत्म हो गया और पास्टर ने प्रार्थना का समय घोषित किया। उन्होंने कहा कि जैसे परमेश्वर का पवित्र आत्मा अगुवाई करे और बोझ दे वैसे ही सब लोग अपनी जगह से उठकर दूसरे लोगों के लिए दुआ करें। मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था – क्यों लोग एकाएक अपनी जगह छोड़कर अलग अलग व्यक्ति के पास जाकर प्रार्थना करने लगे। मैंने यह सब देखकर अपनी आखें बंद कर ली क्योंकि एक तो मैं नया था और यह सब नहीं जानता था, और दूसरे कोई और भी मुझे नहीं जानता था और मुझे कुछ करने की ज़रूरत नहीं थी। तभी मैं एक आवाज़ को सुनकर चौंक गया। एक बुज़ुर्ग व्यक्ति मेरे पास खड़े थे।

मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि इस व्यक्ति को मेरे लिए कहां से अगुवाई और बोझ मिला क्योंकि मैं तो पहली बार आया था। ये पवित्र आत्मा कौन है जो मुझे जानता है और मेरे लिये बोझ देता है?

उन बुजुर्ग व्यक्ति का नाम ज़ेवियर था। उनके पूछने पर मैंने अपना नाम बताया। उन्होंने फ़िर पूछा कि क्या मुझे किसी विशेष विषय में प्रार्थना कराने की इच्छा थी। मुझे इस तरह की प्रार्थना के बारे में कुछ पता नहीं था तो मैंने बस अपने पापा की शराब की आदत छूट जाने के लिए दुआ करने

को कहा। ज़ेवियर अंकल ने मेरे लिए ऐसी वेदना और प्रेम के साथ प्रार्थना की जैसे कि वो मेरे परिवार के भाग हों और हमारे दुख से रोज गुजरते हों। उनकी दुआ में बहुत अधिकार झलक रहा था जैसे कोई बच्चा अपने पिता से अधिकार के साथ कुछ मांगता है। मैंने पहली बार मसीही प्रेम देखा।

जब हम चर्च से बाहर निकल रहे थे तो रश्मि ने मुझे पास्टर से मिलाया। पास्टर ने एक बात बोली जो मेरे अंदर बैठ गई, उन्होंने कहा, "बृजेश, हम किसी धर्म में विश्वास नहीं करते, बल्कि हम परमेश्वर के साथ एक जीवित संबंध में विश्वास करते हैं।" उन्होंने आगे बताया कि परमेश्वर हमारा स्वर्ग में विराजमान पिता है जिसने हमें पैदा किया है और वो हम में रुचि रखता है। वो हमें व्यक्तिगत संबंध बनाने के लिए बुलाता है ताकि हम उसके साथ हमेंशा के लिए एक हो जाएँ।

***

रश्मि दिल्ली की रहने वाली थी। जयपुर में वो सिर्फ़ पढ़ाई के लिए आई हुई थी। एक दिन उसने पूछा कि क्या वो मेरे घर में कुछ दिन रह सकती थी, क्योंकि उसे रहने की समस्या हो गई थी। मैंने मम्मी से पूछा और उन्होंने सकारात्मक जवाब देते हुए कहा कि वो हमारे घर में मेरी बहन के साथ उसके कमरे में रह सकती थी।

अब हम ज़्यादा समय साथ बिताने लगे। मैं बड़ी गहराई से उसको जांच रहा था और हर बात में प्रभु से उसके प्रेम, जीवन तथा व्यवहार में शुद्धता और परमेश्वर में उसकी आशा को देखकर बड़ा आश्चर्यचकित होता था। मैंने उससे सवाल पूछना शुरू किया और वो बड़े धीरज के साथ मेरी सब जिज्ञासाओं को शान्त करती रही। उसने मुझे प्रार्थना करना सिखाया और आराधना के नए नए गीत और भजन सिखाए। मैंने उसके साथ बाइबल पढ़ना शुरू किया। शुरूआत में मैं बाइबल को समझ नहीं पाता था पर उसने मुझे यह भी सिखाया कि मैं बाइबल को कैसे पढ़ूं।

बाद में रश्मि ने और भी कई बातें मुझे बताईं जैसे कि यदि हम परमेश्वर में विश्वास करें और उससे प्रार्थना करें तो वो ज़रूर उत्तर देगा। उसने यह भी बताया कि बाइबल परमेश्वर का वचन है जिससे वो हमसे बात करता है। उसने यह भी बताया कि बाइबल के वचन हमारी आत्मा का भोजन है

जिसके बिना हमारी आत्मा कमज़ोर हो जाती है और पाप में गिर सकती है इसलिए इसमें से रोज़ पढ़ना ज़रूरी है। उसने ज़ोर देकर फिर से इस बात को समझाया कि परमेश्वर ने मानव रूप में जन्म लिया, उसने अपने जीवन में कभी पाप नहीं किया फिर भी हमारे पापों के लिए क्रूस पर अपने प्राण त्याग दिये। ऐसा और कौन ईश्वर या गुरू है जिसने हमारे लिए अपने प्राण दिये हों? उसने कहा कि यदि मैं इस बात पर विश्वास करूँ तो मेरा मोक्ष उसी समय हो जाएगा और मैं स्वर्ग में प्रवेश करने का अधिकार पा लूँगा उसने बताया कि ये सिर्फ विश्वास की बात है जो शायद हमारे ज्ञान के द्वारा हमें समझ न आ सके।

तब से मैं बाइबल को एक भूखे व्यक्ति की तरह खाने लगा और प्रभु मुझसे वचनों के द्वारा बातें करने लगे। परमेश्वर ने मेरी अगुवाई करना शुरू कर दिया और आध्यात्म के तथा सफल जीवन के भेद बताना शुरू कर दिया। तीतुस 3:5, 1युहन्ना 1:10, मरकुस 16:16 तथा युहन्ना 3:16, 17 मेरी प्रिय आयतें बन गईं हैं जिन्होंने मेरा जीवन हमेंशा के लिए बदल दिया है।

रश्मि, प्रभु में मेरी बहन, मेरे जीवन में परमेश्वर की एक दूत बनकर आई। उसके काम, उसकी बातें और जीवन जीने का उसका तरीका मुझे प्रभावित कर गया। उसका परमेश्वर से अगाढ़ प्रेम मुझे उसके श्रोत को जानने के लिए प्रेरित करते रहे। उसने उस 'अनजानी ताकत' को जानने में पूरी सहायता की।

वो अनजानी ताकत अब मुझे मालूम हो गई थी की वो प्रभु यीशु थे। परमेश्वर को मैं अपने व्यक्तिगत ईश्वर और अपने उद्धारकर्ता के रूप में जान गया था।

6 परिवर्तन

परिवर्तन की एक प्रार्थना, जो बचपन से मैंने सीखी थी वो इस प्रकार है -

असतो मा सदगमया,
तमसो मा ज्योतिर्गमया,
मृत्योर्मां अमृतं गमया।।

ये प्रार्थना मैंने बचपन में अपने स्कूल की डायरी में कई बार पढ़ी थी जिसका अर्थ इस प्रकार लिखा था – हे ईश्वर, मुझे असत्य (झूठ) से सत्य की ओर, तमस (अंधेरे) से प्रकाश की ओर तथा मृत्यु से जीवन की ओर लेकर जाएँ। इस अर्थ को मैंने कई बार पढ़ा था परंतु फ़िर भी इसका उत्तर मेरे पास नहीं था।

"मैं आपको यह बताना चाहता हूँ कि उद्धार (मोक्ष) व्यक्तिगत होता है। न तो हमारे पूर्वाग्रहों (पुराने रूढ़ीवादी विचारों) और न ही हमारे किन्हीं सम्बंधों के कारण हमें अपने आपको परमात्मा से मिलन करने से रोकना चाहिए। परमेश्वर हमसे प्रेम करता हैं और हम में से हरेक को पापों से मुक्ति दिलाना चाहता हैं।"

इस प्रार्थना का उत्तर मुझे तब ही मिला जब मैंने यीशु मसीह को जाना। प्रभु यीशु को जानने के बाद मुझे पता चला कि उनके नाम में की गई हमारी हरेक प्रार्थना परमेश्वर जरूर सुनता है और उनका उत्तर भी देता है – उसकी अपरम्पार दया में 'हाँ', या उसकी असीमित बुद्धि और ज्ञान में हमारे भले-बुरे को जानते हुए 'नहीं'। सच्चे परमेश्वर के नाम से की गई कोई भी हमारी प्रार्थना व्यर्थ नहीं जाती।

यदि उपरोक्त प्रार्थना सच्चे मन से, सच्चे परमेश्वर से की गई हो तो इस प्रार्थना का उत्तर मिलना आवश्यक है । परमेश्वर मानवजाति से प्रेम करता है इसलिए उपनिषद की इस प्रार्थना का जवाब, परमेश्वर के वचन, बाइबल में मिलता है-

📖 *"...**मार्ग** और **सत्य** और **जीवन** मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई परमेश्वर तक नहीं पहुँच सकता"*

[युहन्ना 14:6]

📖 *"मैं तुमसे सच सच कहता हूँ, जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजने वाले पर विश्वास करता है, **अनन्त जीवन** उसका है; और उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती परन्तु वह **मृत्यु से पार** होकर **जीवन** में प्रवेश कर चुका है।"*

[युहन्ना 5:24]

📖 *"यीशु ने फिर लोगों से कहा, "जगत की **ज्योति** मैं हूँ; जो मेरे पीछे हो लेगा वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु **जीवन की ज्योति** पाएगा।"*

[युहन्ना 8:12]

एक और प्रार्थना के विषय में मैं आपको बताता हूँ – गायत्री मंत्र।

ॐ भूर्भुवः स्वः
तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि
धियो योनः प्रचोदयात्।

जिसका मतलब (भावार्थ) होता है – ओ बृहमांड के सृष्टिकर्ता परमेश्वर, हम आपकी असीम महिमा पर ध्यान धरते हैं। ऐसा होने दे कि आपकी वैभवमयी सामर्थ्य हमारी बुद्धि को प्रकाशित करे, हमारे पापों को क्षमा करे तथा सही मार्ग में हमारा पथ प्रदर्शन करें।

सदियों से मानव सत्य, शांति तथा सार्थक जीवन की खोज करता रहा है। यही खोज इस प्रार्थना के रूप में इस मंत्र में निकलती है, परंतु साथ ही ये बात समझने की भी ज़रूरत है कि यह प्रार्थना सृष्टिकर्ता परमेश्वर से की गई है, इसलिये इसका उत्तर सिर्फ़ जीवित अमूर्त प्रेमी सृष्टिकर्ता परमेश्वर की ओर से ही आ सकता है।

यदि इस प्रार्थना को ही हम गौर से देखें तो हम समझ सकते हैं कि बाइबल में इस प्रार्थना का भी उत्तर है –

- यह प्रार्थना **सृष्टिकर्ता** परमेश्वर से है – और सच में हमें हमारे रचनाकार परमेश्वर से ही दुआ करनी चाहिए। बाइबल बताती है कि सच्चा सृष्टिकर्ता ईश्वर कौन है – यीशु मसीह। (युहन्ना 1:1, 1:3, 1:14)
- यह प्रार्थना बुद्धि प्राप्ति, सत्य प्रकाशन, पाप क्षमा तथा सत्य मार्ग दिखाने के लिये है – यीशु मसीह ने कहा कि **सत्य**, **मार्ग** और **जीवन** वो खुद हैं (युहन्ना 14:6) जो परमेश्वर के पुत्र हैं, खुद **ज्योति** हैं (युहन्ना 8:12) जो कि मानव रूप में धरती पर आए ताकि हमें स्वयं अपना प्रकाश दें, हमारे **पापों की क्षमा** करें और हमारे लिए **शांति तथा उद्धार** का मार्ग प्रशस्त करें (युहन्ना 3:16,17)।

***

जैसा मैंने पहले बताया है कि प्रभु यीशु के बारे में बताए जाने पर तुरंत ही मैंने उन पर विश्वास नहीं कर लिया और इससे पहले कि मैं प्रभु यीशु को परमेश्वर का पुत्र और बाइबल को परमेश्वर का एकमात्र सत्य वचन मान लेता, मैंने इसे और सभी उन शास्त्रों को जो मैंने तब तक पढ़े थे, पहले बताए सारे सवालों की कसौटी पर कसा। मैंने गीता, रामायण तथा महाभारत को अपनी पाठ्य-पुस्तकों के रूप में पढ़ा था। पाठ्यपुस्तकों में ही संतमत के बारे में मैंने पढ़ा था तथा कबीर, रहीम तथा मीरा के दोहों का भी अध्ययन किया था। मैंने ओशो रजनीश का साहित्य पढ़ा था। मैंने दादीजी को पढ़कर सुनाते हुए राधास्वामी सत्संग के साहित्य का अध्ययन किया था और अपनी एक दादी (पापा की बुआ) से ओम शांति विश्वास के बारे में सुना था तथा पापा के उत्साहित करने पर डॉक्टर अम्बेड़कर के जातिवाद तथा धर्म के बारे में व्यक्त विचारों को भी पढ़ा था।

इन सब जानकारियों को एक ही कसौटी पर कसने के बाद मैंने यह निष्कर्ष निकाले कि-

- सभी धर्म ईश्वर के बारे में बताने की कोशिश करते हैं और जीवन जीने के नैतिक मार्ग बताते हैं।
- सभी धर्म भले काम करने तथा स्वार्थी अभिलाषाओं से दूर रहकर मोक्ष कमाने की शिक्षा देते हैं।

- सभी धर्म ईश्वर को ऐसे देखते हैं जैसे की वो बहुत दूर हो तथा उस तक पहुँचना बहुत मुश्किल हो और यह भी कि उसे प्रसन्न करना दुष्कर कार्य हो।

यह सब बातें जानते हुए जब मैंने बाइबल पढ़ना शुरू किया तो मैंने इसमें अलग तरह की बातें पाईं जो कि ईश्वर के बारे में मेरे पुराने विचारों से बिलकुल भिन्न थीं जो मैंने बचपन से सीखी थीं।

यदा यदा हि धर्मस्य, ग्लानिर्भवति भारत
अभ्युत्थानंधर्मस्य, तदात्मानं सृजाम्यमहम

परित्राणायसाधुनां विनाशाय च दुष्कृताम,
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे।

संस्कृत भाषा के ऊपर लिखे वाक्यांशों (श्लोकों) में यह बात सुस्पष्ट तौर पर झलकती है कि जब जब धरती पर धर्म की हानि होती है तो हर युग में पापियों का विनाश करने तथा साधु (धार्मिक) लोगों का उद्धार कर धर्म की संस्थापना करने के लिए ईश्वर किसी न किसी रूप में अवतार लेते हैं।

इस बात ने मुझे यह जानने के लिए और प्रेरित किया कि कौन पापी है और कौन साधु। और क्या परमेश्वर सच में पापियों का नाश कर देते हैं; क्योंकि अगर ऐसा है तो फिर किसका उद्धार हो सकता है। सबसे ज्यादा तो मैं अपने आप के लिए चिंतित था कि मेरा क्या होगा, क्योंकि मैं इस बात को साफ़ तौर पर जानता था कि मैंने अपने जीवन में पाप किए थे और अगर ईश्वर सच में पापियों का नाश करने के लिए ही आते हैं तो फ़िर मेरा तो नाश होना निश्चित था। एक मायने में मेरा इस आत्ममंथन में पड़ना अच्छा भी था क्योंकि मोक्ष (उद्धार) एक व्यक्तिगत अनुभव है।

मुझे बचपन से सिखाया गया था कि पाप और पुण्य इंसान के लेखे में लिखे जाते हैं और इन्हीं के आधार पर उसका अगला जन्म निश्चित होता है। इसका मतलब यह है कि हमें जीवन भर पुण्य (अर्थात सुकर्म या अच्छे काम) करने चाहिए ताकि वो हमारे बुरे कामों से ज्यादा हों ताकि अगले जन्म में हमें अच्छी योनि मिले। सिर्फ़ वे लोग जिनके सुकर्म उनके दुष्कर्मों से मात्रा तथा गुणवत्ता में कहीं अधिक हों, वे ही मोक्ष की प्राप्ति कर सकते हैं। ये भी तभी संभव है जब आप किसी धार्मिक गुरू की शरण में जाएँ।

मुझे सिखाया गया था कि मैं पाप और पुण्य कर्मों में अन्तर को समझूं और हमेंशा सदकर्म करूँ। मैंने देखा कि सभी इसमें असफल ही होते थे। मैं भी असफल रहा था। इसलिए मैं यह मान लेने के लिए बाध्य हुआ कि कर्मों के द्वारा मोक्ष की प्राप्ति असंभव है।

बाइबल के अनुसार कोई भी धर्मी नहीं है, एक भी नहीं (रोमियों 3:23) और इसलिए हमारी अपनी समझ और सामर्थ्य के अनुसार हम ईश्वर को रिझा नहीं सकते कि वो हमारा उद्धार करे। परमेश्वर के पवित्रता के मापदण्ड इतने ऊँचे हैं कि उन तक पहुँचना मनुष्य के लिए असंभव है। जिस प्रकार एक व्यक्ति जो कि लम्बाई में आधा इंच छोटा हो वह सेना में भर्ती होने में उतना ही असफल होता है जितना की एक छह इंच छोटा व्यक्ति; ठीक उसी प्रकार परमेश्वर की नज़र में हम सब बराबर के पापी हैं और अपने कर्मों से उसे पाने में हम सभी असफल रहते हैं। हमें उसकी दया तथा करूणा की ज़रूरत है।

जब मैंने बाइबल को पढ़ा तो मैंने पाया कि बाइबल का पाप को समझने का तरीका अलग था। इस विकट समस्या से निजात पाने का बाइबल का तरीका भी उन तरीकों से अलग था जो कि मुझे पहले से मालूम थे। यह देखने में तो आसान लगता है पर समझने में मुश्किल है। इसमें कहा गया है कि हम सब पापी हैं और परमेश्वर के कोप (क्रोध) के भागी हैं। फिर भी हमारे कर्मों के कारण नहीं बल्कि अपने असीम अनुग्रह (करूणा) के कारण उसने स्वयं हमारे पापों की क्षमा के लिए अपने पुत्र यीशु मसीह को बलिदानस्वरूप दे दिया कि हमारे पापों का निवारण करे। हमें सिर्फ इस बलिदान में विश्वास करने की ज़रूरत है।

दूसरी बात जो मैंने सीखी वो ये थी कि जन्म-मरण का कोई चौरासी लाख योनियों का चक्र नहीं है बल्कि सिर्फ एक मानव जीवन है जिसके बाद न्याय का होना और फिर अनंत जीवन का निर्णय होना निश्चित है। यह अनंत जीवन स्वर्ग में हो या नर्क में, यह न्याय के बाद ही सुनिश्चित होगा। एक अनोखी बात बाइबल से मुझे पता चली कि हमारे अनन्त जीवन का निर्णय हमारे ही हाथों में है। हम परमेश्वर की करूणा को तिरस्कार या स्वीकार कर अपनी नियति स्वयं लिखते हैं। यदि हम इसे स्वीकार करते हैं और प्रभु

यीशु में विश्वास करते हैं तो तुरंत ही हमारे नाम जीवन की किताब में लिखे जाते हैं और दण्ड कि आज्ञा हम पर से खत्म हो जाती है।

मैं तो पूरी तौर पर इस बात को दिल से जानता था कि मैं पापी था और मेरे पूर्वज्ञान के अनुसार मेरे लिए मोक्ष का कोई रास्ता भी नहीं था। अपने धर्म के अनुसार मेरे पास पाप-क्षमा की कोई आशा नहीं थी। बाइबल में जो मैंने पढ़ा इसने मुझे बहुत बल दिया -

📖 "*क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिए नहीं भेजा कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे, परन्तु इसलिए कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए।*"

[युहन्ना 3:16, 17]

मैंने यह भी महसूस किया कि हमें भजन, साधना, पूजा, तीर्थ इत्यादि के द्वारा मोक्ष की प्राप्ति करने के बारे में सिखाया तो जाता है परंतु सभी धर्मों में इन सब बातों को निरंतर करते चले जाने का सिर्फ एक खुला रास्ता है जिसमें मोक्ष-प्राप्ति का कोई आश्वासन नहीं है। इस बारे में जब मैंने बाइबल को पढ़ा तो मैंने मोक्ष प्राप्ति का एक अलग तरीका पाया।

📖 "*तो उसने हमारा उद्धार किया; और यह धर्म के कामों के कारण नहीं, जो हम ने आप किये, पर अपनी दया के अनुसार नए जन्म के स्नान और पवित्र आत्मा के हमें नया बनाने के द्वारा हुआ।*

[तीतुस 3:5]

और फिर इफिसियों 2:8,9 में -
📖 "*क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है; और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है, और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।*"

परमेश्वर ने बाइबल के द्वारा मुझे सिखाया कि मुझे एक उद्धारकर्ता की ज़रूरत थी जो मुझे मेरे पापों के परिणाम से (अर्थात सनातन जीवन में परमेश्वर से दूर नर्क में रहना जहाँ निरंतर दुःख और दर्द ही है), बचा सके।

हालांकि नर्क मानवजाति के लिए नहीं बल्कि उन दुष्ट आत्माओं के लिए बनाया गया जो कि परमेश्वर के विरोध में खड़ी होती हैं फिर भी वे लोग जो उपद्रवी होकर परमेश्वर की आज्ञा तोड़ते हैं तथा उसकी करूणा का तिरस्कार करते हैं वे अभिमानी लोग भी उस आग की झील में डाले जाते हैं (जिसे हम नर्क के रूप में जानते हैं)।

मैं समझ गया था कि मेरे पापों की क्षमा के लिए मुझे परमेश्वर की करूणा की ज़रूरत थी। पर 'कैसे' यह सवाल अभी भी खड़ा था। इस विषय में मैंने बाइबल में पढ़ा –

📖 "*यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है।*"

इसी विषय पर बाइबल युहन्ना 1:1-18 में और भी बहुत सी बातें करती हैं जिनमें से 12वीं आयत ने मेरा ध्यान अपनी ओर खींच लिया -

📖 "*...परंतु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की संतान होने का अधिकार दिया, अर्थात उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं...*"

और रोमियो 10:10 –

📖 "*क्योंकि धार्मिकता के लिए मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिये मुँह से अंगीकार किया जाता है।*"

उपरोक्त वचनों से मैंने सीखा कि मुझे अपने पापों से पश्चाताप कर परमेश्वर से माफी माँगनी थी, प्रभु यीशु को अपने जीवन में उचित सर्वोच्च स्थान देना था और अपने दिल से विश्वास तथा मुख से अंगीकार करना था कि वो परमेश्वर का पुत्र है और मेरे पापों की कीमत उसने चुका दी है, इसके बाद मैं परमेश्वर की संतान होकर जीवन जी सकता था। अब मेरी समझ में आ रहा था कि पास्टर पीटर इस बात से क्या कहना चाहते थे कि वो परमेश्वर के साथ सम्बंध में विश्वास करते थे। मैं अब अपने पापों से पश्चाताप कर परमेश्वर से क्षमा चाहता था। मैं इस बात के लिए उत्साहित था कि परमेश्वर के साथ एक व्यक्तिगत सम्बंध स्थापित करूँ जैसे पिता-पुत्र का रिश्ता।

बाइबल की आख़िरी पुस्तक 'प्रकाशितवाक्य' में परमेश्वर (प्रभु यीशु) इस प्रकार कहते हैं -

📖 "*देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूँ; यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूंगा और वह मेरे साथ।*"

[प्रकाशितवाक्य 3:20]

उपरोक्त वचन के अनुसार मैंने अपना दिल प्रभु परमेश्वर के लिए खोल दिया था कि वो उसमें वास करे। यह जानने के बाद कि मैं पापी था और परमेश्वर पवित्र, मैंने प्रार्थना के साथ अपना जीवन प्रभु यीशु के सुपुर्द कर दिया था। मैंने अपने सभी पापों से तौबा की थी जो मैंने जाने-अनजाने में किये थे और परमेश्वर को अपने जीवन का स्वामी बना लिया।

मार्च 1998 में रश्मि के साथ बैठकर मैंने पश्चाताप तथा उद्धार की प्रार्थना कुछ इस प्रकार की:

"*हे प्रभु, मैं स्वीकार करता हूँ कि मैंने अपने जीवन में जाने और अनजाने में बहुत से पाप किये हैं। मैं अंगीकार करता हूँ कि स्वभाव से ही मैं पापी हूँ। मैं यह भी जान गया हूँ कि आप पवित्र परमेश्वर हैं और आपके सिवा और कोई मेरा प्रभु नहीं है। प्रभु यीशु मसीह, सिर्फ आपने मेरे पापों को क्षमा करने का वायदा किया है और मेरे पापों के लिए अपने प्राण दिये हैं। 2000 वर्ष पहले आप मेरी खातिर मरे, तथा तीसरे दिन जी उठे और फिर जीवित स्वर्ग में उठा लिए गए। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि मेरे पापों को क्षमा कर दीजिए और मेरे जीवन का सारा अधिकार तथा नियंत्रण अपने हाथों में ले लीजिये। प्रभु, मेरे दिल में आइए और स्वर्ग राज्य में मुझे स्थान दीजिए। आप अपने वायदों पर सत्य परमेश्वर हैं इसलिए मैं आपका धन्यवाद करता हूँ, आपने मेरे पाप क्षमा कर दिए हैं और मेरे नाम आपने जीवन की स्वर्गीय किताब में लिख दिया है। उद्धार (मोक्ष) के दान के लिए मैं आपका आभारी हूँ। आमीन।*"

परमात्मा ने मेरी प्रार्थना को सुन लिया और उसकी असीम शांति मेरे जीवन में प्रवेश कर गई। परमेश्वर के वचन के अनुसार प्रभु ने मुझे अपनी संतान,

पवित्र आत्मा का मन्दिर, तथा नई सृष्टि बना दिया। अब मुझे ईश्वर को खोजने के लिये आराधना के स्थानों में जाने की ज़रूरत नहीं थी।

जिस दिन मैंने पश्चाताप तथा उद्धार की प्रार्थना की तब से मेरे सारे पाप प्रभु यीशु के लहू से धुल गए और प्रभु ने मुझे नया जीवन दिया –

📖 *"इसलिए यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है; पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, सब बातें नई हो गई हैं।"*

[2 कुरिन्थियों 5:17]

प्रिय पाठक, यदि ये आप के दिल की भी प्रार्थना है और आप सोचते हैं कि आप प्रभु यीशु को अपने व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण करने के लिए तैयार हैं तो मैं आपको उत्साहित करना चाहता हूँ कि आप शांति से बैठकर परमात्मा से प्रार्थना करें। परमेश्वर आपके सभी पापों को क्षमा करेगा और आपको जीवन की ज्योति देगा ताकि आप फिर कभी अन्धकार में न चलें।

मैं आपको यह बताना चाहता हूँ कि उद्धार (मोक्ष) व्यक्तिगत होता है। न तो हमारे पूर्वाग्रहों (पुराने रूढ़ीवादी विचारों) और न ही हमारे किन्हीं सम्बंधों के कारण हमें अपने आपको परमात्मा से मिलन करने से रोकना चाहिए। परमेश्वर हमसे प्रेम करता हैं और हम में से हरेक को पापों से मुक्ति दिलाना चाहता हैं। मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूँ कि आप ईश्वर को एक नई नज़र से बच्चों जैसे पवित्र और शंकारहित विश्वास के साथ उसे देखें। मैं जानता हूँ कि वो आपसे बात करने लगेगा।

यदि आपने भी ये प्रार्थना की है तो आश्वस्त रहिए कि परमेश्वर ने आपके पाप क्षमा कर दिए हैं और स्वर्ग के राज्य के द्वार आपके लिए खोल दिये हैं ताकि आप स्वर्गीय आशीषों से परिपूर्ण हो जाएँ। आपने शारीरिक या भावनात्मक रूप से कुछ महसूस किया है या नहीं इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि परमेश्वर के पवित्र आत्मा ने आपकी आत्मा के सारे पापों तथा उसकी अपवित्रता की सफाई कर दी है। आपकी आत्मा अब परमात्मा के समक्ष निर्दोष है। अब आपको सिर्फ ये करने की ज़रूरत है कि आप निरंतर परमेश्वर से प्रेम करें, उसका वचन पढ़ें, रोज प्रार्थना करें तथा विश्वासियों की संगति करें ताकि अपने विश्वास में मज़बूत होते चले जाएँ।

ऐसा करके आप परमेश्वर के बारे में और जानेंगे और उसकी आशीषों का अनुभव करेंगे।

***

जब से मैंने प्रभु यीशु में विश्वास किया है तब से मेरी ज़िन्दगी बदल गई है। मैं एक नए व्यक्तित्व का, नई सोच का, मन फिराया हुआ, उजले चरित्र का तथा ईश्वरीय दर्शन का स्वामी हो गया हूँ। इससे भी बढ़कर पिता परमेश्वर तक मेरी पहुँच हो गई है जिससे किसी भी समय मैं उससे प्रार्थना कर सकता हूँ। मैं सदैव उसकी छत्रछाया में रहने लगा हूँ। आज मेरे पास स्वर्ग में एक चुना हुआ आरक्षित स्थान है। मैं जानता हूँ कि मैं वहाँ जाकर रहूँगा जब मैं यह देह छोड़कर जाऊंगा।

बाद में 1998 में ही, मैंने परमेश्वर की बपतिस्मा की आज्ञा को पूरा किया तथा अपने विश्वास की गवाही दी। इसके साथ ही पूर्णरूप से मैंने अपने आपको प्रभु को समर्पित कर दिया।

📖 *"जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा;"*

[मरकुस 16:16]

मैंने परमेश्वर पर भरोसा करके जीना सीख लिया है और उसने मेरे जीवन के सभी क्षेत्रों में अपनी जीवित उपस्थिति भर दी है तथा अपना आनंद दिया है। उसने मेरी प्रार्थनाओं के उत्तर दिये, मेरे परिवार का उद्धार किया, मुझे अच्छी नौकरियां दी तथा उनमें सफलता भी दी और एक विश्वासी तथा बहुत ही अच्छी पत्नी दी जो परमेश्वर से प्रेम करती है और उसका भय मानती है। परमेश्वर ने मुझे वो सब कुछ दिया जो एक व्यक्ति अपने जीवन में चाहता है।

आने वाले अध्यायों में मैं परमेश्वर की विश्वासयोग्यता के विषय में विस्तार से बताऊँगा जिससे आप जानेंगे कि परमेश्वर अपने प्रेम करने वालों के प्रति कितना उदार है।

मेरा जीवन ईश्वर की कृपा से पूरी तरह से बदल गया। हालांकि मेरे जीवन में परीक्षाएँ निरंतर आती रहीं, परन्तु मैं भी पवित्र जीवन जीने के लिए

परमेश्वर के अनुग्रह से निरंतर अपने शरीर से लड़ता रहा हूँ कि पाप न करूँ। मैं कई बार गिरता भी हूँ परंतु परमेश्वर अपनी असीम करुणा से मुझे उठा लेता है और अपने साथ साथ चलाता है। वो मेरी हरेक आवश्यकता को पूरा करता है। सभी खतरों और मुसीबतों से वो मुझे छुड़ाता है। मुझे किसी बात की चिंता नहीं होती क्योंकि वो मेरा ख़्याल रखता है। वो मेरे बंधनों से मुझे छुड़ाता है और मेरे बोझ अपने ऊपर ले लेता है। जब मुझे प्रार्थना करना नहीं आता तो वो मुझे सिखाता है और यहाँ तक कि मेरे लिए प्रार्थना भी करता है। मेरे प्रभु महान है और उनकी महानता का वर्णन करते समय मेरा दिल धन्यवाद से भर आता है। परमेश्वर की स्तुति हो। आमीन।

7 उद्धार

उद्धार (मोक्ष)

मैं बाइबल में दिए उद्धार अर्थात मोक्ष प्राप्त करने के तरीके से बड़ा अचंभित होता हूँ। यह परमेश्वर का वरदान है और कोई भी जो प्रभु यीशु में विश्वास करे, इसे पा सकता हैं। अजीब बात ये है कि न तो इसमें धर्म की कोई सीमा है और न कर्मों का कोई बन्धन।

जैसे हम किसी दान या उपहार की कोई क़ीमत नहीं चुकाते बल्कि उसे सहर्ष स्वीकार कर लेते हैं उसी प्रकार हमें अपने उद्धार (मोक्ष) की भी क़ीमत चुकाने की कोई ज़रूरत नहीं है यह परमेश्वर का मानवजाति के लिए उपहार है। हम उपहार की क़ीमत चुकाने की बात कर उपहार देने वाले का अपमान ही करते हैं।

'पापों की क्षमा' तथा 'शाश्वत जीवन की आशा' परमेश्वर की ओर से प्रभु यीशु के द्वारा हमें दिया गया दान है। यह 'अनुग्रह द्वारा उद्धार' की बात है जो विश्वास के द्वारा ग्रहण किया जाता है। यह सच में इतना सरल है कि कई बार हम इसे समझ ही नहीं पाते हैं क्योंकि ज्यादातर लोग मोक्ष को एक बहुत ही जटिल काम समझते हैं।

"हम में से हरेक को ईश्वर की अर्थात प्रभु यीशु की आवश्यकता है भले ही हम कोई भी क्यों न हों, किसी भी धर्म या जाति में पैदा हुए हों, कैसे भी हम रहते हों, हमारा सामाजिक स्तर कुछ भी क्यों न हो, हमने कुछ भी क्यों न किया हो और कुछ भी करने की योग्यता हम क्यों न रखते हों।"

मैं विभिन्न धर्मों में प्रचलित ईश्वर के बारे में बताई गई अवधारणाओं तथा रीति-रिवाजों की अधिकता से भी आश्चर्यचकित होता हूँ; खास तौर पर उसमें जिसमें मैं पैदा हुआ था।

धर्म में संस्कार तथा रीति-रिवाज सिखाए जाते हैं जिनकी पालना करने पर यह समझा जाता है कि हम अपना उद्धार कमा सकते हैं। इसे मैं "कर्मों के

द्वारा उद्धार' के नाम से सम्बोधित करूंगा। बचपन से सिखाए गए संस्कार हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन जाते हैं जिनसे हम इतने प्रभावित होते हैं कि ईश्वर के बारे में हम उसके अलावा किसी और तरीके से सोच ही नहीं पाते हैं।

किसी एक धर्म विशेष में पैदा होने तथा उसके अनुयायी होने के कारण कई बार हम इतने सख्त हो जाते हैं कि सच्चाई को जानने से हम अपने आपको रोकते हैं विशेषकर ऐसा सत्य जो किसी और सम्प्रदाय अथवा विश्वास से आता प्रतीत होता हो, जिसका हमने कभी पालन नहीं किया।

धर्म की पालना करने से व्यक्ति धार्मिक (आत्मिक नहीं) ज़रूर हो जाता है, जिसका जीवन के प्रति अपना एक नज़रिया होता है, अपना एक व्यक्तित्व, ईश्वर के प्रति अपनी एक सोच और अपनी व्यक्तिगत विचारधारा, जिसके द्वारा वो ईश्वर को पाने का प्रयास करता है। मैंने दूरदर्शन में कई बार ऐसे कार्यक्रमों को देखा जिसमें कई तीर्थस्थानों के बारे में बताया जाता है। इनमें से एक कार्यक्रम में मैंने देखा कि कुछ लोग लगातार धूम्रपान करते हुए, कुछ अपनी जगह निरंतर चलते हुए तो कुछ लोग बहुत लम्बे समय तक अपनी जगह पर खड़े रहकर साधना करके तो कुछ अपने शरीर को दुःख पहुँचाकर मोक्ष प्राप्ति करने की नाकामयाब कोशिश करते हैं।

यह बात सच है कि यदि हम ऐसे किसी भी पूर्वाग्रह से ग्रसित हों, तो हम मसीही विश्वास को नहीं समझ सकते क्योंकि सभी धर्मों से अलग यही एक विश्वास है जो कि किसी भी प्रकार के भले कर्म के द्वारा मोक्ष होने की बात को नहीं मानता बल्कि सिर्फ परमेश्वर की कृपा से अपने विश्वास के द्वारा उद्धार की बात को ही मानता है।

अपने पुराने मनगढ़ंत विचारों के कारण कई लोग अपने मार्ग तो बनाते रहते हैं परन्तु यीशु मसीह को 'विदेशी' क़रार देते हैं और उनके प्रेम तथा बलिदान का तिरस्कार करते हैं। मैं यह बात समझ नहीं पाता कि वह ईश्वर, जिसने करोड़ों – अरबों किलोमीटर की लम्बाई-चौड़ाई वाले ब्रह्मांड की रचना की, वो इसी ब्रह्मांड के एक छोटे से सौरमंडल में नगण्य आकार के एक ग्रह पर कुछ हज़ार किलोमीटर की दूरी पर बसे एक छोटे से देश में अवतरित होने पर वह विदेशी कैसे हो जाता है।

आप किसी भी सम्प्रदाय अथवा विश्वास के मानने वाले क्यों न हों, आपने कर्मों के द्वारा मोक्ष के विषय में अवश्य सुना होगा – अगर इसी नाम से नहीं तो भी उसके रीतिरिवाजों से आप यह समझ सकते हैं। परंतु आज आप से मैं विनती करता हूँ कि आप अपने दिमाग को स्वतंत्र करें ताकि अनुग्रह (करूणा) के द्वारा उद्धार (मोक्ष) की बात को आप ठीक प्रकार से समझ सकें।

मैं समझता हूँ कि मसीहीयत में सम्पूर्ण मानवजाति का उद्धार शामिल है जो कि मुफ्त में उन सबको बांटा गया है जो प्रभु यीशु मसीह में व्यक्तिगत रूप से विश्वास करते हैं। प्रभु यीशु में विश्वास किये बिना कोई मोक्ष नहीं है।

परमेश्वर सभी को आमंत्रित करता है कि हम चखें और देखें कि वो कैसा भला परमेश्वर है। जिस तरह से मैं आपको बता रहा हूँ उस तरीके से उसे चखने के बावजूद यदि आप उसमें जीवन की भरपूरी न पाएँ तो आप इसे किसी भी कसौटी पर कसने या यहाँ तक कि छोड़ देने के लिए स्वतंत्र हैं। मैं सिर्फ आपको इस बात के लिए उत्साहित करना चाहता हूँ कि बिना जांच के आप इसे अस्वीकार न करें।

समझदार जीव होने के कारण यह न सिर्फ हमारा अधिकार है बल्कि ज़िम्मेदारी भी है कि हम उस 'परमसत्य' की खोजबीन करें जो हमारी परिस्थितियों, संस्कारों अथवा भावनाओं के कारण बदलता नहीं है। यदि परमेश्वर से हम मांगें तो वो हमें इस सत्य का अनुभव अवश्य कराएगा।

मैं इस समय यह बात भी बताना चाहता हूँ कि ऐसी कौन सी खास बातें हैं जो मसीही विश्वास को तथा बाइबल को बाकी सभी धर्मों से अलग करती है। वो बात यह है कि सिर्फ बाइबल और इसमें व्यक्त परमेश्वर ही हमें मुफ्त में पाप-क्षमा का दान देना चाहता है जिसका हमारे धर्म, जाति तथा संस्कार से कोई लेना देना नहीं है। हालांकि स्वयं परमेश्वर ने इसका बहुत बड़ा मूल्य चुकाया है।

फिर जैसा कि मैं पहले कह चुका हूँ कि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से (अर्थात परमेश्वर की कृपा से) हमारा उद्धार हुआ है और यह हमारे भले कामों के कारण नहीं है कि किसी भी रीति से इस पर घमण्ड कर सकें।

मेरा मानना है कि हमारा उद्धार (मोक्ष) हमारे कामों पर निर्भर नहीं करता है क्योंकि जितने भी भले काम हम करें वे सब परमेश्वर के अतिपवित्र और ऊँचे मापदण्ड के सामने धूल और खाक के समान हैं। हम ऐसे कोई काम नहीं कर सकते जिससे हम ईश्वर को प्रसन्न कर सकें कि वो हमारा उद्धार करे। और बाइबल के अनुसार तो हम रचे ही इसलिए गये हैं कि भले काम करें तो फिर उनके द्वारा हमें कोई विशेष योग्यता तो यूँ भी नहीं मिल सकती। बल्कि मन, विचार, स्वभाव तथा कर्मों से किये गए अपने जीवनभर के पापों के कारण हम वैसे ही उसके कोप तथा सज़ा के भागीदार हो गए हैं इसलिए यह बहुत ज़रूरी है कि उसके न्याय का समय आने से पहले ही हम उसे ढूंढें और और अपने पापों कि क्षमा प्राप्त करें।

हम में से हरेक को ईश्वर की अर्थात प्रभु यीशु की आवश्यकता है भले ही हम कोई भी क्यों न हों, किसी भी धर्म या जाति में पैदा हुए हों, कैसे भी हम रहते हों, हमारा सामाजिक स्तर कुछ भी क्यों न हो, हमने कुछ भी क्यों न किया हो और कुछ भी करने की योग्यता हम क्यों न रखते हों।

***

📖 *इसलिये कि सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं...*

[रोमियों 3:23]

📖 *क्योंकि पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है, परंतु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।*

[रोमियों 6:23]

बाइबल के अनुसार इस धरती पर कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जो निष्पाप हो और जिसने मन से, विचारों से, बोली से या कर्म से कोई पाप न किया हो और इसलिए हम सभी परमेश्वर की महिमा से दूर हैं। और हम सभी को पापों की क़ीमत चुकाने की ज़रूरत है क्योंकि पाप लेकर कोई भी स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकता।

कई धर्म तथा मत, न्याय की इस बात को समझते हैं कि सभी को अपने जीवन का लेखा देने के लिए परमेश्वर के न्याय सिंहासन के सम्मुख खड़ा होना है और परमेश्वर के न्याय के अनुसार ही हम स्वर्ग अथवा नर्क में जाएँगे।

बाइबल के अनुसार वे लोग जो प्रभु यीशु के आने का सुसमाचार नहीं सुन सके और इस दुनिया से मानव शरीर छोड़कर चले गये, उनका न्याय परमेश्वर के उचित निर्णय के अनुसार होगा परंतु जिन्होनें परमेश्वर की करूणा का समाचार सुनकर भी उसका तिरस्कार किया है वे पहले ही से अपने ऊपर दण्ड ले आए। सिर्फ वे, जिन्होनें यीशु मसीह पर विश्वास किया है और उनको अपना मालिक/प्रभु मान लिया है उनके खिलाफ दण्ड की आज्ञा नहीं रही और वे सनातन परमेश्वर के साथ हमेंशा का जीवन बिताने के अधिकारी हो गए हैं।

यह परमसत्य है। इसे समझना और अपने जीवन में प्रमुख स्थान देना ज़रूरी है। इसे तोड़ा-मरोड़ा, झुठलाया अथवा नकारा नहीं जाना चाहिए।

हम न तो अपने व्यक्तिगत पापों के, और न ही किसी दूसरे के पापों की क़ीमत चुकाने के योग्य हैं क्योंकि हम सभी बराबर के पापी हैं और परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी हैं।

तो फिर कौन इन पापों की क़ीमत चुका सकता है?

सिर्फ ऐसा एक व्यक्ति जिसने कभी पाप न किया हो और जो पवित्र कहलाने की श्रेणी में आता हो। वह व्यक्ति जो हमारे पापों की क़ीमत चुकाने के लिए प्राण देने तक भी तैयार हो (क्योंकि पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है) और बदले में जो हमसे कुछ न मांगे क्योंकि हमारे पास उसे देने योग्य कुछ भी नहीं है।

ऐसा दयावन्त, प्रेमी तथा भला व्यक्ति जो परमपवित्र भी हो, स्वयं परमेश्वर के अलावा कौन हो सकता है?

मैं इसे एक उदाहरण के द्वारा समझाने की कोशिश करता हूँ। मान लीजिए की एक पिता अपने नासमझ पुत्र के साथ एक महंगी दुकान से सजावट के लिए कुछ कलाकृति लेने गया और गलती से बेटे ने दुकान में रखी एक बेशक़ीमती कलाकृति तोड़ दी।

तो आप क्या सोचते हैं कि दुकानदार उनको बिना क़ीमत चुकाए जाने देगा? बिलकुल नहीं।

तो क्या पुत्र उसकी क़ीमत चुका सकता है जबकि वो कुछ कमाता भी नहीं है? नहीं।

लेकिन किसी को तो चुकाना ही पड़ेगा। या तो पुत्र, या पिता या स्वयं दुकानदार नुकसान को सह ले और उन्हें जाने दे। परंतु कोई दुकानदार ऐसा तो नहीं करता है। तो क्या पिता अपने बेटे को छोड़कर चला जाए क्योंकि उसके बेटे ने एक ऐसी गलती की जिसकी वो क़ीमत चुकाने के योग्य नहीं है।

नहीं।

तो ऐसे में एक ही रास्ता है कि पिता ही अपने बेटे की गलती की क़ीमत चुकाए और वो सहर्ष ऐसा करता है क्योंकि वो अपने बेटे से प्यार करता है। भले ही उसे अपने बेटे की इस गलती की कितनी भी भारी क़ीमत क्यों न चुकानी पड़े।

तो फिर क्या पिता हमेंशा अपने पुत्र को उस गलती की और अपने बलिदान की याद दिलाता रहता है? नहीं, अपितु एक अच्छा पिता यह चाहता है कि उसका पुत्र फिर से भविष्य में ऐसी गलती न करे और ऐसा ही वह उसे सिखाता भी है।

सोचिए, परमेश्वर अपने बच्चों से जिनको उसने बनाया, कितना प्यार करता है? तो क्या वो हमें हमारे पापों के बोझ तले तड़पता छोड़ सकता है जहां हमारा विनाश हो जाए? कभी नहीं, परमेश्वर हमें छुड़ाता है क्योंकि वो हमसे प्रेम करता है। उसने हमें पैदा किया है और वो हमारा स्वर्गीय पिता है। वो न सिर्फ हमारे पापों को क्षमा करता है बल्कि हमारे सारे पुराने पापों को क्षमा करने के बाद हमेंशा के लिए भुला भी देता है। उसके बाद वो हमसे अपेक्षा करता है कि उसके प्रेम तथा सामर्थ्य को पहचानते हुए हम एक पवित्र जीवन जीएँ ताकि इस दुनिया के बाद हम अनंत जीवन पिता परमेश्वर के साथ बिता सकें।

हम लोग उपरोक्त उदाहरण को नहीं समझ सकते यदि हम कर्मों के द्वारा मोक्ष पाने में विश्वास करते रहे हों। कर्मों वाली व्यवस्था परमेश्वर के न्यायी स्वरूप को नहीं समझा सकती है।

मेरे साथ एक और उदाहरण को देखिए जिससे पहला उदाहरण और स्पष्ट हो जाएगा और कर्मों द्वारा उद्धार न हो पाने की बात की सच्चाई और गहराई से समझ आएगी।

एक हत्यारे की कल्पना कीजिए जो कि किसी की हत्या के आरोप में न्यायाधीश के सामने लाया गया। यदि वो कहे कि अपनी जिंदगीभर वह भले काम करता रहा है, उसने समय पर पूरा कर चुकाया, सभी नियमों तथा कानूनों का पालन किया, सामाजिक कार्यों के लिए चंदा दिया और तमाम तरह के भले काम किये और अन्ततः वह इस दलील के चलते यह कहे कि उसे बाइज़्ज़त बरी कर दिया जाए क्योंकि उसने एक सही कारण से बदला लेने के लिये एक हत्या की।

तो क्या आप सोचते हैं कि जज साहब को उस हत्यारे को छोड़ देना चाहिए? हरग़िज़ नहीं।

मेरे विचार में आप ज़रूर सोच रहे होंगे कि भले काम अपनी जगह हैं परंतु कानून तोड़ने की और हत्या जैसा जुर्म करने की सज़ा तो उसे मिलनी ही चाहिए।

यदि न्यायाधीश उसे छोड़ दे तो क्या हम उस न्यायाधीश को पक्षपाती अथवा गलत नहीं ठहराएँगे?

तो फिर हम इस बात को कैसे मान लेते हैं कि हम जीवनभर जो पाप करते रहते हैं उनके बदले भले काम कर हम उनका पलटा परमेश्वर को दे सकते हैं। क्या आपको लगता है कि परमेश्वर का न्याय हमारे न्याय से भी निम्न स्तर का है?

परमेश्वर निष्पक्ष न्यायी है। वह कभी न तो अन्याय करता है और न ही वह कभी पक्षपात करता है। वह तो परमपवित्र है। हम ही पापी हैं, और यह बात समझ लीजिए कि जो भी पाप हम करते हैं वे सभी परमेश्वर के समक्ष रहते हैं और परमेश्वर सभी पापों को बराबर समझता है। उसके लिए कोई पाप छोटा या बड़ा नहीं होता, वो तो सभी पापों से घृणा करता है। सोचिए कि हम सब कितने गुनाहगार हैं और सज़ा के हकदार हैं।

अपने अपने जीवन में हम सभी अलग अलग तरह के गलत काम करते हैं जिससे हमारा अनंत जीवन हमसे खोता चला जाता है। आप क्या करते हैं वो उससे अलग हो सकता है जो मैं करता हूँ पर अन्ततः सभी पाप हमें आत्मिक मृत्यु (परमेश्वर से हमेंशा के लिए अलगाव) की ओर खींचते चले जाते हैं।

यदि हम अपने जीवन में किये विचारों तथा कर्मों की ओर देखें और पाप की ओर अपने स्वभावगत झुकाव पर विचार करें तो हम पाएँगे कि हम पापी हैं और इसलिये हमें हमारे पापों की सज़ा मिलनी चाहिए। तौभी, पहले दिए उदाहरण के पिता की तरह प्रभु यीशु मसीह ने अपना रक्त बहाकर हमारे पापों की क़ीमत चुका दी ताकि हमें पाप तथा मृत्यु के बंधनों से छुड़ाकर स्वर्ग के राज्य में प्रवेश दिलाएँ।

***

परमेश्वर की करूणा से हम तक पहुँचे 'मोक्ष के सुसमाचार' का तिरस्कार करना भी एक पाप है। यदि इस क़िताब को पढ़ते समय किसी भी समय में आपको ऐसा अहसास हुआ है कि परमेश्वर आपको आपके पापों की क्षमा मांगने के लिए प्रेरित कर रहा है, तो अपना दिल कड़ा मत कीजिए बल्कि तुरंत अपने पापों की क्षमा माँगकर क्षमा प्राप्त कीजिए ताकि आप परमेश्वर की छत्रछाया में अपना जीवन बिता सकें।

यदि अब तक आपने अपना मन नहीं बनाया है तो फिर आगे पढ़िए ताकि आप जान सकें कि जीवित परमेश्वर किस प्रकार प्रार्थनाओं के उत्तर देता है।

पाओ!

8 प्रार्थनाओं के उत्तर

"मैंने सीखा कि परमेश्वर अलग अलग तरीकों से हमसे बात करता है। कभी परिस्थितियों के द्वारा, कभी हमारी प्रार्थना में मांगी गई वस्तु देकर, कभी अपने दासों के द्वारा तो कभी अपनी मीठी आवाज से जो हमारे मन में आती है। सिर्फ़ विश्वास के द्वारा ही हम इन उत्तरों को सुन सकते हैं।"

सभी प्रार्थनाओं के उत्तर होते हैं

जब प्रार्थनाओं के उत्तर होने की बात आती है तो आमतौर पर ये माना जाता है कि ये तो ईश्वर की मर्जी है कि वो प्रार्थना को सुने या ना सुने और उसका अधिकार है कि उसका उत्तर दे या न दे। इसमें परमेश्वर के अधिकार की बात तो ठीक है पर उपरोक्त कथन पूरी तरह से सत्य नहीं है क्योंकि परमेश्वर का एक स्वभाव है और वो उसके विपरीत कभी व्यवहार नहीं करता।

याद रखें कि वो पवित्र परमेश्वर है और कभी न तो झूठ बोलता है और न ही अपने वायदों से मुकरता है। वह इंसान की तरह नहीं है कि अपनी बात से बदल जाए।

बाइबल में परमेश्वर ने अपना स्वभाव व्यक्त किया है। आइए देखें कि वो इस बारे में क्या कहता है। यिर्मयाह कि पुस्तक 29:12 में ऐसा लिखा है –

📖 *तब उस समय तुम मुझ को पुकारोगे और आकर मुझ से प्रार्थना करोगे और मैं तुम्हारी सुनूँगा।*

पुराने नियम (प्रभु यीशु के पृथ्वी पर मानव रूप में आने से पहले का विवरण) में किये अपने वायदों को परमेश्वर नये नियम (प्रभु यीशु के मानव रूप में आने का तथा उसके बाद का विवरण) में भी सिद्ध करता है। मत्ती

तथा लूका रचित सुसमाचारों में ऐसा बताया गया है कि प्रभु यीशु ने कहा (मत्ती 7:7 तथा लूका 11:9) –

📖 *माँगो, तो तुम्हे दिया जाएगा; ढूँढो तो तुम पाओगे; खटखटाओगे, तो तुम्हारे लिये खोला जाएगा।*

और 11वीं आयत में भी कि –

📖 "*अतः जब तुम बुरे होकर, अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएँ देना जानते हो, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता अपने माँगनेवालों को अच्छी वस्तुएँ क्यों न देगा ?*"

फिर मत्ती 18:19 में –

📖 "*फिर भी मैं तुम से कहता हूँ, यदि तुम में से दो जन पृथ्वी पर किसी बात के लिए एक मन होकर उसे माँगे, तो वह मेरे पिता की ओर से जो स्वर्ग में है, उनके लिए हो जाएगी।*"

और मत्ती 21:22 में –

📖 "*और जो कुछ तुम प्रार्थना में विश्वास से माँगोगे वह सब तुम को मिलेगा*"

मरकुस 11:24 में भी –

📖 "*इसलिए मैं तुम से कहता हूँ कि जो कुछ तुम प्रार्थना करके माँगो, तो विश्वास कर लो कि तुम्हे मिल गया, और तुम्हारे लिये हो जाएगा।*"

युहन्ना के अध्याय 14 के 13 तथा 14 आयत में ज़ोर देते हुए कि –

📖 "*जो कुछ तुम मेरे नाम से माँगोगे, वही मैं करूँगा कि पुत्र के द्वारा पिता की महिमा हो। यदि तुम मुझ से मेरे नाम से कुछ माँगोगे, तो मैं उसे करूँगा।*"

युहन्ना 16:24 में प्रभु यीशु ने फिर कहा –

📖 *"अब तक तुम ने मेरे नाम से कुछ नहीं माँगा; माँगो, तो पाओगे ताकि तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए।"*

हमारा परमेश्वर अल्फ़ा (आदि) और ऑमेगा (अंत) है (प्रकाशितवाक्य 1:8), जो कभी नहीं बदलता परंतु कल, आज और कल एक सा रहता है (इब्रानियों 13:8), जो कि पवित्र है (1 पतरस 1:16, लैव्यव्यवस्था 11:44,45, 19:2 20:7) और सिद्ध है (व्यवस्थाविवरण 32:4, 2 शमुअल 22:31)। वो परमेश्वर जो सदियों से वायदे करता चला आ रहा है वो अपने चरित्र की अखण्डता के कारण अपने सभी वायदे पूरा करता है।

यदि हम प्रभु यीशु मसीह की प्रकृति, उनके स्वभाव तथा उनके चरित्र को जानते हैं तो हमें इस बात में कतई संदेह नहीं होगा कि परमेश्वर हरेक प्रार्थना का जवाब ज़रूर देता है। वक्त की ज़रूरत सिर्फ इतनी है कि हम उसके जवाब को सुनने के लिए अपने आत्मिक कानों को तैयार करें। जैसे हम रेडियो या टेलीविजन में अपनी पसंद के कार्यक्रम सुनने अथवा देखने के लिए सही आवृति (फ्रिक्वेंसी) पर चैनल लगाते हैं उसी प्रकार हमें अपने मन-मस्तिष्क को सही जगह लगाना पड़ता है ताकि परमेश्वर की मीठी महीन आवाज़ को सुन सकें।

यदि हमारी प्रार्थना सुनी नहीं जाती है या हम अपनी प्रार्थनाओं के जवाब नहीं पाते हैं तो इसके दोषी हम स्वयं हैं, परमेश्वर नहीं। मैंने कई लोगों को ईश्वर पर दोष लगाते देखा है जबकि गलती हमारी ही होती है। सच में यह परमेश्वर की लापरवाही नहीं है बल्कि हमारा अविश्वास या गलत चीजों में (या गलत जगह पर) विश्वास है।

परमेश्वर के वायदों को अपने जीवन में पूरा करने के लिए हमें कुछ शर्तों को पूरा करना पड़ता है। अपनी प्रार्थनाओं के उत्तर पाने की शर्तें ये हैं कि हम परमेश्वर के मार्ग पर चलने वाले हों, उसके वचन में जड़ जमाए हों, उसकी जीवित आवाज़ को सुनने और मानने वाले हों, पापरहित जीवन बिताते हों तथा उसकी मर्ज़ी पूरी करते हों। यदि हमसे कमजोरी में या अनजाने में पाप हो भी जाए तो उससे पश्चाताप कर आगे का जीवन परमेश्वर के भय में बिताना ज़रूरी है।

बाइबल में यशायाह 59:1,2 में लिखा है –

📖 *"सुनो, यहोवा (परमेश्वर) का हाथ ऐसा छोटा नहीं हो गया कि उद्धार न कर सके, न वह ऐसा बहिरा हो गया है कि सुन न सके; परन्तु तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुम को तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है, और तुम्हारे पापों के कारण उसका मुँह तुम से ऐसा छिपा है कि वह नहीं सुनता"*

और युहन्ना 15:7 में –

📖 *"यदि तुम मुझ में बने रहो और मेरा वचन तुम में बना रहे, तो जो चाहो माँगो और वह तुम्हारे लिये हो जाएगा।"*

जब हम प्रार्थना करते हैं तो हमें यह विश्वास रखना बहुत ज़रूरी है कि जिससे हम प्रार्थना कर रहे हैं वह परमेश्वर जीवित तथा भरोसेमंद है और अपने वायदों को पूरा करता है। प्रार्थना के समय हमें पूरा विश्वास करना चाहिए (और संदेह नहीं होना चाहिए) कि वो इसका उत्तर ज़रूर देगा, यहाँ तक की प्रार्थना करने के तुरंत बाद यदि हमें पूरा विश्वास है तो हम परमेश्वर का धन्यवाद कर सकते हैं कि उसने प्रार्थना को सुन लिया और उसका उत्तर दे दिया है। इसके अलावा और भी बहुत सी बातें मैं लिख सकता हूँ पर यदि हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं और उसका भय मानते हैं तो वो काफ़ी है क्योंकि इन के होते हम अपने मन, प्राण तथा आत्मा से आज्ञाकारिता का जीवन बिताते हैं।

ये सभी बातें मैंने अपने आत्मिक जीवन में धीरे-धीरे सीखीं जैसे जैसे मैं पवित्र आत्मा के चलाए जीवन जीता रहा। हालांकि शुरूआत में तो मुझे ज्ञान की बहुत सी बातें नहीं पता थीं पर परमेश्वर द्वारा दिया नया जीवन, बच्चों जैसा सरल विश्वास, प्रार्थना करने का तथा उत्तर पाने का उत्साह और उसके वचन की भूख थी जो मुझे सदा परमेश्वर के साथ रखती थीं और मेरी प्रार्थनाओं के जवाब दिलाती थीं। और मैं आज भी ये मानता हूँ कि परमेश्वर के साथ जीवन बिताने के प्रेम ही काफी हैं, ज्ञान की कोई प्रधानता नहीं है।

मैंने सीखा कि परमेश्वर अलग अलग तरीकों से हमसे बात करता है। कभी परिस्थितियों के द्वारा, कभी हमारी प्रार्थना में मांगी गई वस्तु देकर, कभी अपने दासों के द्वारा तो कभी अपनी मीठी आवाज से जो हमारे मन में आती है और विश्वास के द्वारा हम उसे सुनते हैं।

यदि हम सटीक प्रार्थना करते हैं तो हमें सटीक जवाब भी मिलता है। परंतु यदि हम बात को गोल गोल घुमाकर प्रार्थना करते हैं तो या तो उसका जवाब ही नहीं मिलता और यदि मिल भी जाए तो हम इसे समझ नहीं पाते। सटीक प्रार्थना के लिए हमें परमेश्वर के विश्वास की ज़रूरत पड़ती है।

***

परमेश्वर से प्रार्थना के जवाब कैसे पाएँ

यह एक बहुत महत्वपूर्ण सिद्धान्त है जो मैंने बाइबल से सीखा है और मैं आपके साथ बांटना चाहता हूँ। बाइबल अनेक वायदों से भरपूर है। परमेश्वर के वायदे खज़ाने की चाबी की तरह हैं जो कि हमें दे दी गई है।

जब भी हम बाईबल में एक वायदा पाएँ, हमें तब तक प्रार्थना करना चाहिए जब तक पवित्र आत्मा हमारे मन में सम्पूर्ण विश्वास न भर दे और हमें ऐसा लगने न लगे कि यह वायदा हमारे ही लिए है। अगर वायदा किसी शर्त के साथ हो तो पहले आप इस शर्त को पूरा करें और फिर प्रार्थना करें; परन्तु यदि यह वायदा बिना किसी शर्त के दिया गया हो तो तुरंत विश्वास के द्वारा अपनी प्रार्थना का उत्तर प्राप्त करना चाहिए तथा यह मान लेना चाहिए कि सही समय में परमेश्वर इसे पूरा करेंगे और फिर हमें प्रार्थना के जवाब के लिए परमेश्वर का आभार प्रकट करना चाहिए। परमेश्वर अपने समय में आपको आशीष ज़रूर देंगे। हमें तब तक प्रार्थना करनी चाहिए जब तक परमेश्वर की आश्वासन न आ जाए कि प्रार्थना सुन ली गई है। मैं आपसे कह सकता हूँ कि ज्यादा समय नहीं बीतेगा कि आप परमेश्वर के वायदे को अपने जीवन में पूरा होते देखेंगे।

***

गवाहियां

प्रभु यीशु में विश्वास करने के बाद धीरे धीरे मैंने ऊपर लिखा सिद्धान्त सीखा। मैं शुरू से लेकर अब तक परमेश्वर की विश्वासयोग्यता से अचम्भित होता रहा हूँ।

यूँ तो हमारा जीवन प्रभु के सभी विश्वासियों की तरह अनगिनत आशीषों से और गवाहियों से भरा हुआ है, परन्तु मैं यहाँ सब बातों का उल्लेख नहीं कर

रहा हूँ। मैं आपको उत्साहित करने के लिए और यह दिखाने के लिए कि परमेश्वर कितना महान है और प्रार्थनाओं के उत्तर देने वाला भला परमेश्वर है, कुछ बातें यहाँ लिख रहा हूँ जो कि मेरी याददाश्त में बिलकुल साफ साफ अंकित हैं।

हरेक प्रार्थना के उत्तर के साथ परमेश्वर ने हमें कुछ सिखाया है जिससे हमारा विश्वास बढ़ता चला गया है और प्रभु यीशु हमें उस दिन के लिए तैयार कर रहे हैं जब वो फिर से आने वाले हैं।

असफलताओं का सफलता में बदलना

मुझे जहाँ तक याद है, मैं पढ़ाई में कभी भी बहुत तेज नहीं था। बल्कि खेलकूद में ही मेरा मन ज्यादा लगता था। ऐसे खेल जिनमें शारीरिक व्यायाम ज़्यादा होता है वे मुझे पसंद थे जैसे कुश्ती, फुटबॉल तथा क्रिकेट।

गणित और विज्ञान से तो मेरा हमेंशा से छत्तीस का आंकड़ा रहता था। नवीं कक्षा तक तो मैं साठ प्रतिशत (60%) अंक लेकर पास हो ही जाता था परंतु 10वीं कक्षा के अर्ध-वार्षिक परीक्षाओं में मेरी भद्द पिट गई क्योंकि मेरे 100 में से सिर्फ 3 ही अंक आए।

पढ़ाई के लिये ठीक वातावरण न मिलने के कारण ऐसा हुआ था। मैं स्कूल से भागकर फिल्में देखने लगा और पढ़ाई से मुझे डर लगने लगा था। दसवीं की बोर्ड परीक्षा में मेरे बहुत बुरे अंक आये। गणित में तो मैं फेल ही हो गया था जिसके लिए मैंने फिर से इसका पर्चा लिखा और 47% लेकर पास हुआ। बड़ी मुश्किल से मैं द्वितीय श्रेणी से दसवीं में पास हुआ।
आगे की पढ़ाई के लिए मैं विज्ञान नहीं चुनना चाहता था पर पापा ने कहा कि यदि वे विषय मेरी बस में न हों तो मैं न लूं। यह बात मुझे चुभ गई और मैंने विज्ञान के ही विषय लेना तय किया चाहे आगे कुछ भी क्यों न हो।

केन्द्रीय विद्यालय में तो मुझे यह विषय नहीं मिल रहे थे तो मैंने पौद्दार विद्यालय में जाने का निर्णय लिया। यह सिर्फ लड़कों का स्कूल था और यहाँ के छात्रों के लिए दुनियाभर की सारी शरारतों के बाद ही पढ़ाई का स्थान आता था। मैंने वहाँ कई मित्र बना लिए और कई नई गलत बातें सीखीं। मैं

अपने दोस्तों के साथ सिगरेट पीने लगा (शायद मेरे परिवार के लोग आज तक भी ये बात न जानते हों), सप्ताह में एक या ज्यादा बार फिल्में देखने लगा, घर के बजाय हॉटलों में खाना खाने लगा, लड़कियों को छेड़ने लगा और लड़ाई-झगड़ा करना मेरे लिए आदत सी बन गई।

इन सब बातों के चलते, 11वीं कक्षा में मुझे सप्लीमेंटरी आ गई। गिरते पड़ते मैं उसमें पास हो गया पर 12वीं में तो मैं फेल ही हो गया। 12वीं की परीक्षा मैंने दोबारा दी और 47% अंकों से पास हुआ।

मेरी योग्यता से नहीं पर आरक्षण के चलते जयपुर के सबसे अच्छे विज्ञान कॉलेज (महाराजा कॉलेज) में मेरा दाखिला हो गया। मैंने भौतिकी, भूविज्ञान तथा गणित विषय लिए। अजीब बात ये थी कि जिन विषयों से मुझे डर लगता था वो ही मेरी नियति बन गए थे।

प्रथम वर्ष में मेरे 55% अंक ही आये।

द्वितीय वर्ष में मैं कॉलेज के चुनावों में खड़ा हो गया। कई दोस्तों के चढ़ाने पर मैंने यह निर्णय लिया था और मैं भी सोचता था कि इसी से मेरी कुछ तो पहचान बनेगी। चुनाव तो मैं हार ही गया पढ़ाई में भी मेरी नुकसान हुआ। इस साल मेरे सिर्फ 45% अंक ही आए।

हालांकि मैं आत्मनिर्भर होने की सोचा करता था ताकि अपनी मम्मी तथा भाई-बहन को खुश रख सकूँ परंतु इस दिशा में मैं अब तक कुछ भी नहीं कर रहा था। परंतु तीसरे वर्ष में प्रभु यीशु मेरे जीवन में आये और उसके बाद मेरा जीवन बिल्कुल बदल गया।

मैंने सही या गलत, सभी कारणों से लड़ाई-झगड़ा करना बंद कर दिया। सभी लड़कियों को मैं बहन की तरह देखने लगा, मैंने सिगरेट पीना बिलकुल छोड़ दिया, मेरा दिमाग भी जैसे बदल सा गया था। मैं अपने जीवन के तथा परिवार के प्रति जिम्मेदारी महसूस करने लगा था।

जैसे कोई अंधेरे कमरे में दीया जलाता है ठीक उसी प्रकार मेरे जीवन के अंधकार में परमेश्वर की ज्योति आ गई थी। तीसरे वर्ष में पहली बार मुझे 74% अंक मिले। यह मेरे जैसे विद्यार्थी के लिए एक चमत्कार से कम नहीं था। परमेश्वर ने मेरे लिये यह किया था।

राजस्थान विश्वविद्यालय के कम्प्यूटर डिप्लोमा की भर्ती परीक्षा में मैं प्रभु की दया से मैं आरक्षित सीटों में प्रथम स्थान पर आया था। यह भी एक आश्चर्यकर्म ही था।

प्रभु यीशु को जानने से पहले मैं नकल करने में उस्ताद था और परीक्षा से पहले अपना ज्यादा समय पर्चियां बनाने में निकालता था ताकि परीक्षाओं में उत्तर लिख सकूँ। परमेश्वर को जानने के बाद ये आदत कहाँ चली गई ये मुझे भी नहीं पता और न ही कभी ऐसी इच्छा या ज़रूरत मुझे कभी महसूस हुई।

मुझे भारत के सबसे प्रतिष्ठित संस्थानों में से एक, आई.आई.टी. (रूड़की) में उच्च शिक्षा के लिये दाखिला मिल गया। ये गवाही वृतांत में मैं आगे बताऊँगा। रूड़की में अपने आखिरी प्रोजेक्ट में मैं 92% अंक पा सका और अपने शिक्षकों तथा गाइड से मुझे काफी सराहना मिली।

आगे नौकरी में भी परमेश्वर की बड़ी करूणा हम पर बनी रही और मैं ऊँचा उठता चला गया।

मेरी असफलताएँ गायब हो गईं और सफलताएँ एक एक कर मेरे पास आने लगी। परमेश्वर का अनुग्रह निरंतर मेरे साथ रहा और पढ़ाई, नौकरी, पारिवारिक तथा व्यक्तिगत जीवन की सभी परिस्थितियों में परमेश्वर ने मुझे सही निर्णय लेने में मेरी सहायता की। मैं सच में परमेश्वर का तहे-दिल से शुक्रगुज़ारी करता हूँ।

तीन राष्ट्रीय स्तर की परीक्षाएँ पास कीं – जो मनुष्य के लिए असंभव है वो ईश्वर के लिए संभव है

स्नातक पढ़ाई के आखिरी वर्ष में (1997-1998), मुझे दो बातों में से एक बात का चुनाव करना था – या तो मैं कोई नौकरी करूँ या किसी अच्छे संस्थान में उच्च शिक्षा के लिए दाखिला लूँ।

पापा चाहते थे कि मैं एक प्रशासनिक अधिकारी बनूं या फिर किसी प्रतिष्ठित जगह पर उच्च तकनीकी शिक्षा लूं। वो इस बारे में सारी जानकारियां भी इकट्ठी करके रखते थे। उनको शौक था कि वो सलाह दें। वो न सिर्फ

हमारा मार्गदर्शन करते थे बल्कि उन सभी को भी उत्साहित करते थे जो उनसे राय लेने आते थे और उनको सब प्रकार की जानकारी देते थे।

मैं कॉलेज की पढ़ाई के बाद कम्प्यूटर (मास्टर ऑफ कम्प्यूटर एप्लीकेशंस) की पढ़ाई करना चाहता था और मैंने इसी के लिए तैयारी भी करना शुरू कर दिया था। पापा ने ज़ोर देकर बहुत सी जगहों पर अलग अलग विषयों के लिये फार्म भरवाए। मैंने दिल्ली विश्वविद्यालय, बड़ोदा (वडोदरा) विश्वविद्यालय, रूड़की विश्वविद्यालय तथा बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के फार्म भर दिए। भूविज्ञान की उच्च शिक्षा के लिए जाने की मेरी कोई इच्छा ही नहीं थी फिर भी पापा के कहने पर मैंने रूड़की में भूविज्ञान में एम. टैक. के लिए भी फार्म भर दिया था।

हमारी तैयारी में ज़्यादातर पापा के शराब पीकर आने से विध्न पड़ जाता था। वो अगर इसे बंद नहीं कर सकते तो कम से कम मात्रा तो घटा सकते थे – यह विचार हमारे मन में आता था। कई बार मुझे अपने दोस्तों के सामने पापा की इस आदत के कारण शर्मिंदा होना पड़ता था। न तो मैं अपने दोस्तों को अपने घर बुला सकता था और न ही तैयारी करने उनके घर जा सकता था क्योंकि फिर मुझे घर की चिंता सताती रहती।

रश्मि के सामने भी पापा ने कई बार घर में तमाशा किया पर सिर्फ ये एक ऐसी दोस्त थी जिसके सामने मुझे शर्म नहीं आती थी। वो हमारे परिवार का एक भाग सी हो गई थी और हरेक बात में मुझे समझाती थी कि यह पापा की गलती नहीं है बल्कि शैतान उनके पीछे से हमको नाश करने की कोशिश करता है। वो मेरे साथ इस विषय में प्रार्थना भी किया करती थी।

उन महत्वपूर्ण दिनों में एक दिन पापा बहुत शराब पीकर घर लौटे और फिर आगे दो-तीन दिन तक लगातार पीते रहे। आखिरकार मैंने उनको रोकने की चेष्ठा की और यह बात मुझे बहुत भारी पड़ी। वो बहुत गुस्सा हो गये। उन्होंने बड़े स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि मैं पहले ज़िन्दगी में कुछ करके दिखाऊं और फिर उनसे बात करूँ अथवा नहीं।

उन्होंने कहा, "मुझे कुछ बताने की और समझाने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई, तुम्हारी औकात अभी क्या है? तुम कीड़े के समान हो। कीड़े-मकोड़े रोज़ पैदा होते हैं और मर जाते हैं। मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता यदि तुम कहीं

जाकर मर जाओ।" उन्होंने मुझे कहा कि मैं उनके घर से निकल जाऊँ या अपने आप को सिद्ध करके दिखाऊँ। और यह भी, "जाओ और तीनों परीक्षाओं में पास होकर दिखाओ वर्ना मुझसे कभी ऐसी बात मत करना"।

मुझे बहुत दुःख हुआ और मैं परमेश्वर के सामने बहुत रोया। इस पूरे वाकये में एक ही खुशी की बात मुझे नज़र आ रही थी, वो ये कि पापा ने कहा कि अगर मैं तीनों परीक्षाएँ जो अभी बची थीं, उनमें पास होकर दिखा दूँ तो वो शराब पीना छोड़ देंगे। फिर भी दुनियावी तरीके से मेरे पास कोई आशा नहीं थी क्योंकि तीनों ही परीक्षाएँ बड़ी प्रतिष्ठित संस्थानों की थीं और मेरे लिए इन सबमें एकसाथ पास हो पाना बहुत मुश्किल था।

मुझे तीन राष्ट्रीय स्तर की परीक्षाओं में बैठना था और मुझे मालूम नहीं था कि मैं कैसे पास होउंगा क्योंकि ये मेरे लिए ऐसा था जैसे किसी ने मुझे अभियांत्रिकी (इंजीनियरिंग) और चिकित्सा विज्ञान (मेडीकल साइंस) दोनों के प्रवेश परीक्षा में पास होने के लिए कहा हो, जो नामुमकिन तो नहीं पर बहुत ही दुष्कर है।

मैं इस प्रकार प्रार्थना करता था –

"प्रिय प्रभु यीशु, मैं जानता हूँ कि अपनी बुद्धि, सामर्थ और मेहनत से मैं इन तीनो परीक्षाओं में पास नहीं हो सकता। मैं सिर्फ MCA के लिए ही तैयारी कर रहा हूँ और मेरे पास तो भूगर्भ-विज्ञान (रूड़की) की तैयारी करने का समय भी नहीं है। प्रभु, इस स्वर्ग और पृथ्वी के रचनाकार तो आप ही हैं, आपको सबकुछ मालूम है, आप मुझे सब कुछ सिखा सकते हैं। कृपया तैयारी करने में और तीनों परीक्षाओं को पास करने में मेरी सहायता कीजिए। आमीन।"

मेरे पास तैयारी करने के लिए बहुत ही कम समय था। लोग साल साल भर तैयारी करते हैं कि रूड़की में प्रवेश पा सकें, मैं 20-25 दिन में क्या कर सकता था। जो मेरे बस में था मैंने किया और बाकि सब प्रभु पर विश्वास करके छोड़ दिया था।

बनारस हिंदू विश्वविद्यालय की तथा रूड़की की प्रवेश परीक्षा देने के बाद मैं वडोदरा चला गया। मेरे पास एक अटूट आशा थी कि परमेश्वर ने मेरी दुआ

सुन ली है और वो उसका जवाब ज़रूर देंगे। आखिरी परीक्षा का परिणाम आ गया और मैं वडोदरा के महाराजा सायाजीराव विश्वविद्यालय का छात्र हो गया।

कुछ दिनों के पश्चात मम्मी ने फोन किया और मुझे अपना टिकट बनाने के लिए कहा। उन्होंने बताया कि बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (MCA) की परीक्षा का परिणाम आ गया और मैं पास हो गया था और मुझे वहाँ अपनी अंक-तालिका (मार्क-शीट) जमा करनी थी। उन दिनों राजस्थान विश्वविद्यालय में हड़ताल चल रही थी और इस कारण हमारी अंक-तालिका नहीं आई थी। मुझे व्यक्तिगत रूप में जाकर कार्यालय में उसकी प्रति मांगनी थी।

दूसरे दिन फिर मम्मी का फोन आया और उन्होंने मुझे जल्दी आने के लिए कहा। उन्होंने फिर बताया कि बनारस जाने से पहले मुझे रूड़की भी जाना था क्योंकि मैं उसमें भी पास हो गया था।

मेरी आंखों में आंसू आ गये और मेरा गला भर आया। मैं आगे कुछ नहीं बोल पाया पर रोते रोते मैं प्रभु का धन्यवाद करता रहा। उसकी करूणा ने मेरे लिए असंभव को संभव कर दिया था।

मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ कि उसने मुझे लज्जित नहीं होने दिया। उसने अपना वायदा पूरा किया और मुझे पूँछ नहीं पर सिर ठहराया। प्रभु की स्तुति हो।

गणित के एक प्रश्न का हल –
आवश्यकता के समय विद्यमान मदद

मैं स्नातक पढ़ाई के तीसरे वर्ष में अंकगणित का एक पर्चा देने के लिए परीक्षा हॉल में बैठा था। अपनी नई आदत के अनुसार मैं प्रार्थना करने लगा ताकि प्रश्न मेरे लिए आसान हों तथा परमेश्वर के बुद्धि और ज्ञान से मैं पर्चा लिख सकूँ।

थोड़ी देर में पर्चा मेरे हाथ में आ गया। हमारे प्रश्नपत्र में तीन भाग हुआ करते थे जिनमें तीन-तीन प्रश्न होते थे। हरेक भाग से कम से कम एक प्रश्न

लेते हुए हमें कुल पाँच प्रश्न हल करने होते थे। पहले भाग से सवाल न हल करने की दशा में हमारी कॉपी की जाँच न होने की भी संभावना थी।

मुझे दूसरे और तीसरे भाग के सभी प्रश्न आते थे पर पहले भाग से एक भी प्रश्न का हल नहीं आ रहा था। मुझे डर लगा कि ऐसे तो मैं फेल ही हो जाऊँगा। अब मुझे अपनी काबलियत पर कोई भरोसा नहीं रहा। मैंने अपने पेन-पेपर नीचे रखकर प्रार्थना करना शुरू कर दिया।

प्रार्थना के तुरंत बाद जो भी मेरे दिमाग में आने लगा, मैं उसे जल्दी जल्दी लिखने लगा। इस प्रकार पहले भाग से एक प्रश्न करने के बाद मैंने बाकी का पर्चा हल किया और घर भागा। घर पहुंचते ही मैंने किताब खोलकर देखा तो पाया कि जो प्रश्न मुझे नहीं आता था और जिसका जवाब मैंने परमेश्वर से पाया था वो एकदम वैसा ही था जैसा किताब में लिखा था।

बाइबल में याकूब 1:5 में लिखा है –

📖 *"पर यदि तुम में से किसी को बुद्धि की घटी हो तो परमेश्वर से माँगे, जो बिना उलाहना दिए सबको उदारता से देता है, और उसको भी दी जाएगी।"*

परमेश्वर ने अपना ये वायदा भी पूरा किया। मैं परमेश्वर की निरंतर उपस्थिति के लिए और तुरंत प्रार्थना के उत्तर के लिए उसका सदा धन्यवाद करता रहता हूँ।

रूड़की में चर्च का मिलना – अनपेक्षित जगह में प्रार्थना के उत्तर मिलना

कॉलेज की पढ़ाई के बाद, परमेश्वर ने अपनी मर्जी मेरे जीवन में पूरी की और बाकी सब द्वार बंद कर सिर्फ रूड़की का द्वार खुला रखा। मैंने भूविज्ञान (एप्लाइड जियोलॉजी) के एम. टेक. प्रोग्राम में प्रवेश ले लिया। पापा मुझे वहां छोड़ने गये थे, यह उनके लिए एक ऐसे स्वप्न के समान था जो पूरा हो गया था।

वहाँ जाने के बाद बहुत समय तक मुझे कोई चर्च नहीं मिला। मेरी गिदौन बाइबल ही मुझे हर दिन परमेश्वर के बारे में सिखाती थी और मेरा

उत्साहवर्धन करती रहती थी। मैं रोज इसमें से पढ़ता था और प्रार्थना किया करता था। मैं जयपुर फोन करके पास्टर पीटर से भी आग्रह करता था कि वो मेरे लिए एक चर्च ढूंढे।

मेरे एक सहपाठी (और बहुत अच्छे मित्र) लेखराज के साथ, जो मेरे साथ गंगा भवन (छात्रावास) में रहता था, मुझे परमेश्वर के प्रेम का सुसमाचार बांटने का मौका मिला। कभी कभी मैं उसके साथ प्रार्थना करने के लिए उसके कमरे में चला जाता था।

एक दिन जब मैं उसके कमरे में बैठा था और वो अपना कमरा साफ कर रहा था; तभी एकाएक परमेश्वर ने जैसे मुझे उस कचरे में से कुछ उठाने के लिए प्रेरित किया। आमतौर पर हम ऐसा नहीं करते पर पता नहीं क्यों मैंने तुरंत उस कचरे में से, जो वो झाड़ू से निकाल रहा था, एक मुड़ा-तुड़ा कागज़ उठा लिया। वो एक मसीही प्रचार का कागज़ था जिसमें कलीसिया का पता तथा एक आमंत्रण संदेश लिखा था। तब से लेकर जब तक हम रूड़की में रहे, हम (मैं और प्रेरणा) उसी चर्च में संगति करते रहे। पास्टर लांस का यह चर्च हमारे जीवन में एक अलग स्थान रखता है। यही वो जगह थी जहाँ प्रेरणा ने उद्धार पाया और हम साथ में विश्वास में बढ़े।

परमेश्वर ने एक ऐसी जगह पर मुझे मेरी प्रार्थना का उत्तर दिया जहाँ मैं कतई भी इसकी उम्मीद नहीं कर रहा था। इससे परमेश्वर ने सिखाया कि जब हम प्रार्थना करते हैं तो इसका जवाब पाने के लिए हमेंशा सब जगह तैयार रहना चाहिए क्योंकि परमेश्वर अनपेक्षित जगहों पर भी प्रार्थना का जवाब दे सकता है।

मेरे बैग का खोना और पाना – परमेश्वर पर विश्वास कर शांति के साथ आगे बढ़ना

यदि हम बच्चों जैसे सरल विश्वास के साथ बिना संदेह के प्रार्थना करें तो हम हरेक प्रार्थना का जवाब पा सकते हैं। परमेश्वर ने ऐसा आश्वासन बाइबल में दिया है ।

रूड़की की पढ़ाई के दौरान सर्दियों की छुट्टियों में मैंने घर जाने की योजना बनाई। जब मैं तैयारी कर रह था तो मुझे पता चला कि देहरादून में एक 3

दिन की मसीही सभा होने वाली थी। मैंने सोचा कि मैं पहले इसमें जाऊँगा और फिर सीधा जयपुर चला जाऊंगा।

वहाँ जाने का अनुभव बड़ा ही अच्छा रहा। हर दिन की शुरूआत प्रार्थना, आराधना तथा बाइबल वचन से होती थी। उसके बाद पूरे दिन में 2 या 3 प्रचार होते थे, दिन में अलग अलग गुट बनाकर कुछ आत्मिक विषयों पर विचार-विमर्श होता था। इन तीन दिनों में हम विश्वास से और वचन से लबालब भर गये थे।

सभा का समापन होने के बाद मैं दिल्ली जाने के लिए मैं देहरादून से एक बस में बैठा। दिल्ली जाने का रास्ता रूड़की से होकर गुज़रता था। बस जैसे ही रूड़की में रुकी, मैं थोड़ा तरोताज़ा होने के लिए और पानी की बोतल खरीदने के लिये नीचे उतर गया। भारी भीड़ के कारण बस तक पहुँचने में मुझे थोड़ी देर हो गई और मेरी बस छूट गई।

मैंने इस परिस्थिति को भी बड़े आराम से लिया, मैं बदहवास नहीं हुआ। बल्कि मैंने परमेश्वर का धन्यवाद किया क्योंकि मैं जानता था कि सब बातें उसके नियंत्रण में थीं। मैने विश्वास किया कि प्रभु मुझे मदद करेंगे कि मैं 'चीतल ग्रांड' (मिड-वे जहाँ बस थोड़ी देर के लिये रुकती थी) पर अपनी बस वापस पकड़ सकूँ।

थोड़ी देर के इंतज़ार के बाद मुझे एक स्थानीय बस मिली और मैं उसमें बैठ गया। यह बस रोडवेज बस की तुलना में बहुत धीरे चल रही थी, फिर भी मेरा विश्वास मुझे परमेश्वर की काबलियत पर संदेह नहीं करने दे रहा था।

बस में जो व्यक्ति मेरे पास बैठा था उसने मुझे गीत गाते देखा और समझा कि मैं बहुत खुश था। उसने मुझसे इसका कारण पूछा तो मैंने उसे परमेश्वर के प्रेम के बारे में बताया जो मुझे हरेक परिस्थिति में आनंद देता है। फिर उसने पूछा कि मैं कहाँ जा रहा था। मैंने उसे सारी बात बताई कि किस तरह मेरी बस छूट गई और मैं उसे चीतल ग्रांड पर पाने की अपेक्षा कर रहा था। उस भाई को बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि जिस बस में हम बैठे थे वो तो बहुत धीरे चल रही थी और रोडवेज बस को इससे पकड़ पाना नामुमकिन सा था। मैंने उससे कहा कि परमेश्वर के लिए कुछ भी मुश्किल नहीं है और वो बस को एक घण्टे तक भी रोके रह सकता है।

मैं चीतल ग्रांड पर इस बस से उतरकर मिडवे के बस-स्टैंड की ओर लपका जहाँ मेरी बस खड़ी थी। झट से मैं उसमें चढ़ गया और देखा कि सारे यात्री पहले से बैठे थे और ड्राईवर के पिछले आधे घण्टे से न आने के कारण भिनभिना रहे थे। मैंने अपना सामान अपनी सीट पर सुरक्षित पाया। जल्दी ही ड्राइवर भी आ गया और हम चल पड़े।

इस घटना के द्वारा भी परमेश्वर ने सिखाया कि वो हमेंशा हर स्थिति को अपने नियंत्रण में रखता है। अपने विश्वासियों पर वो करूणा करता है, हमें हर छोटी और बड़ी परिस्थिति में सिर्फ उसपर भरोसा करने की ज़रूरत है। इस बात से परमेश्वर ने मेरे विश्वास को बहुत बढ़ाया।

हमारी पहली नौकरी – अनदेखे को देखना परमेश्वर ने सिखाया

मैं और प्रेरणा दोनों सहपाठी भी थे और साथी विश्वासी भी। हमारी परमेश्वर पर निर्भरता बढ़ती जा रही थी और परमेश्वर भी हमारी प्रार्थनाओं के उत्तर देकर हमारे विश्वास को बढ़ाता जा रहा था।

हम दोनों को ही नौकरी की सख्त ज़रुरत थी ताकि अपने अपने परिवारों की ज़िम्मेदारी उठा सकें। हमने यह विनती परमेश्वर के चरणों में रख दी और हर दिन इस बात के लिए दुआ करते रहे।

पॉल योंगी चो कि एक किताब 'विश्वास की अद्भुत रेखा' पढ़ने से हमने बाइबल का प्रार्थना के विषय में एक सिद्धान्त सीखा था और इसलिए न सिर्फ हमने इस बात पर विश्वास किया कि हमें नौकरी मिल चुकी है बल्कि हमने इस बात को सबके सामने बोलना भी शुरू कर दिया।

📖 *"अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है।"*

[इब्रानियों 11:1]

मुझे लगता था कि हमारी नौकरी NIIT (इसरी इंडिया) कम्पनी में ही लगेगी। मैं कई बार ऐसा बोल भी देता था। जब हम बोलते थे कि हमें तो नौकरी मिल चुकी है तो हमारे कई मित्र और सहपाठी इस बात पर हमारा मज़ाक भी उड़ाते थे। वे तरह तरह के सवाल करते थे; कोई पूछता कि क्या

हमने कोई घूस खिलाई थी, तो कोई ये कि क्या हमारी बड़ी पहुँच थी। हमारे पास इन सब बातों का कोई जवाब नहीं था क्योंकि हम तो बस विश्वास के द्वारा ही ऐसा बोलते थे।

कई लोग हमें हतोत्साहित करने की कोशिश करते। वे कहते थे कि NIIT कम्पनी कैम्पस इंटरव्यू (साक्षात्कार) के लिए आएगी ही नहीं, और अगर आ भी गई तो भूविज्ञान के छात्रों को परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं देगी। और यह भी हो गया तौभी कक्षा के सबसे होनहार तथा उत्तम छात्रों का ही चयन करेगी। हम फिसड्डी तो नहीं थे पर अव्वल भी नहीं थे।

अन्ततः वो दिन आया जब परिसर में हो रहे इंटरव्यू के खत्म होने से एक दिन पहले NIIT आई। अपनी एक घोषणा में उन्होंने यह बता दिया कि ये भूविज्ञान के छात्रों के लिए भी खुली थी। उन्होंने फिर बताया कि वे तीन तरह की परीक्षा लेने वाले थे। हमें तीसरी परीक्षा GIS (भौगोलिक सूचना प्रणाली) के विषय में कुछ नहीं मालूम था।

हमने प्रार्थना करना शुरू कर दिया कि बाकी सभी टेस्ट में तो हम पास हो सकें पर तीसरी टेस्ट हो ही नहीं। दो परीक्षाओं के खत्म होते ही तुरंत हम पास्टर के पास गए और उनसे कहा कि हमारे लिए दुआ करें ताकि तीसरी परीक्षा न हो। उन्होंने हमें समझाया कि कम्पनी जब तैयारी के साथ आई है तो बेहतर है कि हम प्रार्थना करें कि हम उसमें पास हो जाएँ। पर हमने फिर भी कहा कि हमें इसकी परिभाषा के अलावा कुछ भी नहीं आता। पास्टर ने हमारे विश्वास को देखते हुए हर्षित मन से दुआ की कि GIS की परीक्षा न हो।

वापस आकर हमने देखा कि प्रभु की दया से हम पहली दो परीक्षाओं में पास हो गए थे। थोड़ी देर में कम्पनी के एक मैंनेजर ने आकर कहा कि समय के अभाव के कारण वे GIS की परीक्षा नही ले पाएँगे।

हमें विश्वास हो गया कि परमेश्वर हमारे साथ था।

साक्षात्कार शाम 7:30 बजे शुरू हुए। युवतियों को पहले बुलाया गया। प्रेरणा और मैं टहल टहलकर निरंतर परमेश्वर से प्रार्थना करते रहे। कई दोस्त

आकर पूछते थे कि ये पढ़ा या वो पढ़ा, और हम कह देते थे कि जो नहीं पढ़ा वो हम अब नहीं पढ़ सकते और फिर हम दुआ में लगे रहते।

प्रेरणा ने कहा कि 35-40 मिनट का साक्षात्कार दे पाना उसके लिए बहुत मुश्किल था और ये भी कि उसे जी.आई.एस. के बारे में ज्यादा मालूम भी नहीं था। हमने प्रार्थना की कि उसका इंटरव्यू 15 मिनट से ज्यादा न हो और कोई तकनीकी सवाल भी उससे न पूछा जाए। जब उसका नम्बर आया तो 15 मिनट से कम समय में वो बाहर आ गई और उसने बताया कि उससे कोई तकनीकी सवाल भी नहीं पूछा गया। हमने फिर परमेश्वर का धन्यवाद किया। उसके बाद जब वो वापस हॉस्टल जाने लगी तो मैंने उससे कहा कि मेरे लिए दुआ करती रहे।

रात में 1:30 बजे मेरा नम्बर आया। मैं 10-11 मिनट में ही वापस आ गया। मुझसे भी कोई गम्भीर तकनीकी सवाल नहीं पूछे गये। मेरे बाद में मेरे ही एक मित्र देवेन्द्र का नम्बर था जो कि 5 मिनट में ही बाहर आ गया।

कई लड़के बहुत नाराज़ हो रहे थे और कम्पनी को गालीयाँ दे रहे थे। उन्हें लग रहा था कि बाद में कम्पनी ने सिर्फ खानापूर्ति की थी, और जिन्हे वो लेना चाहते थे उन्हें पहले ही से चुन लिया था। मुझे बड़ी शान्ति के साथ चलते देख उनमें से किसी ने मुझसे पूछा कि क्या मुझे गुस्सा नहीं आ रहा था। मैंने उनसे कह दिया कि कम्पनी कम से कम 2 जनों को तो लेकर ही जाएगी, प्रेरणा और बृजेश; तो मैं गुस्सा क्यों करूँ। शायद उन्होंने सोचा कि मेरा दिमाग खराब है।

उनमें से कुछ तो हमारे विश्वास के बारे में जानते भी थे फिर भी वे आत्मिक जीवन और भौतिक जीवन के बीच सम्बंध नहीं बना पा रहे थे। यह तभी होता है जब हम धर्म की पालना तो करते हैं, उसके रीतिरिवाजों को भी मानते हैं पर परमेश्वर को अपने जीवन का अंतरंग भाग नहीं बना पाते हैं। बाइबल से हमने सीखा था कि हमें दोहरी ज़िन्दगी नहीं जीनी चाहिए बल्कि हमारा जीवन पारदर्शी और परमेश्वर को महिमा देने वाला होना चाहिए।

अगले दिन सुबह हमें परिणाम पता चले और कुल 8 लोग चुने गये थे जिनमें मैं और प्रेरणा भी थे। उसके बाद एक बार हमें साक्षात्कार के लिए

बुलाया गया। हमने दुआ की कि हमारे डिपार्टमेंट से कोई भी छांटा न जाए, और अन्ततः 6 ही लोग चुने गए जो सभी हमारे डिपार्टमेंट से ताल्लुक रखते थे।

परमेश्वर ने दुनिया की सोच से परे एक आश्चर्यकर्म हमारे जीवन में किया था। लोग कहते थे कि NIIT (इसरी इंडिया) कम्पनी नहीं आएगी, वो आई। वो कहते थे कि अर्थसाइंस डिपार्टमेंट के छात्रों को नहीं लेगी पर सभी लोग जो चुने गए वो इसी विभाग के थे। और वो कहते थे कि बृजेश और प्रेरणा को नहीं लेगी पर हम दोनों को भी लिया।

बाद में सूचना तकनीकी (IT) में काम करने वाली कई कम्पनियों ने चयनित छात्रों को खेद-पत्र भेज दिए। हमारे साथ के कई लोग भी चिन्तित हुए पर हमने कहा कि परमेश्वर अपनी आशीषों में दुख नहीं मिलाता और ये नौकरी परमेश्वर की आशीष ही थी। सो हमने उन्हें आश्वस्त किया कि परमेश्वर हमें कभी निराश नहीं करता इसलिए कम्पनी खेद-पत्र नहीं भेजेगी। और ऐसा ही हुआ और अन्ततः अपनी पढ़ाई खत्म करने के बाद सितम्बर 2001 में हम सभी ने दिल्ली में नौकरी शुरु की।

इस बात से परमेश्वर ने हमें सिखाया कि हमें अब्राहम कि तरह अनदेखे को विश्वास से देखना और अनगिनत को विश्वास से गिनना सीखना चाहिए। परमेश्वर का धन्यवाद हो।

हेमा की शादी –
निराशा में परमेश्वर से आशा

मैं निरंतर अपने पापा के स्वभाव में परिवर्तन और खास तौर पर उनकी शराब पीने की आदत छूट जाने के लिए रोज प्रार्थना किया करता था। हमारा परिवार उनकी इस आदत के कारण बुरी तरह टूट चुका था।

उन्हीं दिनों में पापा ने हेमा की शादी के लिए एक अच्छा नवयुवक देखा। उनका नाम संजीव है। हेमा ने शादी से पहले उन्हें अपने मसीही विश्वास के बारे में बताया। समय के साथ उन्होंने स्वयं मसीह के प्रेम को चखा और उस पर विश्वास किया। अपने आप में वो काफी नम्र और शांत स्वभाव के पुरूष हैं।

मेरी नज़र में संजीव, हेमा के लिए एकदम सही जोड़ थे। और समय के बीतने के साथ में इस बात से अपने आप में और ज़्यादा सहमत होता चला जा रहा हूँ।

संजीव के परिवार से कुछ गलतफहमी हो जाने के कारण पापा इस सगाई को तोड़ देना चाहते थे। मैं घर से बहुत दूर देहरादून में था और घर पर स्थिति खराब ही थी जैसी मैं छोड़कर गया था। पापा के व्यवहार की बातें सुनकर बहुत दुःखी होता था। कभी कभी मैं अपनी लाचारी पर बहुत रोता था पर एक अच्छी साथी विश्वासी और एक दोस्त की तरह प्रेरणा हमेंशा मुझे ढाढ़स बंधाती थी और विश्वास से मेरे साथ प्रार्थना भी करती थी।

परमेश्वर ने मुझे बुद्धि दी ताकि मैं अपना परियोजना कार्य जल्द पूरा कर सकूँ। मेरे गाइड थोड़ा व्यस्त भी थे फिर भी परमेश्वर की कृपा से मैं अपना 6 महीने का काम 5 महीने में ही खत्म कर घर चला गया कि किसी प्रकार शादी के काम को करा सकूँ।

परमेश्वर ने निराशा के इस समय में भी हमें आशा दी।

हम लोग इस विषय के लिए प्रार्थना कर रहे थे। परमेश्वर ने बड़ी आश्चर्यजनक रीति से इस प्रार्थना का उत्तर दिया। पापा के बहुत पुराने और अंतरंग मित्र जो कि प्रशासनिक सेवा में कार्यरत हैं, समाज में ऊँचा स्थान रखते हैं और संजीव के परिवार से भी परिचित थे, उन्होंने इस बात में हस्तक्षेप किया। उन्होंने कहा कि पापा को इस विवाह को सम्पन्न कराना ही होगा।

पापा यूँ तो अब इस शादी में ज्यादा रूचि नहीं ले रहे थे पर समाज, परिवार और अपने मित्र के दबाव में वो तैयार हो गए थे। परमेश्वर ने बड़ी दया दिखाकर इस विवाह संस्कार को सफल करा दिया। कदम कदम पर परेशानियां आई थीं पर प्रभु यीशु हमारे साथ थे और हमारी हरेक समस्या का निवारण करते जा रहे थे।

आज हेमा शादीशुदा है और उसका एक बेटा (हार्दिक) भी है। संजीव और हेमा, दोनों बपतिस्मा पाए हुए विश्वासी हैं और अपना जीवन परमेश्वर की दया में बिता रहे हैं।

हमारी दूसरी नौकरी –
परमेश्वर के वायदों पर खड़े रहना

परमेश्वर ने बड़ी करूणा दिखाकर हमें (मैं और प्रेरणा) एक ही कम्पनी में पहली नौकरी दी थी और सच में परमेश्वर का हाथ निरंतर हम पर बना रहा था। हम अपने काम और सहकर्मियों के लिए भी दुआ करते थे। वैसे हमारी तरह कई कर्मचारी बहुत मेहनत करते थे परंतु परमेश्वर ने हमारे अधिकारियों के मन में हमारे लिए ऊँचा स्थान बनाया। हमने अपने पेशेवर जीवन में सफलता पाई।

काम के सिलसिले में अप्रैल 2004 में मुझे अमरीका भेजा गया और कई अच्छे प्रोजेक्ट करने का मौका मुझे मिला। अमरीका जाने से पहले मेरा पासपोर्ट खो गया था और जब बहुत ढूंढने पर भी नहीं मिला तो मैं निराश हो चला था। पता नहीं क्यों मैंने प्रार्थना नहीं की, पर प्रेरणा ने प्रार्थना कर उसे ढूंढा और उसी जगह से, जहाँ हम कई बार ढूंढ चुके थे, वो मेरा पासपोर्ट लेकर आ गई। परमेश्वर ने सिखाया कि जीवन की भागदौड़ में और आगे बढ़ने के समय में भी हमें परमेश्वर को नहीं भूल जाना चाहिए।

कम्पनी में मेरा काम सराहनीय रहा और इस के बाद परमेश्वर की दया से मुझे हमारी कम्पनी का बड़ा प्रतिष्ठित पुरस्कार दिया गया। इसी के साथ कम्पनी से मेरी आशाएँ बढ़ गईं थी और मैं अपेक्षा करने लगा था कि नये वित्त वर्ष में मुझे तनख्वाह में अच्छी बढ़ोत्तरी मिलेगी, पर ऐसा नहीं हुआ। मैं समझ गया कि अब समय आ गया कि हमें आगे बढ़ना चाहिए। हमने परमेश्वर से नई नौकरी के लिए प्रार्थना करना शुरू कर दिया।

इसी के साथ यह बताना भी ज़रूरी है कि 2003 में मेरी और प्रेरणा की शादी हो जाने के बाद से, अपने कर्जों को देखते हुए, प्रेरणा ने इन्हीं दिनों में प्रभु से प्रार्थना करना शुरू किया था कि परमेश्वर कैसे भी अपने स्वर्गीय भण्डार से हमारी ज़रूरतें इस प्रकार पूरी करें कि हमारे सारे कर्ज खत्म हो जाएँ।

प्रार्थना करने से पहले भी मैं अपनी अर्जी कई कम्पनियों में भेजता रहता था परंतु वो कभी चुनी ही नहीं जाती थी, पर प्रार्थना करने के बाद कई जगहों से मुझे साक्षात्कार का निमंत्रण मिला। शारजाह की कम्पनी जिसटेक

(GISTEC) ने मेरा साक्षात्कार टेलीफोन पर ही ले लिया और कुछ दिनों में मुझे सूचित किया कि वे मुझे नौकरी की पेशकश करना चाहते थे।

मैं नई नौकरी के लिए शारजाह जाने के बारे में सोचने लगा। मैंने योजना बनाई कि पहले मैं जाऊँगा और फिर सब ठीक करने के बाद प्रेरणा को भी बुला लूँगा, लेकिन प्रेरणा इस बात से खुश नहीं थी। वो चाहती थी कि हम साथ ही में शारजाह जाएँ। हम हमेंशा साथ रहे थे और एकाएक ऐसा निर्णय लेना सच में कठिन था।

हमारे विश्वासी भाई और हमारे नज़दीकी मित्र राजकुमार ने भी कहा कि बाइबल में वायदा है कि पति-पत्नी साथ रहेंगे।

📖 *"पर सृष्टि के आरम्भ से परमेश्वर ने नर और नारी करके उनको बनाया है। इस कारण मनुष्य अपने माता-पिता से अलग होकर अपनी पत्नी के साथ रहेगा, और वे दोनों एक तन होंगे; इसलिये वे अब दो नहीं पर एक तन हैं। इसलिये जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है उसे मनुष्य अलग न करे।"*

[मरकुस 10:6-9]

मैं भी इस बात को जानता था पर विश्वास का कदम नहीं उठा पा रहा था। DBF में शनिवार को होने वाली जवानों की सभा में हमने इस बारे में प्रार्थना की। शांति-मार्ग के नाम से जारी राजकुमार भाई और हमारी सेवा में हर इतवार की शाम एक प्रार्थना सभा होती थी जिसमें सभी की ज़रूरतों के लिए दुआ की जाती थी। उसमें हम सभी ने इस विषय पर और प्रार्थना की और हम ये विश्वास करते थे कि (जैसा परमेश्वर के वचन में लिखा है) जहाँ दो या तीन धरती पर एक मन होकर प्रार्थना करते हैं, परमेश्वर स्वर्ग से सुनकर उसका जवाब देता है।

विश्वास का कदम उठाकर मैंने कम्पनी को एक ई-मेल लिखा जिसमें मैंने बताया कि मेरी पत्नी भी बराबर की पढ़ी-लिखी और अनुभवी थी। मैंने पूछा कि क्या वे उसके लिए भी एक नौकरी दे सकते थे। मुझे जवाब मिला कि कम्पनी की नीति (पॉलिसी) के अनुसार वे पति-पत्नी को साथ में नौकरी नहीं दे सकते थे। फिर मैंने इस बाबत उन्हें कोई मेल नहीं लिखा।

हम लगातार प्रार्थना में लगे रहे और प्रेरणा खासतौर पर बड़े बोझ के साथ इस विषय में प्रार्थना कर रही थी। 10-15 दिन बाद मुझे एक ई-मेल मिला जिसमें कम्पनी ने प्रेरणा को नौकरी की पेशकश की थी। प्रभु ने हमारे लिए कम्पनी की पॉलिसी भी बदल दी।
हमने इस प्रस्ताव को स्वीकार किया और जुलाई 2005 में साथ ही शारजाह आए। अभी भी इस कम्पनी में हम ही एकमात्र जोड़ा है जो साथ काम कर रहा है। परमेश्वर का अनुग्रह निरंतर हमारे साथ बना रहता है। प्रभु की स्तुति हो।

शारजाह जाने के रास्ते में –
भरोसा रखना और आज्ञाकारी रहना

जिन्दगी में हमेंशा हमारे पास चुनाव करने का समय आता रहता है। क्या सोचें और क्या नहीं, क्या बोलें और क्या नहीं, क्या करें और क्या नहीं, क्या देखें और क्या नहीं, कहाँ जाएँ और कहाँ नहीं, कैसे प्रतिक्रिया करें और कैसे नहीं आदि।

जब हम जीवित परमेश्वर को जान लेते हैं और उसमें भरोसा रखना शुरू करते हैं तो हमें उसका आज्ञाकारी भी बने रहना चाहिए। हम दिनभर में बहुत से निर्णय लेते हैं। हम उसमें परमेश्वर की आज्ञा का पालन कर सकते हैं या उसका तिरस्कार कर सकते हैं। हम जो भी निर्णय लेते हैं वो परमेश्वर को पूरी तरह मालूम रहता है।

जब हम शारजाह जाने की तैयारी कर रहे थे तो मेरा एकमात्र विदेश-यात्रा का अनुभव वही था जो मैंने थाईलैंड तथा जापान होते हुए अमरीका तक किया था। अपने उसी अनुभव के अनुसार किन किन चीजों की ज़रूरत हमें पड़ सकती है उनका अनुमान लगाकर बहुत सारा सामान हमने जमा लिया। हमारे सामान का कुल वजन 94 किलोग्रम हो गया जबकि हमें सिर्फ 50 किलो ले जाने की ही अनुमति थी।

हमने अपने सामान के लिए भी कुछ इस तरह से प्रार्थना की –

"हे प्रभु, आप जिस देश में हमें ले जा रहे हैं उसके बारे में हमें कुछ भी नहीं मालूम। हम वहाँ किसी को जानते भी नहीं हैं। हम सिर्फ आप पर भरोसा

करके वहाँ जा रहे हैं। हमने बहुत सामान ले लिया है, प्रभु हम प्रार्थना करते हैं कि सब अधिकारियों को अपने अधीन कर लीजिए और हमें और हमारे सामान को बिना किसी असुविधा के सुरक्षित शारजाह पहुँचने में हमारी सहायता कीजिये। आमीन"

हम लोग जहाँ जरूरी हो वहाँ पैसा जमा करने के लिए भी तैयार थे। जब हम अपना बोर्डिंग पास लेने पहुंचे तो वहाँ बैठे कर्मचारी ने कहा कि हमारे सामान का वज़न बहुत ज़्यादा है और हमें करीब करीब 10,000 रुपये जमा करने पड़ेंगे। यह रकम बहुत बड़ी थी, तौभी हम यह देने के लिए तैयार थे। हम लाइन में खड़े हुए मन ही मन प्रार्थना करते रहे।

उसने हमें एक तरफ खड़े होकर प्रतीक्षा करने को कहा। 10 मिनट बाद उसने पूछा कि क्या हम 5000 रुपये दे सकते थे। हमें बड़ा आश्चर्य हुआ पर हमने कहा, "हाँ, पर हमें रसीद चाहिए"। उसने फिर हमें थोड़ी देर खड़े रखा और फिर पूछा कि क्या 2000 रुपये दे सकते थे और हमने फिर वही जवाब दिया।

आखिरकार उसने बिना कुछ पैसे लिये हमें बोर्डिंग पास दे दिया और अन्दर जाने को कहा। हमें नहीं मालूम ये कैसे हुआ पर हम सिर्फ ये जानते हैं कि हमने परमेश्वर के आज्ञाकारी रहकर रिश्वत न देने का निर्णय लिया और प्रभु ने हमारी सहायता की।

जैसे हम आगे बढ़े, एक कस्टम अधिकारी ने हमें रोक लिया और हमारा सामान पहचानने को कहा। हमारे सामान को पहचानने के बाद उसने भी कहा की हमारा सामान काफ़ी भारी था और पूछा कि हमने इसके लिए कितना पैसा चुकाया। हमने साफ साफ बता दिया कि हमने कुछ भी नहीं दिया। इतने पर उसका एक साथी आकर हमें समझाने लगा कि हम उसे कुछ पैसा दे दें अन्यथा वो हमारे सामान को रोक सकता था या भारी जुर्माना लगा सकता था।

हमने बताया कि हम तो पहले भी कानूनन पैसे देने को तैयार थे और अब भी। पिछले कर्मचारी ने हमसे कुछ भुगतान नही लिया यह हमारी गलती नहीं थी। फिर भी वह हमें डराने की कोशिश करता रहा। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि हम क्या करें, तभी प्रभु ने मेरे मन में कुछ बात डाली।

मेरी बाइबल मेरे हाथ में ही थी और मैंने कहा, “भाई, हम तो प्रभु यीशु के विश्वासी हैं और सेवक हैं। प्रभु का वचन यह बाइबल कहती है कि वो सदा हमारे साथ रहता है, तो बताओ कि हम उसके सामने यहाँ आपको रिश्वत कैसे दें?” और इसके बाद हमने उसे बताया और बाइबल से परमेश्वर के वायदे दिखाए कि कैसे परमेश्वर अपने लोगों कि सारी ज़रूरतें पूरा करता है और उनके साथ रहता है और कैसे वो हमारे पापों की क्षमा कर हमें नया जीवन देता है।

तुरंत उस कर्मचारी का मन बदल गया और वो कहने लगा कि मैं भी ऐसा चोरी का काम नहीं करना चाहता। उसने विनती भी की कि हम उसके लिए नई नौकरी के लिए प्रार्थना करें। उसने हमें आश्वासन दिया कि हमारे सामान में कोई दिक्कत नहीं आएगी और हम निश्चिंत होकर जाएँ। हमने उसके लिए दुआ की और हवाईजहाज में चढ़ गए।

हम अपने साज़ो-सामान के साथ सुरक्षित शारजाह पहुँच गए और हमें किसी तरह का अतिरिक्त खर्चा भी नहीं करना पड़ा। यह हमें अज़ीब लग सकता है परंतु परमेश्वर ऐसे कई काम अपने लोगों के साथ करता है।

हमने हरेक परिस्थिति में उस पर भरोसा करना और उसके आज्ञाकारी बने रहना सीखा। हम समझते हैं कि हर दिन के जीवन में हमें परमेश्वर की कितनी ज़रूरत है। हमारे अनुभव के आधार पर मैं आपको आश्वस्त करना चाहता हूँ कि यदि आप परमेश्वर का भय मानें और हर परिस्थिति में उसकी इच्छा के अनुसार निर्णय लें तो परमेश्वर आपको अनगिनत आशीर्षे देगा।

***

मैं आज भी जब अपना जीवन देखता हूँ तो मैं पाता हूँ कि अपनी सामर्थ्य में मैं आज भी पतित इंसान ही हूँ, और अपने तरीके से यदि मैं मोक्ष की प्राप्ति का प्रयास करता तो ज़रूर नाश ही हो जाता। मैं तो यह भी नहीं कह सकता कि मैं बहुत अच्छा इंसान हूँ, या मैं पवित्र हूँ, पर हाँ, मैं मेरे परमेश्वर पर गर्व ज़रूर करता हूँ कि उसने अपनी दया के कारण मुझ जैसे पतित मनुष्य को पाप के कीचड़ में से निकालकर चट्टान पर ख़डा कर दिया। मेरे पाप के नंगेपन को दूर करने के लिए अपनी जान तक न्यैछावर कर दी कि अपनी पवित्रता मुझको ओढ़ाए और उसने ही मुझे नया मनुष्य बनाया है।

आज मैं जहाँ तक हो सके, रोज़ सुबह और शाम परमेश्वर के साथ समय बिताता हूँ। मैं उसके प्रेम से अभिभूत हो जाता हूँ क्योंकि हर दिन उसकी करूणा मुझपर नई होती है। वो मेरे पापों को क्षमा कर मुझे पवित्र जीवन जीने की प्रेरणा देता है और जब मैं एक बच्चे की तरह गिर जाता हूँ तो भी वो मुझे पिता की तरह उठाता है और अपनी अंगुली पकड़कर मुझे चलना सिखाता है। वो मेरी प्रार्थनाओं का उत्तर करता है।

मैं अभी भी सीख ही रहा हूँ और प्रभु यीशु के बिना मैं कुछ भी नहीं हूँ। मैं अपने आप से कुछ भी नहीं करता परंतु वो जो अब मेरे अंदर रहता है मुझे बुद्धि और सामर्थ देता है कि मैं रोजाना का जीवन जी सकूँ और उसकी महिमा करूँ।

हमारे जीवन में परमेश्वर की विश्वासयोग्यता की और भी बहुत सी गवाहियां हैं पर मैं सबका उल्लेख नहीं करना चाहता, फिर भी आपको उत्साहित करना चाहता हूँ कि यदि आप भी विश्वास करें और प्रार्थना करें तो ऐसा या इससे भी अच्छा जीवन आपका हो सकता है।

9 परमेश्वर की विश्वासयोग्यता

परमेश्वर विश्वासयोग्य और न्यायी है। वो किसी के साथ अन्याय नहीं करता है बल्कि वो तो इस संसार के दबे कुचलों के उत्थान के लिए मानव रूप लेकर दुनिया में आया ताकि उनका उद्धार करे। उसके वचन बड़े प्रभावशाली हैं यहाँ तक कि बाइबल में लिखा है कि स्वर्ग और पृथ्वी तो टल सकते हैं पर परमेश्वर के वचन की एक भी बिंदु या मात्रा पूरे हुए बिना ना टलेगी।

वो अपने वायदों पर सच्चा परमेश्वर है। हम अपने अनिश्चित भविष्य के प्रति भी निश्चिंत होकर अपना जीवन जी सकते हैं क्योंकि परमेश्वर जो आदि से अंत को जानता है वो हमारे साथ है।

पिछले पाठ में दी गई सारी बातें परमेश्वर की विश्वासयोग्यता की गवाह हैं। फिर भी मैं कुछ और गवाहियां यहाँ देना चाहता हूँ जिससे आप जान सकें कि परमेश्वर विश्वासयोग्य है और समय उसके लिए कोई कारक नहीं है। विश्वास कीजिए, उसके काम करने का समय एकदम सटीक होता है।

"वह अपने वायदों पर खरा परमेश्वर है जो कि उसने अपने वचन में हमसे किये हैं। वह हमसे ऐसी शांति का वायदा करता है जो इस दुनिया में नहीं मिलती। वह अपने वायदे पूरा करता है। वो विश्वासयोग्य परमेश्वर है।"

वो प्रार्थना का उत्तर तुरंत दे सकता है या उसमें सालों लगा दे, फिर भी वो जो भी करता है, वो सिद्ध होता है। हम उस पर हरेक परिस्थिति के लिए विश्वास कर सकते हैं।

***

मेरे घराने का उद्धार (मोक्ष)

सन 1998 में, परमेश्वर ने प्रेरितों के काम 16:31 से मुझे एक वायदा किया -

📖 *"...प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा।"*

मैंने परमेश्वर पर विश्वास किया था और मैं उसकी विश्वासयोग्यता को और प्रार्थनाओं के उत्तर देने की क्षमता को जानता था, इसलिए मेरे पास उसपर संदेह करने के लिए कुछ भी नहीं था। मैंने परमेश्वर के इस वायदे को पकड़ लिया और रोज़ इस बारे में दुआ करने लगा।

मैंने 1998 में प्रभु यीशु पर विश्वास किया था और अपना जीवन उनके हाथों में सौंपकर उनका अनुसरण करने लगा था। जब मैं अपने घराने (परिवार) के उद्धार के लिए प्रार्थना करने लगा तो एक एक कर परमेश्वर ने मेरे परिवारजनों को बचाया और उन्हें विश्वास में लिया। मेरे तुरंत बाद ही 1998 में मेरी बहन हेमा ने प्रभु को अपना जीवन दिया।

पंकज, मेरे छोटा भाई पापा के स्वभाव से तंग आकर घर से भागकर सन 2000 में मेरे पास रूड़की आ गया था। प्रेरणा और मैंने उसे परमेश्वर के प्रेम और कृपा के बारे में बताया। हम तीनों साथ में प्रार्थना करने लगे। उसने परमेश्वर की प्रार्थना के उत्तर देने की सामर्थ्य को देखा और विश्वास किया। मैंने उसे बाइबल से दिखाया कि परमेश्वर माफ़ करने के बारे में क्या कहता है और सब बातों को समझकर वो वापस पापा के पास घर चला गया। कुछ बातों में उसका विश्वास ढीला तो पड़ा पर सन 2001 में वो जब से दिल्ली में मेरे साथ रहने लगा, प्रेरणा के समझाने पर और हमारी संगति से वो वापस प्रभु के नज़दीक आ गया।

सन 2001 से मम्मी ने भी थोड़ा थोड़ा विश्वास करना शुरू किया। उनका विश्वास कुछ ढुलमुल सा था, थोड़ा राधास्वामी मत में और थोड़ा प्रभु यीशु में। वो अपनी परिस्थितियों से बौखलाई हुई थी और उन्हें शान्त करने के लिए सब प्रयास करती रहती थी। काफी लम्बे समय तक वो इस असमंजस की स्थिति में रही कि वो किस पर विश्वास करे और किस पर नहीं।

एक प्रश्न उन्हें सालता रहा कि वो कैसे अपने पुराने विश्वास को त्याग कर इस नए मसीही विश्वास में आगे बढ़े। मैंने उन्हें चेताते हुए कहा, "मम्मी, आप दो नावों की सवारी करो यह बात ठीक नहीं है। किसी भी सूरत में ये

दोनों बातें एक नहीं है मतलब दोनों नावें एक ही तरफ, एक ही रास्ते से नहीं जा रही हैं। दोनों नावों में एक एक पैर रखने पर, नाव कोई सी भी ठीक हो, पर ऐसा सवार तो पानी में ही जाता है।" मेरे अनुभव को पहचानते हुए और मेरी बात को समझकर उन्होंने ठीक निर्णय ले लिया। उन्होंने समझ लिया कि रास्ते तो बहुत लोग बताते हैं पर सभी सही नहीं हो सकते। परमेश्वर कभी भी दो एकदम भिन्न तथा विरोधाभासी तरीकों से अपने आपको दो मतों में प्रकट नहीं करेगा। यह बात सच है क्योंकि हमारा परमेश्वर संशय और दुविधा में डालने वाला नहीं पर सही मार्ग दिखाने वाला सच्चा, जीवित तथा सिद्ध परमेश्वर है।

मैं प्रभु का धन्यवाद करता हूँ कि मम्मी ने पुरानी सारी बातें छोड़कर प्रभु यीशु को अपना उद्धारकर्ता स्वीकार किया और अपना जीवन प्रभु को दे दिया।

इसके बाद सिर्फ पापा ही बचे थे जिनका जीवन परिवर्तन होना अभी बाकी था। शुरू में अकेले मैं ही अपने परिवार के लिए दुआ किया करता था लेकिन धीरे धीरे परमेश्वर ने मेरे परिवार को बचाया और प्रार्थना में मेरे साथी बढ़ते चले गए और परिवार बदलता चला गया। अब हम सब पापा के मोक्ष के लिए प्रार्थना करते थे।

2003 में मेरी शादी प्रेरणा के साथ हुई जो बहुत अच्छी विश्वासी थी और प्रार्थनाओं में मेरी साथी रही थी।

सन 2004 से पहले तक, मेरे घराने में कई लोगों का उद्धार हो गया। इसी साल में दादाजी हमारे साथ कुछ दिन रहने के लिए आए। उन्होंने हमारा परमेश्वर के लिए प्रेम देखा तो बहुत से सवाल किए जिनका जवाब उनको अपने करीब 40 साल के राधास्वामी सत्संग में जाने से नहीं मिला था। सारे जवाब पाने के बाद, अपने पुराने विचार छोड़कर उन्होंने अपना जीवन प्रभु यीशु को दे दिया।

मेरे और प्रेरणा के कई चचेरे और मौसेरे भाई-बहनों ने, हमारे जीवन को देखकर और हमसे प्रभु के बारे में जानकर, प्रभु यीशु में विश्वास किया। प्रेरणा के ननिहाल में भी कई लोगों ने प्रभु के बारे में सुना और प्रार्थना करने लगे और उसके 72 वर्षीय नाना ने अपना जीवन प्रभु को दे दिया।

हमें आशा है कि एक दिन हम अपने संपूर्ण घराने को प्रभु के विश्वास में देखेंगे ताकि हम सब स्वर्ग के राज्य में प्रवेश कर सकें और अनंत जीवन परमेश्वर के साथ बिताएँ।

***

पापा का उद्धार

पापा के गर्म स्वभाव और शराब की आदत के बावजूद प्रभु ने हमें उनसे प्यार करते रहने के लिए प्रेरित किया। हम जान चुके थे कि उनका ये स्वभाव उनके अपने कारण से नहीं बल्कि अंधकार की उन शक्तियों के कारण था जो उनका और हमारे परिवार का नाश करना चाहती थी। मुझे पूरा यकीन था कि परमेश्वर पापा को अपने समय में छुड़ाएगा क्योंकि शैतान और उसकी शक्तियों का सिर प्रभु यीशु ने 2000 साल पहले ही कुचल दिया था।

मैं किसी भी तरह से पापा को नीचा दिखाने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ, पर जो भी मैंने लिखा है वो सब तथ्य हैं। जो भी हो, मेरे शांति तथा सत्य की खोज के पीछे हमारे घर कि परिस्थितियां ही मुख्य कारण रही, इसलिए मैं हरेक बात के लिए प्रभु का धन्यवाद करता हूँ।

बहुत से लोग इस दुनिया में ईश्वर को नहीं पाते क्योंकि उनके पास दुनियावी सभी ऐशो-आराम के साधन हैं और उनके जीवन में शायद परेशानियां नहीं है। यह भी कई बार शैतान की एक चाल होती है ताकि इंसान अपनी खुशियों में ही ऐसा डूबा रहे कि ईश्वर की ओर उसका ध्यान ही न जाए।

प्रिय पाठक, मैं आपको उत्साहित करना चाहता हूँ कि आप अपने आप को जांच लें। आपके परिजन भी यदि अपनी गवाही लिखें तो आपके बारे मे क्या लिखेंगे? क्या वो आपके स्नेह और प्रेम के बारे में लिखेंगे या उन दुःखों का स्मरण करेंगे जिसमें वे आपके कारण होकर गुजरे?

हम लोग परमेश्वर के वायदे के अनुसार निरंतर अपने घराने के लिए, मुख्यतया पापा के लिए, प्रेरणा की मम्मी और भाइयों के लिए, प्रार्थना कर रहे थे। हमारा विश्वास था कि एक दिन उनका भी उद्धार हो जाएगा। हालांकि

शैतान भी शांत तो नहीं बैठता था और अलग अलग परिस्थितियों से हमें हतोत्साहित करने की कोशिश करता रहता था, लेकिन हमारा विश्वास कम होने के बजाय बढ़ता ही गया। हमें जितनी ज्यादा निराशा आती थी, हम उतना ही प्रभु की कृपा में और विश्वास करते थे।

हमारे रिश्तेदारों ने, पापा के दोस्तों ने, मम्मी ने, हम बच्चों ने, सभी ने पापा को शराब पीने की आदत को छोड़ने के लिए कई बार समझाया पर वो किसी की नहीं सुनते थे। मुझे ऐसा लगता है जैसे कि वो इस बात में अपने आप को असहाय महसूस करते थे और कोई शक्ति उन्हें लगातार इस आदत में खींचती जा रही थी।

शराब पीने की अपनी आदत के कारण उनका स्वभाव और स्वास्थ्य लगातार बिगड़ता जा रहा था। मम्मी इन परिस्थितियों को झेलने में असहज महसूस करने लगी और हमारे पास दिल्ली आ गई।

पापा शराब के ज़हर में घुलते जा रहे थे। डॉक्टरों ने उन्हें मधुमेह (डायबिटीज) होने के बारे में बताया और शराब छोड़ने के लिए कहा। फिर भी मम्मी के जाने के बाद एक महीने तक बिना कुछ ठीक से खाए-पीए वो लगातार शराब पीते रहे जिसके कारण उनकी हालत बहुत बिगड़ गई। उन्हें कई बार अस्पताल में भर्ती किया गया पर ठीक होकर वापस आते ही वो फिर पीना शुरू कर देते थे।

मार्च 2005 में मुझे खबर मिली की उनकी तबियत बहुत खराब थी। मैं जानता था कि वो न तो मेरी सुनेंगे और न ही मम्मी के बिना मुझे वहाँ स्वीकार करेंगे। मम्मी को ऐसी हालत में अकेले भेजना बहुत मुश्किल था। मैं बड़ी अजीब सी स्थिति में था और कुछ सोच नहीं पा रहा था।

उद्धार पाने के बाद से ही मैं, परमेश्वर के प्रेम की जीवित गवाही अपने जीवन से देता रहा और मैंने कभी भी पापा के लिए कड़वाहट नहीं पाली थी तौभी जयपुर जाने की मेरी इच्छा नहीं हो रही थी। उस रात न तो मैं प्रार्थना-सभा में गया और न ही बाइबल स्टडी में। मैं बुरी तरह बेचैन था। मैं घुटनों पर आ गया और प्रभु से प्रार्थना करने लगा ताकि परमेश्वर मेरी अगुवाई करें। परमेश्वर ने तुरंत मुझसे याकूब 2:26 में से बात की -

📖 *"अतः जैसे देह आत्मा बिना मरी हुई है, वैसा ही विश्वास भी कर्म बिना मरा हुआ है।"*

मैं समझ गया कि परमेश्वर कह रहे थे कि मैं जयपुर जाऊं। मैंने कहा, "हाँ प्रभु, यदि आपकी यही मर्जी है तो मैं जाऊँगा।" मैंने और कुछ जानने की भी कोशिश की पर परमेश्वर ने और कुछ भी नहीं बोला। मैंने तुरंत जयपुर जाने का इरादा बना लिया। पवित्र आत्मा के चलाए मैं अगले दिन निकल पड़ा।

रास्तेभर मुझे अजीब अजीब से ख्याल आते रहे और मैं शैतान को डांटता रहा और प्रार्थना करता रहा। इसी यात्रा के दौरान परमेश्वर ने मुझे एक युवती को जो दिल्ली में प्रशासनिक अधिकारी के तौर पर काम करती थी, को सुसमाचार सुनाने का मौका दिया। यदि हम उसकी मर्जी पर चलें तो कहीं भी वो हमें अपनी इच्छा पूरी करने के लिए और अपनी महिमा के लिए इस्तेमाल करता है।

मैं रात में 10 बजे घर पहुंचा। घर के सारे दरवाज़े खुले हुए थे और अंदर वाले कमरे के अलावा पूरा घर अंधेरे में डूबा हुआ था। सिर्फ उस कमरे में जहां पापा सो रहे थे वहां की बत्ती जल रही थी। वो सच में बहुत ही कमजोर दिख रहे थे, मुझे उनकी हालत पर रोना आ गया। मैं आंसू बहाते हुए उनके पैर दबाने लगा और प्रभु से उनके जीवन परिवर्तन के लिए प्रार्थना करने लगा।

एकाएक वो जाग गये और मुझसे मेरे रोने का कारण पूछने लगे। उनकी बात का जवाब देने के बजाय मैं जोर जोर से रोने लगा। परमेश्वर के पवित्र आत्मा ने मुझे बोलने के लिए शब्द दिए। मैंने बड़े ही सरल शब्दों में परमेश्वर पर विश्वास करने की तथा शराब छोड़ देने की विनती की। पवित्र आत्मा ने उनको छू लिया और उसी समय उन्होंने शराब छोड़ देने का निर्णय लिया।

मुझे तो इस बात पर यकीन ही नहीं हो रहा था क्योंकि हम हज़ारों बार ये विनती उनसे कर चुके थे वो कभी हमारी बात नहीं मानते थे। पर मैं समझ गया कि परमेश्वर ने उनके जीवन में काम किया था।

उनकी हालत बहुत ही खराब दिख रही थी, वो अपने आप पानी का गिलास भी उठाने की स्थिति में नहीं थे, उनके हाथ बुरी तरह कांप रहे थे। उनको शरीर में बहुत दर्द भी हो रहा था। पापा को अपनी इस परेशानी के समय में अपना भूला हुआ राधास्वामी विश्वास याद आया। उन्होंने मुझसे सत्संग की सीडी (CD) चलाने के लिए बोला। मैंने सीडी चला दी और गौर से उसे सुनते हुए पापा के पैर दबाने लगा।

प्रवचन खत्म होने के बाद मैंने अपना निष्कर्ष उनको दिखाया। इस प्रवचन में 90 बार गुरू, 50 के लगभग भजन, 8 के करीब सचखण्ड (स्वर्गीय भवन), और सिर्फ 3-4 बार सतगुरू अथवा मालिक शब्द आया। मेरे इतने सूक्ष्मता से किये विचार से उनके आश्चर्यमिश्रित खुशी हुई क्योंकि उनकी स्वयं की भी ऐसी ही आदत थी।

मैंने उन्हें बताया कि इस मत में गुरू पर सबसे ज्यादा ज़ोर दिया गया है और मालिक पर सबसे कम, जबकि हम सिर्फ अपने प्रभु, अपने परमात्मा से ही सम्बंध बनाने की बातें करते रहते हैं। मेरे इस कथन से वो चकित जरूर हुए।
पापा को लगने लगा था कि वो अब ज़्यादा समय जीवित नहीं रहने वाले थे इसलिये वो मम्मी से मिलने के लिये बेताब थे। मैंने दिल्ली में राजकुमार भाई को फोन किया और पंकज के साथ अपनी कार से जयपुर आने के लिए कहा ताकि पापा को दिल्ली ले जा सकें। वो अगले दिन सुबह जयपुर पहुँच गए। पापा बार बार यही कह रहे थे कि उनका अंत समय आ गया था पर राजकुमार भाई ने उनसे कहा कि यदि वो प्रभु यीशु पर विश्वास करें तो अगले 10 दिनों में वो अपने पैरों पर फिर चल सकते थे। पापा को इस बात का आश्चर्य हो रहा था कि सिर्फ मेरे एक फोन पर मेरे मित्र दिल्ली से जयपुर आ गए। पहली बार उन्होंने मसीही प्रेम देखा था।

दिल्ली पहुँचने के बाद पापा का इलाज शुरू कराया गया। उनका शूगर लेवल बहुत ऊँचा चला गया था और शराब एकाएक बंद कर देने के कारण उनको बहुत बेचैनी भी हो रही थी। वो 2-3 दिन तक सो नहीं सके और बहुत बेचैन होकर उन्होंने मुझे नींद की दवाई लाने के लिए कहा। बहुत ढूंढने पर भी कोई हमें बिना डॉक्टर की सलाह के दवा देने को तैयार नहीं था। उनकी छटपटाहट देख उस दिन हमने मिलकर उनके लिए प्रार्थना की और उस रात

उनको बहुत अच्छी नींद आई।

अगले दिन पहली बार उन्होंने खुद स्वीकार किया कि प्रार्थना में शक्ति तो ज़रूर होती है। अब उनको मसीही विश्वास के बारे में और जानने की इच्छा हुई। उन्होंने कई सवाल पूछे और पवित्र आत्मा की अगुवाई से सभी सवालों का मैं भली-भांति जवाब दे सका।

पापा ने पहली बार चर्च जाने की इच्छा ज़ाहिर की। हम लोग DBF (दिल्ली बाइबल फैलोशिप) की हिन्दी सभा में गये जहाँ पास्टर देवेंद्र अगुवाई करते थे। वे बड़े मीठी बोली बोलते हैं और उनके प्रवचन ने पापा को प्रभावित किया। परंतु यहाँ भी शैतान ने तुरुप का इक्का चलाने की कोशिश की। प्रभु-भोज के दौरान उसने पापा के दिमाग में फिर एक उलझन डाली और एक ही बर्तन से दाखरस पीने के कारण उन्हें क्रोध दिलाया। हमने प्रार्थना किया और उन्हें समझाया कि हम एक परिवार हैं और हम में कोई भेदभाव नहीं हैं।

प्रभु ने उनके मन में बात की और वो बाइबल और मसीही विश्वास के पास आने लगे। पास्टर देवेन्द्र और उनकी पत्नी संगीता भी हमारे घर आये और पापा के तथा हम सबके साथ प्रार्थना की।

10 दिनों के बाद, हम सबकी प्रार्थनाओं के फलस्वरूप पापा शराब के सारे दुष्प्रभावों से और सिगरेट तक की आदत से छूट गए थे और उनकी हालत में भी बहुत सुधार आ गया था। उनकी आँखों की रोशनी जो लगभग चली ही गई थी, चश्मे के साथ ठीक हो गई। उनका काँपना खत्म हो गया था और वो स्वयं सुबह की सैर करके आने लगे थे। उन्होंने प्रभु यीशु पर विश्वास किया।

यह मेरे जीवन के सबसे सुखद क्षणों में से एक था। मैं जब उन्हें हिन्दी भजन गाते, बाइबल पढ़ते, प्रार्थना करते और गवाही देते देखता था तो सच में भावविभोर हो जाता था और मेरी आंखों से आंसू बह निकलते थे। उन्होंने सभी से (मित्रों से, रिश्तेदारों से और सहकर्मियों से) अपने नये विश्वास की चर्चा की। उनके जीवन में नया उत्साह आ गया था और वो भरपूरी के उस जीवन का अनुभव करने लगे थे जो प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करने से मिलता है।

पापा एक समय ईसाइयत से घृणा करते थे लेकिन बाद में वो मसीह से प्यार करने लगे। कभी उन्होंने मम्मी से कहा था कि अगर वो चर्च गई तो वो तलाक दे देंगे, बाद में वो खुद अपने साथ गाड़ी में बिठाकर उन्हें चर्च लेकर जाते थे। उन्होंने मम्मी के साथ ही बपतिस्मा लिया और परमेश्वर की आज्ञा को पूरा किया। मसीह को पाकर उनका जीवन बदल गया। स्वयं अपनी गवाही में उन्होंने एक असीम शांति का जिक्र कई बार किया। कई लोग उस परिवर्तन की गवाही आज भी दे सकते हैं जो उन्होंने प्रत्यक्ष रूप में पापा के जीवन में देखा था।

***

पापा की मृत्यु में परमेश्वर की विश्वासयोग्यता

परमेश्वर हमारी विफलताओं को जानता है। सिर्फ वो ही है जो हमारे पापों को क्षमा भी करता है। न सिर्फ वो हमको माफ करता है बल्कि हमारे सारे अधर्मों को भुला भी देता है। जब हम पश्चाताप के साथ उससे माफी मांगते हैं तो वो यीशु मसीह के लहू से धोकर वो हमें ऐसा बना देता है जैसे हमने कभी पाप किये ही न हों।

अपने आखिरी दिनों में पापा फिर से परीक्षाओं में पड़े और उनकी यही गलतियां उन्हें बहुत भारी पड़ी। अब वो इस दुनिया में नहीं है पर मैं जानता हूँ कि एक दिन हम उनको स्वर्ग में देखेंगे क्योंकि परमेश्वर के वायदे के अनुसार वो अब परमेश्वर के साथ हैं।

मई 2006 में जब मैं शारजाह से जयपुर पहुँचा तो पापा संतोकबा दुर्लभजी अस्पताल में भर्ती थे। वो गहन चिकित्सा कक्ष (ICU) में थे और उनके सारे शरीर पर बहुत से तार, पाइप और यंत्र लगे हुए थे। चिकित्सकों ने बताया कि उनकी हालत बहुत ही खराब थी और उन्हें कोई आशा नज़र नहीं आ रही थी। मैंने फिर भी निर्णय लिया कि चाहे जितना पैसा खर्च हो जाए, अगर आशा की एक भी किरण नज़र आये तो मैं इलाज कराता रहूँगा।

मैंने गहन चिकित्सा कक्ष में अकेले उनके साथ समय व्यतीत किया और उनके लिये प्रार्थना भी की। मैंने उनके लिये वो आत्मिक भजन भी धीमी आवाज में गाया जो उनको विश्वास में आने पर बहुत ही अच्छा लगता था।

मैंने उनसे बात की और कहा कि अगर वो मेरी आवाज सुन सकते थे तो वो अपने सभी पापों से पश्चाताप करें और परमेश्वर से क्षमा मांग लें और उन सभी को भी माफ करें जिनके प्रति उनके मन में कोई द्वेष हो।

जब मैं घर वापस गया तो मैं बड़ी दुविधा में था। डाक्टर ने मुझसे कहा था कि मुझे अगले दिन मुझे निर्णय लेना था कि पापा को अस्पताल में और रखा जाए या सब संयंत्र हटा दिये जाएँ। यह मेरे लिये एक बहुत बड़ा प्रश्न था। मुझे मालूम नहीं था कि पापा के बचने की क्या कोई क्षीण सी भी उम्मीद थी या नहीं।
उस रात जब हमने प्रार्थना की तो वो कुछ इस प्रकार थी –

"प्रभु यीशु, हम आपकी सामर्थ पर पूरा भरोसा रखते हैं और जानते हैं कि आप अभी भी आश्चर्यकर्म कर सकते हैं। हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि यदि आपकी इच्छा ये है कि पापा अब आपके साथ चले जाएँ तो होने दें कि डॉक्टर कल हमें कोई आशा न दिखाएँ बल्कि पहली बार में ही यह कहें कि सब खत्म हो चुका है, अन्यथा आप डॉक्टरों की अगुवाई करें ताकि वो पापा का ठीक इलाज कर सकें और पापा ठीक हो जाएँ और आपकी महिमा के लिए जीयें। आमीन"

अगले दिन जब मैं डॉक्टर से मिला तो पहली बात जो उन्होंने की वो ये ही थी कि उनके अनुसार पापा अब मृत थे और कोई आशा नहीं थी। उन्होंने कहा कि हम जब तक चाहें तब तक उन्हें अस्पताल में रख सकते थे पर उससे कोई लाभ नहीं होने वाला था। उनके शरीर में जो सांसें चलती दिख रही थीं वो सिर्फ मशीनों के कारण थी।

डाक्टरों की राय के अनुसार मैंने अपने जीवन का सबसे कठिन निर्णय लिया। सभी यंत्र जो पापा को अब तक चला रहे थे वो हटा दिये गये। मेरे पिता हमें छोड़कर जा चुके थे।

दाह-संस्कार के बाद, मैं फिर एक बार परमेश्वर के पास आया और बातें करने लगा। परमेश्वर ने अपनी करूणा के अनुसार उस समय में भी मुझे सांत्वना दी। सब रिश्तेदारों तो अपने प्रेम के कारण वहाँ आये थे परंतु फिर भी परमेश्वर की सांत्वना उस समय उन सबसे ज्यादा कारगर साबित हुई। परमेश्वर ने यशायाह 57:1,2 से मुझसे बात की –

📖 *"धर्मी जन नष्ट होता है, और कोई इस बात की चिन्ता नहीं करता; भक्त मनुष्य उठा लिए जाते हैं, परन्तु कोई नहीं सोचता। धर्मी जन इसलिये उठा लिया गया कि आनेवाली विपत्ति से बच जाए, वह शांति को पहुँचता है; जो सीधी चाल चलता है वह अपनी खाट पर विश्राम करता है।"*

मैं सच में अपने मन में सोच ही रहा था कि, मेरे पिता जिनपर यीशु मसीह की पवित्रता ओढ़ाई गई थी, उन्हें इतनी जल्दी ऐसी परिस्थिति में इस दुनिया को छोड़कर क्यों जाना पड़ा। परमेश्वर ने बताया कि वो अपने उद्धार तथा उद्धारकर्ता प्रभु यीशु का तिरस्कार करने के बहुत नज़दीक आ चुके थे इसलिए परमेश्वर ने उन्हें ले लिया ताकि आने वाली विपत्ति से बच जाएँ और उन्हें शांति दी है।

***

प्रांजल के जन्म में परमेश्वर की विश्वासयोग्यता

प्रभु यीशु मसीह मृत्यु तथा जन्म दोनों के मालिक हैं। सभी बातों का अधिकार उनके ही हाथों में है। प्रभु यीशु ने क्रूस पर अपने प्राण स्वयं परमेश्वर पिता के हाथों में सौंपे और तीसरे दिन उन्हें वापस भी ले लिया ताकि जीवित होकर अपने लोगों के बीच में फिर से जाएँ। वह जीवित ईश्वर है और आज भी स्वर्ग में विराजमान है।

मैं इस बात को जानता तो था पर पापा की मृत्यु और प्रांजल के जन्म के समय मैंने बड़ी गहराई से इस सत्य को समझा।

प्रभु की दया से हम सबकी प्रार्थनाओं के फलस्वरूप प्रेरणा 2006 के आखिरी महीनों में गर्भवती हुई। उस दिन से हम इसके पूर्णकालिक होने के लिए दुआ करने लगे। प्रभु ने अपने वचन के द्वारा हमें अपनी इच्छा बता दी।

📖 *"जैसे वीर के हाथ में तीर, वैसे ही जवानी के लड़के होते हैं।"*

[भजनसंहिता 127:4]

यूँ तो हम लड़का या लड़की दोनों ही के लिए बहुत खुशी से तैयार थे परंतु परमेश्वर ने हमें बता दिया कि हमें लड़का होने वाला था। बिना किसी

विज्ञान के सिर्फ परमेश्वर पर विश्वास के द्वारा हम ये बात जान गए थे। प्रेरणा ने उसका नाम 'प्रांजल' रखने का सुझाव दिया जिसका मतलब 'सरल', 'शुद्ध' और 'मनोहर' होता है। मैं इसके शाब्दिक अर्थ से ज्यादा शब्द-विग्रह से उत्साहित था – प्राण + जल अर्थात जीवन का जल (ख्रीस्त सुसमाचार) पहुंचाने वाला।

जब प्रसव का समय आया तो एक बड़ी समस्या सामने आई। दो दिन इंतजार करने के बाद और दवाईयों से सब प्रकार के यत्न करने के बाद भी प्राकृतिक प्रसव शुरू नहीं हुआ। डॉक्टर ने ऑपरेशन के द्वारा प्रसव कराने की बात की तो मैं इसे पचा नहीं पा रहा था। हम लोग निरंतर प्राकृतिक तरीके के लिए प्रार्थना कर रहे थे।

यह दिन 22 जुलाई 2007 का था। मैंने प्रार्थना करना शुरू किया और परमेश्वर ने मुझसे भजनसंहिता 22 पढ़ने को कहा। मैंने बाइबल खोलकर पढ़ना शुरू किया।

📖 *"हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया? तू मेरी पुकार से और मेरी सहायता करने से क्यों दूर रहता है? मेरा उद्धार कहाँ है? हे मेरे परमेश्वर, मैं दिन को पुकारता हूँ परन्तु तू उत्तर नहीं देता; और रात को भी मैं चुप नहीं रहता।"*

यही तो मेरे दिल की पुकार थी। मैं प्रेरणा को प्रसव पीड़ा में देखकर दिन और रात परमेश्वर से प्रार्थना कर रहा था। परमेश्वर ने आगे पढ़ने के लिए कहा (9वीं आयत)।

📖 *"परन्तु तू ही ने मुझे गर्भ से निकाला; जब मैं दूधपीता बच्चा था, तब ही से तू ने मुझे भरोसा करना सिखाया है। मैं जन्मते ही तुझी पर छोड़ दिया गया, माता के गर्भ ही से तू मेरी ईश्वर है। मुझ से दूर न हो क्योंकि संकट निकट है, और कोई सहायक नहीं।"*

मैंने प्रांजल को परमेश्वर के सामर्थी और दयावन्त हाथों में सौंप दिया था। अपनी विश्वासयोग्यता और दया के अनुसार 30वीं आयत से परमेश्वर ने मुझे शांति दी। उसने कहा -

📖 *"एक वंश उसकी सेवा करेगा; और दूसरी पीढी से प्रभु का वर्णन किया*

जाएगा।"

मुझे मालूम हो गया कि परमेश्वर ने मुझसे बातचीत की है। मैंने कागजों पर हस्ताक्षर करके वापस दे दिये। 9:06 बजे सुबह प्रांजल पैदा हो गया।

बाद में डॉक्टर ने आकर हमसे कहा कि यह बच्चा ईश्वर के चमत्कार के कारण ही प्राकृतिक तरीके से नहीं हुआ क्योंकि एक तो बच्चा भारी था और दूसरे बच्चे की नाल उसके गले में दो बार लिपटी हुई थी जो कि किसी भी दुर्घटना का कारण हो सकती थी। उसने कहा कि कभी कभी ऐसे में गला घुटने से बच्चे की मौत तक भी हो सकती है। उन्होंने हमें मुबारकबाद दी और कहा कि बच्चा बहुत स्वस्थ और अच्छे वजन के साथ पैदा हुआ था।

📖 *"और हम जानते हैं, कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उन के लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं; अर्थात उन्हीं के लिये जो उस की इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।"*

[रोमियों 8:28]

इस बात से हमने सीखा कि हमें उसमें भरोसा करने की ज़रूरत है क्योंकि वो अपने प्रेम करने वालों और भय मानने वालों के जीवन में भलाई ही लाता है। परमेश्वर की विश्वासयोग्यता की और भी बहुत सी गवाहियां हमारे जीवन में है। कुछ और आशीषों का वर्णन मैं अगले अध्याय में करूंगा।

10 आशीषें

वचन पर ध्यान और मनन के समय में एक बार परमेश्वर ने एक बड़ी महत्वपूर्ण बात मुझे समझाई – हमारे शरीर के वे भाग जो नहीं दिखते वो उनसे ज्यादा महत्व रखते हैं जो कि हमें दिखते हैं।
हम हाथों के, आंखों के, पैरों के और बालों के बिना जीवित रह सकते हैं पर दिल के, गुर्दों के या दिमाग के बिना हमारा जीवित रहना नामुमकिन है।

हम अपनी दुनियावी आशीषों के, जो दिखती हैं, पीछे लगे रहते हैं और बढ़ चढ़कर बताते हैं पर आत्मिक आशीषों को भूल जाते हैं या उनकी धुन में नहीं रहते हैं। सच्चाई ये है कि भौतिक वस्तुएँ अच्छी तो हैं और प्रभु का धन्यवाद करने योग्य भी हैं पर इससे कहीं ज्यादा धन्यवाद के योग्य हमारी वो आशीषें हैं जो अनंतकाल तक हमारे साथ रहेंगी। परमेश्वर सिखाता है कि यदि हम उसकी पवित्रता की और उसके राज्य की खोज करें तो बाकि ये सब वस्तुएँ तो हमें स्वतः ही मिल जाएँगी।

कई बार लोग चमत्कार को देखकर प्रभु यीशु पर विश्वास करते हैं या अपनी दुनियावी ज़रूरतों की पूर्ति के लिए उनके पास आते हैं। मैं इस बात पक्षधर नहीं हूँ। मैं मानता हूँ कि परमेश्वर पिता है जिससे प्रेम करने के लिए हमें किसी चमत्कार की आवश्यकता नहीं है। जब हम उसमें विश्वास करने लगते हैं तो आश्चर्यकर्म तो हमारे जीवन का भाग ही बन जाते हैं। हम परमेश्वर पर सिर्फ इसलिए विश्वास नहीं करते कि वो आश्चर्यकर्म करने वाला परमेश्वर है बल्कि इसलिए वो ही हमारा सृष्टिकर्ता परमेश्वर है जो हमें जीवनभर संभालता है और हमें अनंतकाल का सुखमय जीवन देता है।

"परमेश्वर अपने भक्तों के लिये बहुत सी आशीषों का वर्णन अपने वचन में करते हैं जिनमें सुख-शांति, प्रेम, सफलता तथा जरूरतों के पूरे होने के साथ ही आत्मिक आशीषें जैसे पाप-क्षमा तथा मोक्ष सम्मिलित हैं।"

आप भी उस पर विश्वास करें ताकि आप उससे प्रेम कर सकें और उससे आशीषें पा सकें।

📖 *"और हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं परन्तु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं, क्योंकि देखी हुई वस्तुएँ थोड़े ही दिन की हैं, परन्तु अनदेखी वस्तुएँ सदा बनी रहती हैं।"*

[2 कुरिन्थियों 4:18]

बाइबल कई अलग अलग जगहों पर ये बात सिखाती है परंतु मैं इस बात को अपने विश्वासी जीवन में बहुत देर के बाद सीख सका।

***

बाइबल में वर्णित आशीषें

ऊपर लिखे महत्वपूर्ण तथ्य को सीखने से पहले, मैं अपने आपको परमेश्वर कि भलाईयों के और उसके प्रेम के बारे में अपने दोस्तों को बताने में बहुत सीमित पाता था, खास तौर पर उन्हें जो कि धनी परिवारों से थे क्योंकि यीशु मसीह पर विश्वास न करने के बावजूद भी उनके पास वो सब दुनियावी चीजें थी जो मैं कहता था कि प्रभु यीशु ने मुझे दी थीं और उन्हें भी दे सकते थे। इस प्रकार प्रभु यीशु का सच्चा सुसमाचार मैं उनको नहीं दे पाता था।

मैं आज ये मानता हूँ कि भौतिक चीजें अच्छी हैं और हमारे जीवन के लिये ज़रूरी भी हैं पर वो महत्वपूर्ण नहीं है। भौतिक वस्तुएं प्रदान करना परमेश्वर के उन सब कामों में से बस एक काम है जो वो अपने लोगों के लिये करता है।

📖 *"इसलिये पहले तुम उसके राज्य और धार्मिकता (पवित्रता) की खोज करो तो ये सब वस्तुएँ तुम्हें स्वतः ही मिल जाएँगी।"*

[मत्ती 6:33]

परमेश्वर हमें भरपूरी (बाहुल्यता) का जीवन देने का वायदा करता है। प्रभु यीशु इस बहुतायत के जीवन में बहुत सी आशीषों का वर्णन करते हैं जो कि हमें तब तक नहीं मिल सकती जब तक कि हम उनपर विश्वास न करें। परमेश्वर हमारे विश्वास की मात्रा के अनुसार हमें सब भली वस्तुएँ देता है।

यदि परमेश्वर की बताई हुई आशीषों की हम एक सूची बनाएँ तो इसमें पापों

की क्षमा, परमेश्वर से जुड़ना, ईश्वर से हमारे अलगाव का समाप्त होना, अनंत जीवन तथा सच्ची खुशी जो कि परिस्थितियों पर निर्भर नहीं करती इसका एक भाग होंगी। परमेश्वर का पवित्र प्रेम, उसकी शांति, उसकी काबलियत पर विश्वास, हमारे जीने के लिए उसकी कृपा और प्रभु यीशु के नाम से की गई प्रार्थनाओं के उत्तर भी उसी सूची में सम्मिलित होंगी। शारीरिक आशीषें जैसे स्वस्थ शरीर और सब प्रकार की बीमारियों से छुटकारा, हर परिस्थिति में परमेश्वर का साथ, पाप तथा मृत्यु पर विजय, परमेश्वर की पवित्रता का हमको मिलना, हर परीक्षा की घड़ी में एक रास्ता होना, भयानक परिस्थिति में उसका साहस और जीवन के निर्णय लेने के लिये बुद्धि और ज्ञान भी हमें परमेश्वर के वचन में वायदे के रूप में दिये गये हैं।

बाइबल में परमेश्वर की बहुत सी आशीषों का वर्णन है जो कि उनके लिये हैं जो उसके वचन के अनुसार उसके पीछे चलते हैं। भौतिक आशीषें, सफलता, वैभव, आदर, बहुतायत, विजय और परमेश्वर का अनुग्रहकारी साथ उसमें वर्णित हैं। नये नियम में भौतिक आशीषों के साथ आत्मिक आशीषों का भी वर्णन है जैसे – परमेश्वर द्वारा पाप क्षमा कर हमें एक नई सृष्टि बनाना, परमेश्वर की संतान और उसके उतराधिकारी बनना, स्वर्गीय स्थानों तक पहुंच होना, याजकों का समाज होना, सेंतमेंत मोक्ष का दिया जाना, स्वर्ग में प्रवेश का आश्वासन और दण्ड से पार होकर परमेश्वर की छत्रछाया में आ जाना, माँगने वाला नहीं लेकिन परमेश्वर द्वारा देने वाला बनाया जाना, पूँछ नहीं बल्कि सिर ठहराना इत्यादि।

मैं इन सब बातों की आध्यात्मिक विवेचना नहीं करूंगा। मैं आपको सिर्फ यह बताना चाहता हूँ कि परमेश्वर ने यह सब परमेश्वर ने मुझे दिया है।

***

परमेश्वर की शांति

मैं आपको कोई झूठी तसल्ली नहीं दूँगा कि प्रभु यीशु को जान लेने के बाद आपके जीवन की सभी परेशानियां खत्म हो जाएँगी या आप फिर कभी पाप नहीं करेंगे। परमेश्वर के पास आना फूलों की सेज के समान नहीं है, पर हाँ, यह ज़रूर कहूँगा कि जब उसके हाथों में हमारे जीवन की बागडोर होती है तो हमारे जीवन में हर परिस्थिति में एक शांति हमारे साथ रहती है जो कि

हमें इस दुनिया में नहीं मिलती, और पाप के विरुद्ध हममें एक सामर्थ काम करती है जो हमें सिखाती है कि हम क्या करें और क्या नहीं।

📖 *"मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूँ, अपनी शान्ति तुम्हे देता हूँ; जैसे संसार देता है, मैं तुम्हे नहीं देता, तुम्हारा मन न घबराए और न डरे।"*

[युहन्ना 14:27]

📖 *"तब परमेश्वर की शान्ति, जो समझ से बिल्कुल परे है, तुम्हारे ह्रदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी।"*

[फिलिप्पियों 4:7]

प्रभु यीशु में विश्वास कर लेने के बाद भी एकाएक हमारी सभी मुश्किलें दूर नहीं हो गईं थी, परंतु असीम शांति हमारे जीवन में आ गई जिससे हम हरेक दुःख की घड़ी भी सहजता से पार कर लेते हैं।

सन 2005 से 2006 के बीच का एक ऐसा समय हमारे जीवन में आया जिसमें हमने बहुत आशीर्षें भी पाईं और दुख भी झेले। अपने बुरे और अच्छे समय में हम परमेश्वर में विश्वास रखे रहे और वो हमें हमारी हरेक कठिन परिस्थिति से छुड़ाता रहा। उसकी शांति निरंतर हमारे जीवन में बनी रही।

अपने उत्तम समय में परमेश्वर ने बड़ी अद्भुत रीति से काम किया। वो पापा को 2005 में विश्वास में लाया और उनको उनकी शराब पीने की बुरी आदत से छुड़ाया। प्रार्थनाओं के द्वारा शारजाह में हमें दूसरी नौकरी मिली और पैसे कि परेशानियाँ भी खत्म होने लगीं।

मैं और मेरी पत्नी प्रेरणा *जुलाई* 2005 में शारजाह आए। मैं तो नौकरी वीज़ा पर ही था पर वो विज़िट वीज़ा पर आई थी। *अक्तूबर* में उसे अपना वीज़ा बदलने के लिये ईरान के किशिम द्वीप पर जाना पड़ा। सामान्य परिस्थिति में 1 दिन में जो वीज़ा मिल जाता है उसमें उसे 7 दिन लग गए परंतु इस यात्रा के दौरान भी वो कई लोगों को परमेश्वर के प्रेम के बारे में बताती रही जिसमें कई महिलाओं ने प्रभु यीशु पर विश्वास भी किया। वापस आने के बाद हमें पता चला कि अपनी इस यात्रा के दौरान वह गर्भवती थी और ठीक संभाल न हो पाने के कारण या कमज़ोरी के कारण वह गर्भ संपूर्ण नहीं हो पाया।

हम थोड़े दुखी तो ज़रूर हुए पर निराश नहीं। हमारा परमेश्वर हमें हर परिस्थिति में आशा देता है और हम जानते थे कि अभी भी नियंत्रण में था।

नवम्बर के बाद हमें सुनने को मिला कि पापा अब प्रार्थना में मन नहीं लगाते थे। *दिसम्बर* के बाद तो उन्होंने चर्च जाना बंद ही कर दिया और शराब पीने की अपनी पुरानी आदत में पड़ने लगे। वो फिर से मम्मी को सताने लगे, इसलिए मम्मी चण्ड़ीगढ़ चली गई जहाँ पंकज फैशन डिज़ाइनिंग का कोर्स कर रहा था।

जनवरी 2006 की एक ठण्डी सुबह जब पंकज और मम्मी चर्च जा रहे थे, तभी मोटरसाइकिल में मम्मी की साड़ी फंस जाने के कारण वो दोनों एक बहुत बड़ी दुर्घटना के शिकार हो गए। पंकज को तो ज्यादा चोट नहीं लगी पर मम्मी का पैर घुटने पर से टूट गया और उनके हाथ और मुँह पर भी चोटें आई। फिर भी मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ कि परमेश्वर ने उनको मौत को मुँह से बचा लिया। पंकज और उसके दोस्तों ने मिलकर मम्मी को अस्पताल पहुँचाया और बहुत सेवा की।

इस दौरान पापा भी वहाँ पहुँचे और उनको वापस जयपुर ले जाने की जिद करने लगे। वो हिल भी नहीं सकती थी और पापा फिर भी उनको 10 घण्टे की यात्रा कराकर जयपुर ले जाने पर अड़े रहे। सबने उनको बहुत समझाया पर वो टस से मस नहीं हुए और वापस जयपुर ले ही गए। इसके कारण प्लास्तर हिल जाने से कुछ परेशानियाँ भी पैदा हो गईं जिनका इलाज जयपुर में कराया गया। वहाँ वो नानाजी के घर में रही। पापा रातबरात फोन कर उनको परेशान करते ही रहते थे। वो ठीक नहीं हो पा रही थीं।

मैं जब यह सुनता तो अपने आपको असहाय पाता था और परमेश्वर से प्रार्थना करता रहता था।

पापा अपने जीवन के सबसे बुरे स्वभाव का प्रदर्शन कर रहे थे। उनके इस स्वभाव से दादाजी का दिमागी संतुलन बिगड़ने लगा और उन्हें कहीं कोई आशा नज़र नहीं आती थी। आखिरकार *फरवरी* के अंत में वो हमें छोड़कर इस दुनिया से चले गए।

पापा का शराब पीने का क्रम फिर भी नहीं रूका और उनका स्वास्थ्य भी

बिगड़ता चला गया। कुछ ही दिनों में उन्हें लीवर की गम्भीर बीमारी हो गई और अगले 2 महीने उन्हें अस्पताल में गुजारने पड़े। *मई* में वो चल बसे।

उनकी मृत्यु से तुरंत पहले मैं जयपुर पहुँचा, और मृत्योपरांत प्रेरणा को भी जयपुर बुला लिया। अंत्येष्ठी के बाद हम लोग वापस शारजाह आ गये। वापस आने के बाद एक बार फिर हमें पता चला कि प्रेरणा गर्भवती थी परंतु कुछ विषमताओं के कारण यह दूसरा गर्भ भी *जुलाई* 2006 में चला गया।

नवम्बर 2005 से जुलाई 2006 तक निरंतर हमारे जीवन में कठिन से कठिन परिस्थितियाँ आती रहीं। यह किसी भी सामान्य आदमी को तोड़ने के लिये काफी हैं, परन्तु परमेश्वर हमारे साथ बना रहा और हरेक परिस्थिति में हिम्मत दी। प्रभु ने हमें विश्वास के नये आयाम इस अंतराल में सिखाए। कभी कभी परमेश्वर अपने लोगों के जीवन में ऐसा करता है जिससे कि वो उसमें खिल सकें और उसकी सुगंध इस दुनिया में फैला सकें। यह ऐसा ही है जैसे एक बागवान अपने बगीचे के पौधों की काँट-छाँट करता है ताकि फूल सही तरीके से खिलें और बगीचे की सुंदरता को बढ़ाएँ।

हमारे विश्वास के कारण हमारी दिक्कतें टल नहीं गई परंतु परमेश्वर की शांति हमारे साथ बनी रही।

📖 *"मैं ने ये बातें तुमसे इसलिये कही हैं, कि तुम्हे मुझमे शान्ति मिले; संसार में तुम्हे कलेश होता है, परन्तु ढाढस बांधो, मैं ने संसार को जीत लिया है।"*

[युहन्ना 16:33]

प्रभु यीशु के उपरोक्त वचन से हमें बहुत ढाढ़स और बल मिलता है कि हर परिस्थिति में उसमें विश्वास करते हुए हम उसके साथ चलते रहें। उसकी शांति हमेंशा हमारे जीवन में बनी रहती है।

***

सबके लिए प्रेम

परमेश्वर ने अपना प्रेम मुझपर इस प्रकार प्रकट किया कि जब मैं पाप ही में

था तब ही मसीह मेरे लिये मारा गया। उसने क्रूस पर अपने प्रेम की लम्बाई-चौड़ाई-ऊँचाई-गहराई मुझे दिखाई है और फिर स्वयं मुझसे प्रेम दिखाने के बाद उसने मुझसे कहा कि मैं भी वैसा ही प्रेम इस दुनिया में दिखाऊँ। उसने मुझे अपने गुनाहगारों को वैसे ही माफ करना सिखाया है जैसे कि उसने मुझे माफ किया है। मत्ती 9:13 से आगे प्रभु यीशु ने यह बात बड़े अजीब क्रम में बताई हैं कि हम अपने गुनाहगारों को माफ करें ताकि परमेश्वर हमें माफ करे, और यदि हम न करें तो परमेश्वर भी न करे।

मेरे जीवन में ज्यादा लोग ऐसे थे जिनसे मुझे माफी माँगनी थी बजाय उनके जिनको मुझे माफ करना था। मैंने पहले परमेश्वर से और फिर उनसे, जिनसे मुझे माफी माँगनी थी, माफी माँगी। तब से लेकर अब मैं हर दिन अपनी रोजाना की गलतियों से पश्चाताप कर परमेश्वर के योग्य जीवन बिताता हूँ।

परमेश्वर ने मुझे अपने प्यार और करुणा से भर दिया है, खास तौर पर उनके लिये जो भटके हुए हैं। यह परमेश्वर का 'अगापे' प्रेम है जो मुझे निरंतर उनके लिये प्रार्थना करने के लिये और सुसमाचार बताने के लिये प्रेरित करता है। मैं इस बात की डींग नहीं मार सकता कि मैं सबसे प्रेम करता हूँ। मैं कोशिश करता हूँ और कई बार इसमें विफल भी हो जाता हूँ। फिर भी जब मैं अपने आपको परमेश्वर के हाथों में सौंप देता हूँ तो वो मुझ में रहकर सब से प्यार करता है।

प्रभु यीशु को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता जान लेने के बाद से मैं एक बदला हुआ इंसान हो गया हूँ। मैं अपने परिवार से और ज्यादा प्यार करने लगा हूँ और उनकी ओर ज्यादा ज़िम्मेदार हो गया हूँ। मेरे भाई-बहन ने मुझमें यह अंतर देखा है, और शायद यह ही मेरे परिवार को मसीह से प्रभावित करने का कारण रहा हो। परमेश्वर ने सारी कड़वाहट को मेरे जीवन से निकालकर अपनी मिठास मुझ में भर दी।

बाइबल प्रेम के बारे में बहुत कुछ सिखाती है –

📖 "*प्रेम धीरजवन्त है, और कृपाल है; प्रेम ईर्ष्या नहीं करता; प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता, और फूलता नहीं। वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता। कुकर्म से आनन्दित*

नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है। वह सब बातें सह लेता है, सब बातों पर विश्वास करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है। प्रेम कभी टलता नहीं..."

[1 कुरिन्थियों 13:4-8]

📖 "*पलटा न लेना, और न अपने जाति भाइयों से बैर रखना, परन्तु एक दूसरे से अपने समान प्रेम रखना; मैं यहोवा (परमेश्वर) हूँ।*"

[लैव्यव्यवस्था 19:18]

📖 "*तुम सुन चुके हो, कि कहा गया था; कि अपने पड़ोसी से प्रेम रखना, और अपने बैरी से बैर। परंतु मैं तुम से यह कहता हूँ, कि अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सतानेवालों के लिये प्रार्थना करो।*"

[मत्ती 5:43, 44]

📖 "*उस ने उत्तर दिया, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी शक्ति और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख; और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।*"

[लूका 10:27]

हमें ऐसा लग सकता है कि ये बातें कहना आसान है पर करना मुश्किल - और यह बात सही भी है जब हम अपनी सामर्थ में ऐसा करने की कोशिश करते हैं। परंतु जब हम अपने आपको परमेश्वर की आधीनता में ऐसा करते हैं तो परमेश्वर कृपा करता है और निरंतर सिखाता है।

वो हमसे यह अपेक्षा रखता है कि हम अपनी ओर से नम्रता और दीनता का व्यवहार करते हुए उसके जैसा स्वभाव बनाएँ (गलतियों 2:5), और परमेश्वर के उसी स्वरूप में परिवर्तित होते चले जाएँ जैसा उसने शुरू में हमें आदम और हव्वा करके (उत्पत्ति 1:27) बनाया।

मैं बाइबल में सिखाया गया सिद्ध प्रेम नहीं कर पाता हूँ। मैं अभी भी सीख रहा हूँ। पर मेरा विश्वास है कि जो भला काम परमेश्वर ने शुरू किया है वो उसे खत्म भी करेगा।

***

विचारों में बदलाव (नकारात्मक से सकारात्मक)

मेरी सोच बदल गई है। परमेश्वर ने अपने वचन से सिखाया कि हर वो विचार जो परमेश्वर की ओर से नहीं है उन्हें बंदी कर हम प्रभु के चरणों में ले आएँ ताकि वो हम पर प्रभुता न कर सके, क्योंकि ऐसे विचार जो परमेश्वर की ओर से नहीं, वह शैतान की ओर से हैं।
प्रभु यीशु को जानने से पहले जब भी किसी युवक को मैं देखता तो मेरे मन में लड़ने के विचार उठते थे। मैं सोचता कि यदि में इस व्यक्ति से लड़ूँ तो इसे पीट सकूँगा या ये मुझे पछाड़ देगा। मैं युक्तियाँ बनाने लगता था कि मैं इसे इस तरीके से पटकूँगा या इसे ऐसे हरा सकूँगा। मेरा अपने ही विचारों पर कोई नियंत्रण नहीं था या शायद मेरी विचारधारा ही ऐसी हो चली थी। मेरे विचार प्रेम के या भाईचारे के नहीं परन्तु लड़ाई के थे।

जब मैंने प्रभु यीशु को जाना तो मैंने सीखा कि वो तो हमें अपना दूसरा गाल उसकी ओर फेरना सिखाते हैं जिसनें हमारे एक गाल पर तमाचा मारा हो, और उनके लिये प्रार्थना करना सिखाते हैं जो हमें सताते हों। प्रभु कहते हैं कि बदला लेना हमारा नहीं उनका काम हैं, हमें तो प्रेम में सब सह लेना है।

परमेश्वर की लालसा इसी बात की रहती है कि वो आत्माओं को नर्क से बचाएँ, और उसने मुझ में भी वो इच्छा पैदा कर दी है। आज जब मैं किसी को देखता हूँ तो उसके प्रति द्वेष या लड़ाई की भावना पैदा नहीं होती बल्कि मुझे उसमें एक भटकी और खोई हुई आत्मा दिखाई पड़ती है जो शायद नर्क की ओर जा रही हो। मेरा हृदय द्रवित हो जाता है और मैं अपने आपको उनके प्रति जिम्मेदार महसूस करता हूँ।

पहले वो समय था जब मेरे पास कोई आशा नहीं थी और मैं हर बात में नकारात्मक पहलू देखा करता था। अपनी जीवन नैया मैं खुद ही खेने की कोशिश करता रहता था और सच बताऊं तो बहुत मशक्कत करनी पड़ती थी। यह आपका अनुभव भी हो सकता है। जीवन में कई बार हम ऐसी परिस्थिति में पड़ जाते हैं कि हमें हाथ को हाथ नहीं सूझ पड़ता है। हमें पता नहीं चलता कि इसका परिणाम क्या होगा और हमारे मन में स्वाभाविक तौर पर नकारात्मक विचार आने शुरू हो जाते हैं।

जबसे मैंने प्रभु यीशु को पा लिया है तबसे मेरी जीवन नैया के खेवनहार वो ही है और मैं आराम से रह सकता हूँ क्योंकि मैं जानता हूँ कि उन्हें सब मालूम है। वो सब कुछ सही करते हैं। अपने जीवन की उन कठिन परिस्थितियों को, जिनमें पहले हम हारा हुआ महसूस करते थे, उनमें परमेश्वर हमें विजय दिलाता है और उन्हें हमारे आधीनता में ले आता है।

बाइबल बताती है कि उसने हमें स्वर्ग कि कुञ्जियाँ दे दी है ताकि जो भी हम धरती पर बाँधें वो स्वर्ग में बंध जाये और जो भी हम धरती पर खोलें वो स्वर्ग में खुल जाए। हमारे मुख से निकलने वाले शब्द ही वो कुंजी है। हमारे मुख से निकले हर शब्द का बड़ा महत्व है। हमारे सकारात्मक शब्द परमेश्वर इस्तेमाल करता है कि हमें आशीष दे और नकारात्मक शब्द शैतान इस्तेमाल करता है कि हमें नाश करे। यह समझने के तुरंत बाद मैंने अपने नकारात्मक शब्दों के लिये परमेश्वर से क्षमा माँगी और उनके प्रभाव को यीशु के पवित्र नाम में खत्म किया। अब मैं सकारात्मक बोता हूँ और सकारात्मक काटता हूँ।

मेरे विचार अब सकारात्मक हैं। किसी परिस्थिति में मैं अब नकारात्मक बातें नहीं ढूंढता बल्कि हर बात में परमेश्वर को खोजता हूँ, और पाता भी हूँ इसलिये मेरे पास हमेंशा आशा रहती है और मैं हरेक बात में उसका धन्यवाद कर पाता हूँ। मेरे जीवन में यह परिवर्तन प्रभु की दया और सामर्थ से हुआ है, मैं उनका आभारी हूँ।

***

मौत का भय नहीं रहा

मौत का भय अब मुझमें नहीं है।

पौलुस फिलिप्पियों 1:21 में यह बात कहता है कि उसके लिये जीना मसीह है और मरना लाभ। हर बात में वो परमेश्वर को अपने साथ महसूस करता था और इसीलिये न तो उसे अपने शारीरिक जीवन से कुछ विशेष प्रेम था और न मृत्यु से कुछ भय।

इस दुनिया में ज़्यादातर लोग मौत से भय खाते हैं। इसके पीछे मुख्य कारण ये है कि उन्हें यह नहीं मालूम कि मरने के बाद हमारा क्या होता है।

हमारी आत्मा कहाँ जाती है? भविष्य कि अनिश्चितता ही भय को लाती है।

मुझे मालूम है कि मृत्यु के बाद मेरा क्या होगा। मुझे मृत्यु से कोई भय नहीं है। युहन्ना 14:3 के अनुसार यीशु का वायदा मेरे साथ है –

📖 *"और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूँ, तो फिर आकर तुम्हे अपने यहाँ ले जाऊँगा, कि जहाँ मैं रहूं वहाँ तुम भी रहो।"*

दूसरा कारक जिसके कारण लोग मृत्यु से डरते हैं वो है – मेरे बाद मेरे परिवार का क्या होगा, मेरी पत्नी, मेरे बच्चे, मेरे माता-पिता। प्रभु यीशु में मेरे पास एक आशा है क्योंकि वो मेरी सुधि लेते हैं। मैं जानता हूँ कि जो परमेश्वर मेरी ज़रूरतें पूरा करता है वो मेरे परिवार की भी ज़रूरतें पूरी कर सकता है।

प्रभु यीशु ने मत्ती 6:26, 27 में कहा है -

📖 *"आकाश के पक्षियों को देखो। वे न बोते हैं, न काटते हैं, और न खत्तों में बटोरते हैं; तौभी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उन को खिलाता है; क्या तुम उन से अधिक मूल्य नहीं रखते। तुम में कौन है, जो चिन्ता करके अपनी अवस्था में एक घड़ी भी बढ़ा सकता है?"*

और मत्ती 6:31, 32 में –

📖 *"इसलिये तुम चिन्ता करके यह न कहना, कि हम क्या खाएँगे, या क्या पीएँगे, या क्या पहिनेंगे? क्योंकि अन्यजाति इन सब वस्तुओं की खोज में रहते हैं, और तुम्हारी स्वर्गीय पिता जानता है, कि तुम्हे ये सब वस्तुएँ चाहिए।"*

मैं अपने जीवन से संतुष्ट हूँ और प्रतिदिन परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ। मैं मृत्यु को किसी भी दिन देखने में नहीं डरता क्योंकि फिर मैं प्रभु यीशु के साथ स्वर्ग में रहूँगा।

***

परमेश्वर के साथ सनातन जीवन की आशा

बाइबल बताती है कि वो जो परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह में विश्वास करते हैं वे परमेश्वर की लेपालक (गोद ली हुई) संतान है। उनका नाम जीवन की किताब में लिखा है और उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं है बल्कि वे न्याय के दिन खरे पाये जाएँगे।

प्रभु के इस वचन पर विश्वास करने के मेरे पास ठोस कारण हैं। यीशु मसीह के बारे में की गई करीब 332 भविष्यवाणियों में से 99 प्रतिशत भविष्यवाणियाँ बिल्कुल ठीक ठीक पूरी हुई हैं, और जो बची हैं वो सिर्फ उनके दूसरे आगमन के विषय में हैं। मैं जानता हूँ कि जब पहले आगमन कि भविष्यवाणियाँ शत-प्रतिशत पूरी हुई हैं तो दूसरे आगमन के विषय में भी पूरी होंगी। और वैसे भी यदि मेरा जीवन परिवर्तन सत्य है तो मैं क्योंकर संदेह करूँ।

यीशु मसीह फिर से आने वाले हैं ताकि अपनी कलीसिया (चर्च) को अपने साथ स्वर्ग में ले जाएँ जहाँ उसने सब विश्वासियों के लिये स्थान तैयार किये हैं। वहाँ हम उसके सारे स्वर्गदूतों, सारी जातियों के विश्वासियों, देश देश के लोगों और मसीही संतों के साथ उसकी आराधना करेंगे और चारों ओर उसकी महिमा का प्रकाश होगा।

मुझे आशा है कि मैं परमेश्वर को देखूँगा और उसके साथ उसके राज्य में रहूँगा। परमेश्वर के पवित्र स्वर्ग का स्पष्ट चित्रण बाइबल की आखिरी पुस्तक 'प्रकाशितवाक्य' में दिया गया है।

यह एक आत्मिक आशीष है जो अदृश्य है जिसे हम अपनी शारीरिक आँखों से नहीं देख सकते पर यह हमें दी गई है ताकि प्रभु के दूसरे आगमन में इसे पूरा होते देखें। जो विश्वास करेंगे वो इसके भागीदार होंगे बाकि पीछे छूट जाएँगे।

ऐसा क्या है जो मुझे उस महिमा की आशा रखने से रोक सके?

***

सफलता और समृद्धि

बाइबल की एक पुस्तक भजनसंहिता के पहले अध्याय में सफल पुरूष की एक परिभाषा दी गई है –

📖 *"क्या ही धन्य है वह पुरुष जो दुष्टों की युक्ति पर नहीं चलता, और न पापियों के मार्ग में खड़ा होता; और न ठट्ठा करनेवालों की मण्डली में बैठता है। परन्तु वह तो यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता; और उसकी व्यवस्था पर रात दिन ध्यान करता रहता है। वह उस वृक्ष के समान है, जो बहती नालियों के किनारे लगाया गया है। और अपनी ऋतु में फलता है, और जिसके पत्ते मुरझाते नहीं। इसलिये जो कुछ वह पुरुष करे वह सफल होता है।"*

इसे मैं ऐसे भी कह सकता हूँ कि वह व्यक्ति (स्त्री अथवा पुरुष) जो दुष्टों की मण्डली में न तो उठता बैठता है और न उनके विचारों तथा योजनाओं में किसी प्रकार भागी होता है बल्कि वह निरंतर परमेश्वर का भय मानते हुए दिन रात उसके वचन पर मनन कर पाप से परे आज्ञाकारिता का जीवन बिताता है, और अपने जीवन में परमेश्वर को सबसे मुख्य स्थान देता है वह व्यक्ति अपने हरेक काम में सफल होता है।

मैंने जब उपरोक्त वचन का अध्ययन किया और इसे समझने के बाद इसका पालन करने लगा तो परमेश्वर ने मुझे अपार सफलता दी है। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि मैं एक सन्त बन गया हूँ या पापरहित हो गया हूँ और न ही यह कि मैं दुनिया का सबसे सफ़ल व्यक्ति हूँ। बल्कि मैं यह बताने की कोशिश कर रहा हूँ कि मैंने अपनी सारी बुद्धि, बल तथा हृदय से परमेश्वर से प्रेम किया और उसके वचन को महत्व दिया, और ऐसा जीवन जीने का सतक प्रयास किया जैसा परमेश्वर चाहता है तो परमेश्वर ने मेरी मदद की। प्रभु यीशु ने असफलताओं को मेरे जीवन से गायब कर दिया है। जैसा मैंने पहले कई गवाहियों में बताया है कि हर परिस्थिति को ठीक से संभालने में परमेश्वर ने मेरी बड़ी सहायता की है। पवित्र आत्मा मेरी पढ़ाई से लेकर नौकरी तक और दैनिक जीवन से लेकर सामाजिक बातों में निरंतर मेरी अगुवाई करता रहा है।

ऐसा नहीं है कि मैं बहुत धनी हो गया हूँ पर आज मेरे पास परमेश्वर की दी

हुई वो सब भौतिक चीजें हैं जो इस दुनिया में जीने के लिये हमें आवश्यक हैं। जो भी मेरे चीजें मेरे पास हैं उनके लिये मैं परमेश्वर का धन्यवाद कर उनको प्रयोग करता रहता हूँ। वे मेरे लिये काम की तो हैं पर महत्वपूर्ण नहीं है। मैं उनमें घमण्ड नहीं करता बल्कि अपने परमेश्वर में घमण्ड करता हूँ जो मुझे वो सब भली वस्तुएँ देता है। मैं अपने परमेश्वर से निरंतर प्रेम करता रहूँगा चाहे इस दुनिया की वस्तुएँ मेरे पास रहे या न रहे।

***

परमेश्वर से मित्रता

परमेश्वर की कृपादृष्टि निरंतर मुझ पर और मेरे परिवार पर बनी रही है। यह सच में एक आत्मिक आशीष है जिसके कारण सारी भौतिक और शारीरिक आशीषें भी मेरे जीवन में आई हैं।

परमेश्वर हमारा मित्र बना है, और सच कहूँ तो वो मेरा सबसे प्यारा दोस्त है। वो मेरी सब बातें सह लेता है, कभी शिकायत नहीं करता, मेरी गलतियों को माफ करता है और अपना साथ मुझे देता है। मैं जब मुश्किल बात में फँस जाता हूँ तो वो मेरी सहायता करता है। वो मुझसे रोज मिलता है और बहुत बातें करना चाहता है।

परमेश्वर से मित्रता करना मुश्किल नहीं है। हमें सिर्फ इतना करने भर की ज़रूरत है कि हम उसे जानें, उसकी मित्रता का प्रस्ताव स्वीकार करें और हर दिन उसके साथ संगति करें।

मैं जानता हूँ कि हमारे ऐसा करने पर वो हमारे अंदर रहने लगता है। वो चाहता है कि हम अपने हरेक चुनाव में और हरेक निर्णय में उसको सम्मिलित करें। वो चाहता है कि हम प्रार्थना में उसके पास जाएँ और उससे परामर्श लें। उसकी इच्छा रहती है कि हम उसको अपने जीवन के हर क्षण में प्राथमिकता दें और उसको पहचानें।

यदि हम उसको अपने जीवन का एक अभिन्न अंग बना लें तो हम उसकी मित्रता और उसके अनुग्रह का अहसास कर सकते हैं।

परमेश्वर से मित्रता की गवाही

शारजाह आने के बाद हमारे पास कोई कम्प्यूटर नहीं था जिससे हम इंटरनेट पर भारत में अपने परिजनों से चैट कर सकें। अतः हम एक कम्प्यूटर खरीदना चाहते थे। हम प्रार्थना करने लगे। पैसा हमारी प्रार्थना का विषय नहीं था क्योंकि हमारे पास आवश्यक रूपये थे। हम प्रभु से राय लेना चाहते थे कि हम कैसा कम्प्यूटर खरीदें। यह बात उन लोगों को हास्यास्पद लग सकती है जो परमेश्वर को जीवित या अपना मित्र नहीं समझते।

अन्ततः कई दिनों की प्रार्थना के बाद हमें विश्वास हो गया कि परमेश्वर हमें लैपटॉप खरीदने देना चाहता था। हम पहला मौका मिलते ही जाकर एक लैपटॉप खरीद कर ले आये।

लैपटॉप आने के बाद हमें एक माउस, हैडफोन, इंटरनेट तार तथा वैबकैम की आवश्यकता थी। यह सब चीजें कुल मिलाकर 100 दिरहम (अमीराती मुद्रा 1 दिरहम = 11+ भारतीय रुपया) में आनी थीं।

एक शाम को शारजाह के सिटी सेंटर में जाकर हमने एक बड़ी दुकान में सब सामान चुन लिया और पैसे चुकाने काउंटर पर पहुँचे। वहाँ आने पर ही हमें पता चला कि जिस हैडफोन को हम 36 दिरहम का समझ कर ले आये थे वो असल में 52 दिरहम का था। शायद किसी ने उसे गलत जगह पर रख दिया होगा यह सोचकर हम फिर भी उसे खरीद लाए क्योंकि वो हमें पसंद आ गया था। हमने अपने बजट से ज्यादा मूल्य चुकाया।

घर पहुँचने के बाद मैंने सबसे पहले माउस का पैकेट खोला। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि पैकेट पर USB लिखा था जबकि यह माउस PS2 तरह का था जो कि मेरे कम्प्यूटर में काम नहीं आ सकता था। इसके बाद मैंने बड़ी आशाओं के साथ वैबकैम का पैकेट खोला तो पाया कि इसकी ड्राइवर सीडी टूटी हुई थी। आखिर में इंटरनेट केबल को इस्तेमाल करने की कोशिश की तो इसमें भी मुझे असफलता ही मिली। ये केबल इंटरनेट के लिये नहीं थी।
इस प्रकार हम उनमें से कोई भी वस्तु इस्तेमाल नहीं कर सके।

हम इस बारे में विचार करने लगे कि ऐसा क्यों हुआ। हम दोनों (प्रेरणा और

मैं) आखिर एक निष्कर्ष पर पहुँचे कि हमने यीशु मसीह से इस बाबत कोई बात नहीं की। जब हम 5000 दिरहम खर्च करने जा रहे थे तो हम निरंतर प्रार्थना कर रहे थे परंतु जब 100-150 दिरहम खर्च करने की बात आई तो हम अपने परममित्र से सलाह लेना भूल गये। यह हमें छोटी बात लग रही थी पर प्रभु ने सिखाया कि यह छोटी बात नहीं थी।

हमने प्रभु से माफी माँगी और अपनी गलती स्वीकार की। इसके बाद हमने गिदौन की तरह एक बड़ी अनोखी बात प्रभु से कही। हमने कहा कि यदि प्रभु ने हमें माफ कर दिया तो हमें इन चीजों का पैसा वापस दिला दें। अनोखी इसलिये क्योंकि यह दुकान इस बात के लिये प्रसिद्ध है कि इसमें वे पैसा वापस नहीं देते बल्कि एक वाउचर देते हैं जिससे ग्राहक उसी दुकान में अन्य चीजों की खरीददारी कर सकें।

इस प्रार्थना के बाद हम उस दुकान के शिकायत काउंटर पर पहुँचे। उन्होंने अपने नियमों के अनुसार हमें वाउचर देने की बात कही, और हमें प्रतीक्षा करने के लिये कहा। कुछ समय के बाद उनके मुख्य क्लर्क के न आने पर उन्होंने हमें हमारा पैसा वापस कर दिया। यह सामान्य बात नहीं थी पर हम जानते थे कि ये क्यों हुआ।

हमें मालूम हो गया कि हमारे मित्र ने हमें क्षमा कर दिया था।
हमने इस बात से सीखा कि प्रभु यीशु हमारे उनके साथ संबंध को कितना महत्व देते थे। हम अब निरंतर प्रभु के साथ रहना पसंद करते हैं और उनको अपने जीवन में प्राथमिक स्थान देते हैं और उनका *विशेष साथ* निरंतर हमारे संग बना रहता है।

***

परमेश्वर का विशेष साथ

परमेश्वर के विशेष साथ को हम नीचे दिये गये उदाहरण से समझ सकते हैं।

एक ऐसी सड़क की कल्पना कीजिये जिसमें बाकी सब लोग तो भीड़ भरी लेन में धीरे धीरे रेंगते हुए से चल रहे हों पर उसी समय कुछ विशेष लोगों के लिये एक अत्यधिक तेज रफ्तार वाली लेन निर्धारित हो जो बिना किसी परेशानी के 150 किलोमीटर प्रतिघंटा या ज्यादा की रफ्तार से जा रहे हों।

यह अजीब लग सकता है और शायद किसी को बुरा भी लगे परन्तु परमेश्वर का अनुग्रह जिसपर हो वो बिना रुकावट के निरंतर अपनी जीवन यात्रा में सफल और संतुष्ट जीवन का आनन्द उठाते हैं। परमेश्वर न तो किसी को बाध्य करता है कि धीमी लेन में चलें और न ही किसी भी कारण से किसी को उससे विशेषाधिकार पाने से प्रतिबंधित किया है कि तेज लेन में न चल सकें। जो इस विशेषाधिकार से वंचित हैं यह परमेश्वर की नहीं अपितु स्वयं उनकी ही गलती है। परमेश्वर पक्षपाती नहीं है।

उपरोक्त उदाहरण से मैं प्रभु यीशु के संकरे और चौड़े मार्ग के बारे में दी गई शिक्षा को तोड़ने मरोड़ने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ। उस पद में प्रभु ने जो शिक्षा दी है वह इस प्रकार है कि संकरा मार्ग परमेश्वर की ओर लेकर जाता है जिसपर चलना मुश्किल है क्योंकि यहाँ अपने शरीर को मारते कूटते हुए हमें पवित्र जीवन जीवन जीना होता है; पर उस पर भीड़ कम है। इसके विपरीत नर्क की ओर जाने वाला मार्ग बहुत चौड़ा है और इस पर चलना आसान है, क्योंकि इसमें पाप और शैतान के दास रहते हुए हम स्वच्छंदता का जीवन बिताते रहते हैं, परन्तु इस पर भीड़ बहुत है और लोग एक दूसरे को दबाते हुए आगे बढ़ते रहते हैं।

हम परमेश्वर के इस विशेष साथ को कैसे पा सकते हैं, यह समझने के लिये फिर से हमें एक दृष्टांत को देखना होगा।

विचार कीजिये कि आप एक बहुत महंगा उपकरण खरीद कर लाये जिसमें सैंकड़ों बिजली के तार लगाने की जगह है और आप इसे संगठित करने बैठे हैं। हर अच्छी कम्पनी के उपकरण की तरह इसके साथ भी एक निर्देश पुस्तिका आई है जो हरेक तार को कहाँ जोड़ना है इस विषय में निर्देश देती है। यदि आप उस निर्देश-पुस्तिका के आधार पर सब कुछ जोड़ें तो ज़रूर अपने उपकरण को चलने योग्य बना लेंगे और उसका भरपूर इस्तेमाल कर सकेंगे। परन्तु यदि आप इस पुस्तिका को एक तरफ रखकर अपनी समझ के अनुसार सब तारों को जोड़ने का प्रयास करेंगे तो संभव है कि आप इसमें कोई ऐसी गलती कर बैठें जिससे सारा उपकरण ही जलकर खाक हो जाए।

ठीक उसी प्रकार हमारा जीवन भी काफी जटिल है और बहुत सी पेचीदा परिस्थितियाँ हमारे सामने रोज आती हैं जिनका हमें सही निर्णय लेना ज़रूरी है अन्यथा हम बहुत बड़ी परेशानी में फंस सकते हैं (पाप और मृत्यु

के जाल में फंसे भी हुए हैं)। हमारे निर्माता ने हमारे जीवन के लिये भी एक निर्देश पुस्तिका दी है जिसका नाम बाइबल है। यदि अपने जीवन को हम अपने तरीके से चलाते हैं तो बहुत बार हानि उठाते हैं परंतु यदि हम, हमें दी गई निर्देश-पुस्तिका के अनुसार जीवन बिताएँ तो परमेश्वर का विशेष साथ हमें निरंतर मिलता है।

***

परमेश्वर ने अपने वचन में लिखा हरेक वायदा मेरे जीवन में पूरा किया है। मैं कई बार विश्वासहीन और अयोग्य बन गया पर वो मुझसे निरंतर प्रेम करता रहा।

आपके लिये भी ऐसा ही करने के लिये वो तत्पर है। आप अपने पुराने सारे पूर्वाग्रहों को आज छोड़ दें और विश्वास करें कि वो परमेश्वर का पुत्र मसीह है जो आपके पापों की कीमत चुकाने इस धरती पर इंसान बनकर आया, आपके खातिर मारा गया, गाड़ा गया और फिर जी उठा और जीवित स्वर्ग में उठा लिया गया। उसको अपने जीवन में स्थान दें और उसकी अगुवाई में जीवन व्यतीत करें।

चाहे आप पहले से विश्वास करते रहे हों या आपने अभी अभी प्रभु यीशु को अपनाने का निर्णय लिया हो, संभव है कि अब तक आप भरपूर जीवन खो रहे हों, पर आज और अभी से ही आप इसे पा सकते हैं। यदि आप परमेश्वर के साथ एक निर्णय करना चाहते हैं तो मेरे साथ प्रार्थना करें :

"प्रिय प्रभु यीशु, मैं सच में आपका आभारी हूँ कि आपने मुझे बताया है कि आप मुझसे प्रेम करते हैं। स्वामी, आपने अपने वचन में बहुत सी आशीषों का वर्णन किया है और मैं उनको पाना चाहता हूँ। मैं जान गया हूँ कि मैं पापी हूँ और आप पवित्र परमेश्वर हैं। मैं अपने पापी जीवन से पछताता हूँ और अपने पापों से मन फिराता हूँ। मुझे क्षमा कर दीजिए। मेरे जीवन में आइये और अपना पवित्र आत्मा मुझे दीजिए ताकि आज के बाद का जीवन में आपका आज्ञाकारी शिष्य बनकर जी सकूँ। आमीन।"

जाओ!

11 ईश्वरीय जीवन कैसे जीयें

"विश्वास द्वारा जीवन – बाइबल यही हमें सिखाती है।
परमेश्वर को जानने से पहले हम जो देखते हैं उसी पर विश्वास करते हैं परंतु आत्मिक जीवन पाने के बाद हम परमेश्वर में भरोसा करके अपने सारे निर्णय लेते हैं।"

मैं यहाँ आपको संक्षिप्त विवरण दे देता हूँ कि हम अब तक चलकर कहाँ तक आ पहुँचे हैं।

आओ

हमने पहली सीमा पार की जब हमने देखा कि परमेश्वर हमें आने के लिये बुलाहट देता है।

परमेश्वर ने हरेक आत्मा को बुलावा दिया है कि आएँ, उसे जानें और शांति तथा विश्वास का जीवन उसके साथ जीयें। बाइबल कहती है जब तक हम उसकी आवाज सुनकर उसके पीछे नहीं जाते तब तक हम उसके साथ बैर रखते हैं। एक भेड़ को अपने चरवाहे की आवाज़ को सुनना और पहचानना ज़रूरी है ताकि उसके पीछे चलकर सही गंतव्य तक पहुँच सके। जब तक हम परमेश्वर के अधीन नहीं आते तब तक हम शैतान के अधीन रहते हैं और नाश की ओर बढ़ते रहते हैं।

पाओ

दूसरी सीमा हमने पार की जिसमें हमने देखा कि हम परमेश्वर से कैसी कैसी आत्मिक और भौतिक आशीषें पा सकते हैं।

प्रभु यीशु ने हमारे उद्धार का काम एक ही बार मानव रूप लेकर अपने प्राणों से हमारे पापों की कीमत चुकाकर कर दिया है। हम इस उद्धार को विश्वास

के द्वारा पा सकते हैं। अपने मोक्ष की प्राप्ति के लिये हमें विश्वास के अलावा किसी भी और वस्तु की आवश्यकता नहीं है।

परमेश्वर हमें वैसे ही ग्रहण करता है जैसे हम हैं। वो हमें पहले अपना जीवन बदलने, आदतें बदलने, धार्मिक बन जाने या अच्छे कर्म करने के लिये नहीं बाध्य करता है। वो परमेश्वर है और हमारी उसके पवित्र मापदण्डों को पूरा न कर पाने अक्षमताओं को जानता है, इसलिये हमें हमारे निरर्थक कामों में कुण्ठित होने देने के बजाय हमारी जीवन की समस्याओं का हल वो स्वयं हमें देता है।

जाओ

इसके बाद बड़े संक्षेप में मैं आपको यह बताना चाहता हूँ कि परमेश्वर हमें किस प्रकार का जीवन जीने के लिये इस दुनिया में भेजता है। हो सकता है कि इस पुस्तक को पढ़ने से पहले से आप प्रभु यीशु को जानते हों या इस पुस्तक के पढ़ने के बाद आपने उनको अपने जीवन का स्वामी बनाया हो, पर संभवतया आप वैसा जीवन नहीं जी रहे थे जैसी हमारी बुलाहट है।

हमें क्या करना चाहिए – हमें प्रभु यीशु ख्रीस्त जैसा जीवन जीने का प्रयास करना चाहिए और परमेश्वर की समानता में निरंतर बदलते जाना चाहिए। इसके बाद यह कि हम 'जायें' और इस दुनिया में परमेश्वर की ज्योति को फैलाएँ। अपने व्यवहार तथा आचरण के द्वारा उसका स्वरूप दिखाएँ।

ईश्वरीय जीवन जीने के लिये हमारे दैनिक जीवन में हमें निम्न बातों का समावेश करना ज़रूरी है। उसके अलावा बहुत सी और भी बातें हैं जो वचन से, प्रार्थना से, मनन से और पवित्र आत्मा की अगुवाई से हम सीखते हैं मैं यहाँ नहीं लिख रहा हूँ। फिर भी निम्न बातों से आप शुरूआत कर सकते हैं:

- परमेश्वर से बात करें – रोज़ प्रार्थना करें
- आत्मा को भोजन दें – हर दिन बाइबल पढ़ें
- विश्वास में जड़ पकड़ें – हमेंशा संगति में रहें
- प्रेम बाँटें – अपने विश्वास की गवाही दें

***

हर दिन प्रार्थना

प्रार्थना करना और कुछ नहीं अपितु परमपिता परमेश्वर से बातचीत करना है। उसे अपना अंतरंग मित्र, प्रेमी पिता, सर्वज्ञानी गुरू तथा सृष्टिकर्ता ईश्वर समझते हुए व्यक्तिगत तौर पर उससे बातचीत करना ही सच्ची प्रार्थना है।

प्रभु यीशु ने स्वयं अपने जीवन से हमें दिखाया कि कैसे वो हर रात और सुबह जल्दी ही प्रार्थना के लिये सुनसान स्थानों में चले जाते थे ताकि अकेले में परमेश्वर से वार्तालाप कर सकें। इंसान के रूप में रहते हुए वह अपने ईश्वरीय शक्तियों का उपयोग नहीं करते थे परंतु पिता की संगति के कारण वे बड़े बड़े चमत्कार कर देते थे।

क्या वो परमेश्वर से कुछ पाने के लिये प्रार्थना करते थे? नहीं।

परंतु अपने प्रेम के कारण वो परमेश्वर से मिलने के लिये रोज प्रार्थना में समय बिताया करते थे। हम भी यदि प्रार्थना में समय व्यतीत करें तो हम भी न सिर्फ वो सब कर सकते हैं जो प्रभु यीशु ने मानव रूप में किया बल्कि उससे भी बड़े बड़े काम कर सकते हैं, ऐसा स्वयं प्रभु यीशु का कहना है। प्रार्थनाओं में बड़े बड़े चमत्कार करने की शक्ति है।

प्रार्थना करना सिर्फ हमारा निर्णय नहीं है अपितु यह परमेश्वर की हमारे लिये इच्छा है।

📖 *"निरंतर प्रार्थना में लगे रहो। हर बात में धन्यवाद करो; क्योंकि तुम्हारे लिये मसीह यीशु में परमेश्वर की यही इच्छा है।"*

[1 थिस्सलुनीकियों 5:17, 18]

हमें परमेश्वर को पिता की तरह देखकर उसका पवित्र भय मानने की ज़रूरत है, उसको स्वामी की तरह देखकर उसके आज्ञाकारी दास बनने की ज़रूरत है, प्रभु देखकर उसकी आराधना करने की ज़रूरत है, सच्चा साथी देखकर निरंतर उसमें भरोसा रखने की ज़रूरत है। वो अलग अलग रूप में निरंतर हमारे साथ रहता है बस हमें उससे बात करने की आवश्यकता है।

हमें एकांत में परमेश्वर के पास जाने की जरूरत है ताकि उसकी सामर्थ और उसकी उपस्थिति का आनंद उठा सकें। हो सके तो मैं अपना हर दिन प्रभु

के साथ बातचीत कर शुरू करता हूँ और रात में उसका धन्यवाद करके खत्म करता हूँ। दिन में हर समय उसको देखता हूँ और उसकी उपस्थिति का अहसास करता रहता हूँ।

मेरा मानना है कि सुबह उठकर इस दुनिया से बात करने से पहले हमें परमेश्वर से बात करने की आवश्यकता है। कई लोग अखबार पढ़कर अपना दिन शुरू करते हैं तो कुछ और सुबह के व्यायाम से। इनमें से कुछ भी गलत नहीं है पर मेरे विचार में परमेश्वर को पहला स्थान देने के बाद ये सब काम करना बेहतर है। इसके बाद, पूरे दिन संभालने के लिये हर रात उसका धन्यवाद करना ज़रूरी है। रोज ही हम किसी न किसी प्रकार कुछ बातें ऐसी कर देते हैं जो परमेश्वर को पसंद नहीं है, अपनी ऐसी गलतियों की क्षमा हर रोज़ मांगना भी निहायत ज़रूरी है।

जब हम प्रार्थना करते हैं तो परमेश्वर हमें शांति, प्रेम और आनंद देता है। वो हमारी हर आवश्यकता की पूर्ति करता है और हर परेशानी से हमें छुड़ाता है। वो ही आत्माओं को शैतान के चंगुल से छुड़ाता है। हम इस बात के लिये अपने परिवार और अपने जानने वालों के लिये निरंतर दुआ कर सकते हैं।

***

हर दिन बाइबल अध्ययन

प्रभु यीशु ने कहा –

📖 *"यदि तुम मुझ में बने रहो और मेरी वचन तुम में बना रहे, तो जो चाहो माँगो और वह तुम्हारे लिये हो जाएगा।"*

[युहन्ना 15:7]

यह बात मैंने अपने विश्वासी जीवन की शुरूआत से सीखी। मुझे बताया गया था कि परमेश्वर का वचन (बाइबल) हमारी आत्मा का भोजन है।

सामान्यतया हम अपने शरीर की अभिलाषाओं को पूरा करके उसे काफी भोजन देते हैं, लेकिन अपनी आत्मा को भोजन नहीं देते हैं।

यदि हम अपने शरीर को तो भोजन दें पर आत्मा को नहीं तो फिर शरीर तो मज़बूत होता चला जाता है परंतु आत्मा क्षीण होती चली जाती है। और

फिर यदि कभी आत्मा और शरीर में किसी परीक्षा की घड़ी में द्वंद होता है तो यह बात बहुत आसानी से समझ में आनी चाहिए कि क्यों आत्मा हार जाती है और परमेश्वर के विरुद्ध हम पाप कर बैठते हैं।

कमज़ोर आत्मा परीक्षा में खड़ी नहीं रह पाती और पाप में गिर जाती है।

कई बार हम बाइबल पर आधारित बहुत सी किताबें तो पढ़ते हैं जो कि प्रसिद्ध लेखकों और प्रचारकों के द्वारा लिखी गई हैं और जो बाइबल के ही बारे में सिखाती हैं पर बाइबल को नहीं पढ़ते हैं। यह ऐसा है जैसे कि खाना न खाना, परंतु खाने के बारे में ऐसी किताबें पढ़ना जो अच्छे रसोईयों के द्वारी लिखी गई हों। क्या खाना खाये बिना तृप्ति मिल सकती है?

मैं इस बारे में आपको सचेत करना चाहता हूँ। मैं आपको सलाह दूँगा कि आप बाइबल पढ़ने को अपने जीवन का एक अंतरंग भाग बना लें। अपने आप को हमें शुरू में थोड़ा अनुशासित करना पड़ता है लेकिन धीरे धीरे यह हमारे स्वभाव में आ जाता है और हमें इसके लिये कोई अतिरिक्त मेहनत नहीं करनी पड़ती है। हमें परमेश्वर के वचन में जड़े जमानी बहुत ज़रूरी है ताकि हम विश्वास में बढ़ते चले जाएँ। हमारा यही विश्वास हमारी ढाल बन जाता है कि हम शैतान की सारी परीक्षाओं का सामना आसानी से कर सकें।

***

विश्वास में जड़ पकड़ना

रोमियों 10:17 में बाइबल इस प्रकार कहती है –

📖 *"अतः विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है।"*

जैसे बाइबल पढ़कर हम परमेश्वर की आवाज को सुन सकते हैं, जो कि बहुत महत्वपूर्ण भी है, उसी प्रकार उन लोगों से परमेश्वर के वचन के द्वारा सुनना जो कि विश्वास में मज़बूत हो चुके हैं, आवश्यक है ताकि विश्वास के सिद्धान्तों को हम और गहराई से समझ सकें और विश्वास में मज़बूत होते चले जाएँ।

इसी कारण परमेश्वर हमसे चाहता है कि हम एक पवित्र आत्मा से भरी हुई कलीसिया (चर्च) में जाकर हफ्ते दर हफ्ते (या हो सके तो ज्यादा भी) संगति करें।

📖 *और एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना ना छोड़ें, जैसे कि कितनों की रीति है, पर एक दूसरे को समझाते रहें; और ज्यों ज्यों उस दिन को निकट आते देखो त्यों त्यों और भी अधिक यह किया करो।*

[इब्रानियों 10:25]

हम चर्च इसलिये नहीं जाते कि वहाँ हमें ईश्वर मिलेगा, क्योंकि वो तो हमारे निमंत्रण पर हमारे जीवन में ही आ चुका है। परमेश्वर किसी भी आराधना के स्थान में नहीं रहता बल्कि वो तो सर्वव्यापी परमेश्वर है। चर्च में तो हम साथी विश्वासियों की गवाहियाँ सुनते हैं, प्रवचन सुनते हैं ताकि बाइबल की गूढ़ बातें सीख सकें। वहाँ हम साथी विश्वासियों के साथ मिलकर परमेश्वर की आराधना करते हैं। वहाँ हम एक दूसरे से बात कर एक दूसरे को उत्साहित करते हैं और प्रार्थना भी करते हैं।

जैसे हम अपने शरीर की माँसपेशियाँ बनाने के लिये कसरत करते हैं, ठीक उसी प्रकार हमें अपनी आत्मा को मज़बूत करने के लिये विश्वास की कसरत करनी ज़रूरी है।

कुलुस्सियों 2:6, 7 में लिखा है -

📖 *"अतः जैसे तुम ने मसीह यीशु को प्रभु करके ग्रहण कर लिया है; वैसे ही उसी में चलते रहो, और उसी में जड़ पकड़ते और बढ़ते जाओ; और जैसे तुम सिखाए गए वैसे ही विश्वास में दृढ़ होते जाओ, और अधिकाधिक धन्यवाद करते रहो।"*

***

उसके प्रेम का प्रचार करना

बाइबल बताती है कि यीशु मसीह इस दुनिया का न्याय करने के लिये जल्द आने वाले हैं। विचार कीजिये – आपको तो परमेश्वर के प्रेम का सुसमाचार मिल गया और शायद आपने विश्वास कर भी लिया या अब कर लेंगे, मगर

आपके परिवार और अन्य प्रियजनों का क्या होगा, उनको कौन यह रास्ता बताएगा, वो अपना अनन्त जीवन कहाँ बितायेंगे?

मैं आपके परिवार को नहीं जानता। शायद कोई पास्टर भी वहाँ नहीं पहुंच सके, पर आप तो हैं। क्या आप नहीं चाहेंगे कि वे भी मोक्ष पाएँ और स्वर्ग में प्रवेश करने की आशा उनको भी मिल जाए?

हमारा हमारे परिवार, दोस्तों, सहकर्मियों (या सहपाठियों) और हमारे समाज के दबे कुचले लोगों के प्रति प्रेम क्या हमें दुहाई नहीं देता कि हम स्वयं उन तक यह बात पहुँचायें?

बाइबल हमारा आह्वान करती है कि हम परमेश्वर के मोक्ष के विशाल कार्य में सहभागी हो जाएँ ताकि आत्माओं को विनाश की कगार से खींचकर जीवन की ओर ले आयें।

इसी उद्देश्य को लेकर प्रभु यीशु हमारे बीच में इंसान बनकर आये जैसा कि लूका रचित सुसमाचार में (लूका 19:10) लिखा भी है -

📖 "*क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूंढने और उन का उद्धार करने आया है।*"

फिर युहन्ना 20:21 में प्रभु यीशु ने फिर सिखाया –

📖 "*यीशु ने फिर उन से कहा, तुम्हे शान्ति मिले; जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हे भेजता हूँ।*"

और मत्ती 28:19, 20 में वायदा किया -

📖 "*इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रआत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो में ने तुम्हे आज्ञा दी है, मानना सिखाओ; और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूँ।*"

प्रभु यीशु ने हमें आश्वासन दिया है कि स्वर्ग और पृथ्वी पर सारा अधिकार उनका है और फिर हमें आज्ञा दी है कि हम जाकर उसके प्रेम का सुसमाचार

सभी लोगों को बतायें और अपने चरित्र और जीवन से उसका स्वरूप दिखायें।

बाइबल बताती है कि यह सुसमाचार हम अपनी सामर्थ्य में नहीं सुनाते बल्कि यह परमेश्वर का उद्देश्य है और वही इसमें हमारी सहायता करता है -

📖 *"परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी के छोर तक मेरे गवाह होगे।"*

[प्रेरितों के काम 1:8]

प्रभु यीशु ने चेले बनाने की आज्ञा दी है धर्म परिवर्तन कराने की नहीं। उसने सच्चे मसीही विश्वास का प्रचार करने और उसका सच्चा प्रतिबिंब अपने जीवन से दिखाने के लिये हमें कहा है। बाकि काम वो स्वयं करेगा कि अपने खोजने वालों को मिले और उनकी आत्मिक प्यास बुझाए। हमें तो सिर्फ उसके आज्ञाकारी बने रहने की आवश्यकता है।

***

प्रभु यीशु मसीह में विश्वास कर लेने के बाद मैंने अपने चारों ओर देखा तो पाया कि कितने ही लोग श्रापित जीवन जी रहे थे और भटकते हुए सनातन जीवन का मार्ग खोज रहे थे। मैंने सोच लिया कि मुझे उनको दिखाना है कि परमेश्वर जिसने मेरा जीवन परिवर्तन किया वो उनसे भी प्रेम करता था और उनका जीवन भी आशीषों से भर सकता था। मैं अपने नये विश्वास के बारे में सभी को बताने लगा था। मेरे पास बाइबल का ज्ञान नहीं था पर मैं सिर्फ अपने प्रेम, विश्वास तथा अनुभवों की ही गवाही देता था।

जब हम अपने आप को परमेश्वर को दे देते हैं तो वो हमारे द्वारा बड़े आश्चर्यचकित कर देने वाले काम करता है। मैं रह रहकर अपने आपको बताता रहता हूँ कि मैं तो मिट्टी ही था, परमेश्वर ने मुझे अपने काम का बर्तन बनाया है और जैसे वो चाहे इसे इस्तेमाल कर सकता है क्योंकि उसने अपने प्राणों की कीमत चुकाकर मुझे खरीद लिया है। यह बर्तन की नहीं परंतु उसके बनाने वाले और इस्तेमाल करने वाले के गुण हैं जिनकी प्रशंसा हो, क्योंकि वही महत्वपूर्ण है।

मैं यहाँ एक उदाहरण देकर बताना चाहता हूँ कि परमेश्वर किस प्रकार हमें जहाँ भी हम हों, हमें अपनी महिमा के लिये इस्तेमाल करता है, और बदले में हमें ही आशीष भी दे सकता है। आप ये भी देखेंगे कि सुसमाचार बताकर किसी को मसीह के प्रेम में लाने के लिये हमें समय देने, धैर्य रखने और विश्वास के साथ पवित्र प्रेम दिखाने की आवश्यकता पड़ती है।

***

गवाहियों द्वारा उद्धार

(उदाहरण – प्रेरणा का उद्धार)

सन 1998-99 में, रूड़की में अपनी पढ़ाई के दौरान, मुझे मौका मिला कि अपनी एक सहपाठिन के साथ मैं प्रभु के प्यार की खुशखबरी बाँट सका। उसका नाम प्रेरणा है। वो बौद्ध परिवार से सम्बंध रखती थी। यूँ तो बौद्ध धर्म के मानने वाले मध्यम मार्ग पर चलते हुए निर्वाण प्राप्त करने में विश्वास करते हैं और मूर्ति-पूजा नहीं करते लेकिन वो मन्दिर में पूजा भी किया करती थी और व्रत भी रखती थी।

मेरा जीवन सिद्ध (परफेक्ट) नहीं था और न ही मैं इस बात का इंतज़ार कर सकता था, बस मैंने स्पष्ट रीति से अपना विश्वास और उद्धार की परमेश्वर की योजना के बारे में उसे बताया।

मेरी हरेक बात को वो बड़े धैर्य के साथ सुनती थी पर सही मायने में किसी बात पर विश्वास नहीं करती थी। वो मेरे विश्वास की कद्र करती थी पर उसमें खुद विश्वास करने की उसकी कोई इच्छा नहीं होती थी। उसकी सोच थी कि यीशु मसीह ईसाईयों के ईश्वर हैं जैसे कि उसके अपने कई भगवान थे और हम सबको अपने अपने तरीके से ईश्वर की आराधना करने की स्वतंत्रता है।

वो ये भी सोचती थी कि यीशु अन्य सभी ईश्वरों में से एक ईश्वर थे और मानती थी कि चाहे उसे किसी भी नाम से पुकारा जाए, राम, अल्लाह या यीशु, बात एक ही है। मैं नाम के विषय में तो बहस नहीं करता था परंतु मेरी प्रार्थनाओं के उत्तर मिलने की गवाही से और प्रभु के निरंतर मेरे साथ होने के अलग अहसास से मैंने उसे अंतर दिखाया। मैंने उसे बताया कि ईश्वर एक ही है और हम अपने बनाये तरीकों से उस तक नहीं पहुँच सकते

अपितु प्रभु यीशु ही एकमात्र मार्ग है जिनके द्वारा उस तक पहुँचा जा सकता है क्योंकि सिर्फ यीशु मसीह ने ही हमारे पापों की कीमत चुकाई है।

मैंने उसे बताया कि ये धर्म की बात नहीं थी बल्कि परमेश्वर की बात थी। यहाँ तक कि प्रभु यीशु भी धर्म में रूचि नहीं लेते थे जबकि उनका जन्म यहूदी परिवार में हुआ था। बल्कि वो उन पाखण्डी धर्मगुरूओं के तरीकों का खण्डन करते थे जो कहते कुछ और थे और करते कुछ और।

मैं हॉस्टल में उसके लिये प्रार्थना किया करता था।

मेरी बातों की तुलना में, वह परमेश्वर में मेरी अटूट आस्था से प्रभावित होती थी थी और सोचती थी कि कैसे मेरी प्रार्थनाओं के उत्तर मिलते थे। उसने भी एक बार बिना मुझे बताये यीशु मसीह के नाम से प्रार्थना की और उसे तुरंत उत्तर मिले और उसे पता चल गया कि प्रभु यीशु प्रार्थनाओं के उत्तर देने वाले ईश्वर है। और भी कुछ ऐसी घटनाएँ हुईं जिनसे उसे विश्वास हो गया कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है और स्वयं परमेश्वर है।

हम लोग हर रोज रात 8 बजे मिलकर मेरी गिडियन बाइबल से पढ़ने लगे और साथ साथ में विश्वास में बढ़ने लगे।

सितम्बर 2000 में उसने पानी का बपतिस्मा लेकर अपने विश्वास तथा जीवन परिवर्तन की गवाही दी और पुराने तौर-तरीके छोड़कर प्रभु यीशु को विश्वास के द्वारा अपने जीवन का स्वामी करके स्वीकार किया।

आज वो आत्मा में नया जन्म पाई हुई प्रभु यीशु की विश्वासी है जो अपने ह्रदय, बुद्धि और बल से परमेश्वर से प्रेम करती है। अब वो मेरी पत्नी है और मैं प्रभु का धन्यवाद करता हूँ कि परमेश्वर की दया से हम एक अच्छा, संतुलित मसीही परिवार बन सके हैं जिससे कई लोगों को प्रेरणा मिलती है।

***

प्रेरणा और मै मसीही विश्वास में साथ साथ बढ़े। ऊपर लिखे सारे सिद्धांत हमने साथ ही सीखे और अपने जीवन में लागू किये। परमेश्वर हमेंशा हमारे साथ दयावंत रहा है और अपनी विश्वासयोग्यता के अनुसार हमारे जीवन में आश्चर्यकर्म (चमत्कार) करता रहा है तथा अपनी महिमा हर प्रकार से उसने

हमारे जीवन में प्रकट की है। उसने हमें सिखाया कि कैसे हम उसकी नजर से सभी बातों को देख सकें और सही निर्णय ले सकें।

हमारे घर का यह अलिखित नियम है कि हमारे घर में आने वाला हरेक व्यक्ति सुसमाचार सुनकर ही बाहर जाए। चाहे वह व्यक्ति हमारा सहकर्मी हो, रिश्तेदार हो, दूधवाला हो, पानी पहुँचाने वाला, सफाईवाला, अख़बारवाला, सफाईवाली महरी या पासपोर्ट पूछताछ के लिए आया पुलिसवाला, हमने सबको अपना प्रेम दिखाया और परमेश्वर का मार्ग बताया। हम सोचते हैं कि उनमें से कईयों को (जो विश्वास करेंगे) हम स्वर्ग में देख पायेंगे।

हमने अपने घराने में भी आत्मा के उद्धार का सुसमाचार पहुँचाया है और मसीह के प्रेम के बारे में बताने में हम कभी शरमाते नहीं हैं। कुछ तो विश्वास करने लगे हैं और कुछ अभी मशक्कत कर रहे हैं कि इसपर विश्वास कर सकें। कुछ बेअसर हैं तो कुछ विरोध में, पर हम आश्वस्त हैं कि परमेश्वर अपनी करूणा में सबको स्वर्ग के राज्य के लिए तैयार करेंगे। हम निरंतर प्रार्थना करते हैं और अपनी जीवन की गवाहियां बताते रहते हैं।

हम अपना काम करें और वो अपना करेगा। हमारा परमेश्वर महान है और सब बातों में सामर्थी है। परमेश्वर हमारी प्रतीक्षा कर रहा है। हमने सेंतमेंत (मुफ्त में) पाया है तो आइये, हम सेंतमेंत दें भी।

12 निष्कर्ष

प्रिय पाठक, प्रभु यीशु मसीह जल्दी ही फिर आ रहे हैं। मैं यह इसलिये जानता हूँ क्योंकि प्रभु यीशु ने यह सारी बातें पहले से ही अपने चेलों को बता दी थीं और वे बाइबल में लिखी हैं। अपने चेलों के साथ एक बार के वार्तालाप में चेलों के पूछने पर उन्होंने बताया की अंत समय (यीशु मसीह के फिर से आने से तुरंत पहले का समय) को पहचानने के कुछ चिह्न हैं जिन्हें देखकर हम पहचान सकते हैं कि उसका आना निकट है। आपको यह जानकर आश्चर्य हो सकता है कि वे निशान अब स्पष्ट रीति से प्रकट होने लगे हैं।

📖 *तुम लड़ाइयों और लड़ाइयों की चर्चा (अफवाह) सुनोगे, तो घबरा न जाना क्योंकि इन का होना अवश्य है, परन्तु उस समय अन्त न होगा। क्योंकि जाति पर जाति, और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा, और जगह जगह अकाल पड़ेंगे, और भुकम्प होंगे। ये सब पीड़ाओं का आरम्भ होंगी।*

[मत्ती 24:6-8]

यदि ऊपर लिखे यीशु-वचन को आपने गौर से पढ़कर उस पर आज की दुनिया की परिस्थिति के परिपेक्ष्य में विचार किया है तो आप खुद ही समझ सकते हैं कि हमारे पास कितना कम समय है। हम सही समय तो नहीं जानते लेकिन ये ज़रूर समझते हैं कि यीशु मसीह का आना बहुत निकट है।

प्रभु यीशु दूसरी बार मानव रूप में नहीं आने वाले हैं और न ही उनके आने का उद्देश्य सुसमाचार बताना या विश्वास दिलाना है। वह न्याय के लिये आने वाले हैं। उनके आने के बाद सच्चे विश्वासी उनके साथ स्वर्ग में चले जाएँगे और जो पीछे रह जायेंगे उनके लिये सिर्फ पछताना और न्याय का इंतजार ही बाकी रह जाएगा।

***

दूर से सभी धर्म और विश्वास एक जैसे ही दिखते हैं पर जब हम नज़दीक जाते हैं और गौर करते हैं तो उनके चरित्र और शिक्षाओं में बहुत से अंतर हमको दिखाई देने लगते हैं। ईसाई धर्म भी कोई अपवाद नहीं है, परंतु मैं ईसाई धर्म के लिये नहीं मसीही विश्वास के लिये आपको उत्साहित कर रहा हूँ।

हमें 'परमसत्य' की खोज करने की और उसमें ही विश्वास करने की आवश्यकता है। मैं आपको उत्साहित करता हूँ कि आप सभी गुरुओं और कथित ईश्वरों के जीवन से तथा उनकी शिक्षाओं से प्रभु यीशु मसीह के जीवन की तथा उनकी शिक्षाओं की तुलना कीजिए और जो आपको सही लगे उसका चुनाव कीजिए। आप यीशु मसीह के जैसा जीवन जी सकते हैं। उनका अनुसरण करके आप कभी धोखा नहीं खाएँगे और न ही कभी आपको खेद होगा।

यदि आप अपने सारे धार्मिक रीतिरिवाजों और संस्कारों का पालन करके थक चुके हैं और अभी तक मोक्ष के बारे में आपको कोई आश्वासन नही है, तो थोड़ी रुकिए और विचार कीजिए। सालों तक निरर्थक प्रार्थनाएँ कर करके आप थक चुके हैं तो यीशु मसीह के पास आइये।

मैं आपको एक नम्र चुनौती दे सकता हूँ कि जब आप सब जगह दुआ करके थक चुके हों और कोई बात न बने तो आप यीशु मसीह से विश्वास के साथ प्रार्थना करके देखें। मैं जानता हूँ कि आपको अपनी प्रार्थना का उत्तर ज़रूर मिलेगा। वो आपसे प्यार करते हैं।

आप प्रभु यीशु पर विश्वास कीजिए। उनपर विश्वास कर आप एक शांति से भरी, आशीषित और भरपूर जिन्दगी जी सकते हैं जो पहले से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण होगी और ऐसा करके आप अपने इस जीवन का उद्देश्य पूरा कर सकेंगे। शारीरिक मृत्यु के बाद के जीवन के लिये भी आपके पास एक आशा होगी।

***

अगर आपने विश्वास किया है और आप नये जन्म का अनुभव पाये हुए विश्वासी हैं तो भी अपनी जिन्दगी परमेश्वर के सुपुर्द कर दीजिए और संपूर्ण विश्वास और आज्ञाकारिता में अपना जीवन बिताइये। पाप से बचे रहिये और

अगर हो सके तो उद्धार के बड़े काम में शामिल हो जाइए ताकि परमेश्वर का राज्य जल्द ही आये। सच में, फसल तो बहुत है पर काटने वाले बहुत थोड़े हैं।

मैंने बाइबल में इस बारे में एक सिद्धांत पाया है कि हम अपने से शुरू करें और फिर अपनों तक और फिर दुनिया के छोर तक इस सुसमाचार को पहुँचाएँ (प्रेरितों के काम 1:8)।

यह सिद्धान्त मैंने अपनी हवाई यात्रा में भी कई बार देखा। उसमें बताया जाता है कि किसी आपातकालीन परिस्थिति में ऑक्सीजन की कमी हो जाने पर मास्क ऊपर के केबिनेट से लटक जाते हैं। यात्री किसी की भी मदद करने से पहले अपने आप को सुरक्षित करें, ऐसा सिखाया जाता है। माँ-बाप भी पहले अपने आप को सुरक्षित करने के बाद ही अपने बच्चों को मास्क लगाने में मदद करें। यह बड़ी अजीब बात लग सकती है लेकिन सच है कि यदि हम अपने आप को पहले मास्क लगाकर सुरक्षित न करें तो अपना दम घुटने पर न तो हम अपनी मदद कर सकते हैं और न दूसरों की।

मसीही विश्वास में भी हमें पहले खुद विश्वास करना ज़रूरी है। यह बहुत ज़रूरी है कि हम स्वयं पहले प्रभु यीशु में विश्वास करें और सनातन जीवन प्राप्त करें। फिर अपने परिवर्तित जीवन की गवाही से, प्रार्थनाओं से और वचन के द्वारा अपने परिजनों को, रिश्तेदारों को, अपने सहकर्मियों को और मित्रों को सुसमाचार सुनाएँ और उन्हें भी पाप क्षमा तथा अनंत आत्मिक जीवन की ओर आगे बढ़ाएँ। इसके बाद हम अपने शहर, राज्य, देश और दुनिया के छोर छोर तक जाकर परमेश्वर के प्रेम का प्रचार कर सकते हैं।

***

इस के साथ हम अपनी यात्रा के अंतिम पड़ाव में आ पहुंचे हैं। मैं आशा करता हूँ कि आपने मेरे साथ इस यात्रा में आनंद उठाया होगा। चलिए, हम इसे एक सुखद मोड़ पर खत्म करें और आगे के लिए परमेश्वर के साथ भरपूर जीवन जीने का निर्णय लें। प्रभु आपको आशीष दें।

आइए, हम साथ में प्रार्थना करें –

"प्रिय प्रभु यीशु, हम आपका धन्यवाद करते हैं कि आपने हमें इस क़िताब को साथ पढ़ने का मौका दिया। हम आपकी महानता के कारण आपकी जय-जयकार करते हैं। प्रभु, पाप क्षमा कर नया जीवन दीजिए ताकि हम बहुतायत के जीवन का अनुभव कर सकें। जैसे अब हमने आपको जान लिया है तो हम पाप में तो मर गए पर आप में जीवित हैं। कृपा कर हमारे जीवन का नियंत्रण अपने हाथों में ले लीजिए ताकि हम विश्वास में बढ़ते चले जाएँ और आपकी महिमा करें। प्रभु, हम आपको स्वर्ग में देखना चाहते हैं और स्वर्गदूतों के साथ आपकी आराधना करना चाहते हैं। आपका अनुग्रह और विश्वास हमें दीजिए जिससे हम आपकी आशीषों से भरा एक सार्थक जीवन जी सकें। आमीन।"

परिशिष्ट

परिशिष्ट- प्रश्न और भ्रांतियां

मैं यहां कुछ ऐसे प्रश्नों के जवाब देना चाहता हूँ जो कि भ्रांतियों के रूप में फैले हुए हैं। ऐसे प्रश्न उस समय दिमाग में आते हैं जब हमें प्रभु यीशु का सुसमाचार सुनने को मिलता है और कभी कभी तो तब जब हमें यकीन भी हो जाता है कि यीशु मसीह ही सच्चा परमेश्वर है फिर भी उसके पीछे चलने का निर्णय लेने में हमें दिक्कत महसूस होती है। कई बार यह निर्णय हम नहीं ले पाते क्योंकि हमारे मन में कई सवाल उठते हैं पर उनके उत्तर हमें नहीं मिलते हैं या फिर उनके गलत जवाब हम बाइबल के अलावा अन्य स्त्रोतों से सुनते रहते हैं।

बाइबल से परमेश्वर द्वारा मुझे व्यक्तिगत तौर पर सिखाई गई सच्चाईयों के अनुसार, मैं इन प्रश्नों का उत्तर देने की कोशिश कर रहा हूँ।

इससे पहले कि आप आगे पढ़ना शुरू करें, एक और बात को समझना ज़रूरी है कि आगे लिखे उत्तर सामान्य ज्ञान की तरह ही इस्तेमाल किये जाने चाहिए। ये किसी भी तरह से बाइबल का या मसीही विश्वास का एकमात्र उपाय नहीं है बल्कि ये सब मेरे अनुभव, समझ और पवित्र आत्मा की अगुवाई से लिए गए निर्णयों का सारांश है जो परिस्थितियों को समझने में और उसमें सही निर्णय लेने में आपकी सहायता करेगी। ठीक निर्णय लेने के लिए हरेक परिस्थिति में आपको भी परमेश्वर के वचन – बाइबल, अपने विवेक, प्रार्थना और पवित्र आत्मा की नेतृत्व का ही सहारा लेना होगा।

मैंने जान लिया है कि यीशु मसीह ही जीवित परमेश्वर है। मैंने उसकी प्रार्थनाओं के उत्तर देने की सामर्थ को भी देखा है। पर मैं उसका अनुसरण करने का निर्णय नहीं ले सकता/सकती। मेरे परिवार वाले, रिश्तेदार और मित्र क्या कहेंगे?

हाँ। यदि धर्म की नज़र से देखा जाए तो सच में यह बहुत कठिन कार्य है। परंतु यदि आप इसे व्यक्तिगत सोच (और निर्णय) की नज़र से देखेंगे तो आप पाएँगे कि आप सिर्फ परमेश्वर से प्रेम करने की बात कर रहे हैं, धर्म

परिवर्तन की नहीं। सकारात्मक जीवन परिवर्तन के आपके निर्णय को कोई भी गलत नहीं ठहरा सकता। और सोचिए कि यदि आप परमेश्वर से प्रेम करने लगें और आपकी सारी बुरी बातें खत्म हो जाएँ और आप एक साफ सुथरा और आशीषों से भरा जीवन बिताने लगें तो कौन आपका विरोध करेगा?

मैं दो बातें आपको और बताना चाहता हूँ।

पहली ये कि हमारा उद्धार (मोक्ष) व्यक्तिगत चुनाव है; जैसे किसी खास तरह का भोजन खाना या खास तरह के रंग का कपड़ा पहनना। इसमें हमारी इच्छा और निर्णय ही सर्वोपरि होते हैं। वैसे भी भारत के संविधान में दिये गये मौलिक अधिकारों में से यह भी एक है।

भरोसा कीजिए, न तो कोई आपके साथ पैदा हुआ था और न ही कोई आपके साथ मरेगा। न ही कोई न्याय सिंहासन के सामने आपके बदले पापों का लेखा जोखा देगा। हम सब को यह अकेले ही करना है।

दूसरी बात ये कि जब हम गलत (ईश्वर, परिवार और समाज को नापसंद) काम करते हैं – जैसे शराब और सिगरेट का सेवन करना, वासनामयी विचार करना, झूठ बोलना, घमण्ड करना इत्यादि, तो क्या हम किसी से पूछकर करते हैं। नहीं, वो सब बातें हम अपने आप करने लगते हैं। तो फिर ईश्वरीय निर्णय लेने में किसी से डरने की या पूछने की क्या ज़रूरत है? सोचिए, यदि आप उद्धार पा लें, तो शायद औरों को भी नर्क की ओर जाने से रोक सकें।

कोई नर्क में नहीं जाना चाहता परंतु अनजाने में सब उसी तरफ जा रहे हैं। जब तक कि हम अपना जीवन जीने के मूल्य, उद्देश्य, तरीका तथा विश्वास न बदल लें, हम सबकी एक ही नियति है।

मेरे सभी दोस्तों, सहकर्मियों और रिश्तेदारों की ओर से आये विरोध को सहते हुए जब मैंने निरंतर विश्वास किया तो मेरे परिवर्तित जीवन को देखकर कितने ही जीवन बदल गये और आज परमेश्वर से प्रेम करते हैं तथा शांतिमय-सुखमय जीवन जी रहे हैं। जो विश्वास नहीं भी करते, वे भी मेरे जीवन के मूल्यों और आदर्शों के कारण मेरी इज़्ज़त ज़रूर करते हैं।

परमेश्वर यही आपके लिए भी कर सकता है। ज़रूरत है तो सिर्फ इस बात की कि हम आज्ञाकारिता के साथ परमेश्वर पर विश्वास कर जीवन यापन करें।

क्या यीशु मसीह में विश्वास करने के बाद हमें अपना नाम बदलना होगा?

नहीं! परमेश्वर व्यर्थ में नाम बदलने का इच्छुक नहीं है।

हमने अपना नाम नहीं बदला है। मेरा नाम बृजेश है, मेरी पत्नी का नाम प्रेरणा है और हमारा बेटा प्रांजल है।

हालांकि बाइबल में कई ऐसे संदर्भ हैं जिनमें परमेश्वर ने नाम परिवर्तित किये, परन्तु उन सभी जगहों पर परमेश्वर का उद्देश्य सिर्फ नाम बदलना नहीं था अपितु ये कि वो विश्वास के और बोलचाल के नये आयाम सिखाये। उसने ऐसा कई जगहों पर किया जैसे कि अब्राम का नाम अब्राहम, सारै का नाम सारा, शमौन का नाम पतरस (पीटर), याकूब का नाम इस्रायल आदि। यह सब उसने बाइबल के एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त को समझाने के लिए किया।

📖 *"देख, मेरी वाचा तेरे साथ बन्धी रहेगी, इसलिये तू जातियों के समूह का मूलपिता हो जाएगा। इसलिये अब से तेरा नाम अब्राम न रहेगा, परन्तु तेरा नाम अब्राहम होगा; क्योंकि मैं ने तुझे जातियों के समूह का मूलपिता ठहरा दिया है। मैं तुझे अत्यन्त फलवन्त करूँगा, और तुझ को जाति जाति का मूल बना दूँगा, और तेरे वंश में राजा उत्पन्न होंगे।*

[उत्पत्ति 17:4-6]

उपरोक्त वचन में बाँझ दम्पत्ति को जातियों के माता-पिता बनाने का वायदा कर उनको एक दूसरे को ऐसे ही नामों से पुकारने की बात सिखाई। परमेश्वर ने नाम इसलिए बदले ताकि हम सीख सकें कि परमेश्वर हमारे बोलचाल में, हमारे विचारों में तथा हमारे विश्वास में परिवर्तन करना चाहता है ताकि हम नकारात्मक विचारों और अल्पविश्वास को छोड़कर सकारात्मक हो जाएँ। परमेश्वर का विशाल विश्वास पाएँ और उसी के द्वारा जीवन बिताएँ।

यह किसी भी तरह इस बात की ओर इंगित नहीं करता है कि हम अपना नाम बदलें। बाइबल कहती है कि परमेश्वर हमें हमारे नाम से जानता है और उसने हमारा नाम जीवन की किताब में लिखा है, तो फिर क्यों इसे बदलें।

📖 *...तुम्हारे नाम स्वर्ग पर लिखे हैं।*

[लूका 10:20]

वो हमारे दिलों (मनों) को जानने वाला ईश्वर है और हमारे विश्वास तथा व्यवहार को भी जानता है। नाम बदलने जैसे अवांछित विषयों में समय खराब करने के बजाय यह बेहतर है कि हम अपने विश्वास को मज़बूत करने की दौड़ दौड़ें।

हमारे धार्मिक त्यौहारों का क्या होगा? क्या हम उन्हें नहीं मना सकते?

मैं सोचता हूँ कि यह एक वस्तुनिष्ठ प्रश्न नहीं है इसलिये मैं कोई एक जवाब नहीं दूँगा।

प्रथमतया, हमारा प्रश्न ये नहीं होना चाहिए कि त्यौहार मना सकते हैं या नहीं, बल्कि ये कि इसे क्यों मनाया जाता हैं और हम इसे क्यों मनाना चाहते हैं। यदि आप इन प्रश्नों के उत्तर जान लेंगे तो संभव है कि उपरोक्त प्रश्न का उत्तर खोजने ज़रूरत ही न पड़े।

फिर भी यदि इस सवाल के जवाब में मैं आपको यही सलाह दूँगा कि आप जो भी त्यौहार मनाना चाहते हैं उसके उन सभी कार्यों से बचें जिनमें आप सच्चे और जीवित परमेश्वर की इच्छाओं का सम्मान नहीं कर सकते। ऐसे मौकों पर आप अपने परिवार और मित्रों के साथ समय बिता सकते हैं और प्रेम के साथ उनको परमेश्वर की सच्चाइयों के बारे में और बता सकते हैं।

मेरा सोचना है कि ज्यादातर त्यौहारों के पीछे (चाहे वो किसी भी धर्म के क्यों न हो) कोई न कोई उद्देश्य अवश्य होता है। कुछ सामान्य कारणों से मनाए जाते हैं और कुछ धार्मिक कारणों से। मैं यहाँ धर्म की बात नहीं कर रहा हूँ इसलिए धार्मिक त्यौहारों को मनाने की तरफदारी नहीं करूंगा पर बाकी त्यौहार मनाने में कोई समस्या नहीं होनी चाहिए। फसल की कटाई जैसे त्यौहार पर मनोरंजन करने और मिलने जुलने के समय, परमेश्वर के भजन और उसका धन्यवाद कर आप पवित्र जीवन जी सकते हैं और अपने

परिजनों को सुसमाचार सुना सकते हैं। ऐसे त्यौहार मनानें में क्या बुराई हो सकती है?

लोग उद्देशय को भूलकर रीतिरिवाजों में लग जाते है और ईश्वर का ही तिरस्कार कर बैठते हैं। यह एक भयंकर गलती है। धर्म या त्यौहार हमें परमेश्वर से दूर लेकर जाए ऐसा नहीं होना चाहिए, लेकिन हो ऐसा ही रहा है।

आज सभी त्यौहारों को व्यवसायिक रूप दे दिया गया है जो कि बेहद दुखद बात है। उदाहरण के तौर पर ईसाई त्यौहार 'बड़ा दिन' (क्रिसमस) को ही ले लीजिए। दुनियाभर में प्रभु यीशु के जन्मोत्सव के उपलक्ष में यह पर्व मनाया जाता है। दुःख की बात ये है कि ज्यादातर आयोजनों में बाकी सब चीजों का समावेश तो किया जाता है परंतु प्रभु यीशु को ही उससे दूर कर दिया जाता है। पार्टी, सजावट, नृत्य और मजे के सारे सामान जुटाये जाते हैं पर जिसके जन्म का ये सारा उत्सव है उसकी शिक्षाओं का मज़ाक बना दिया जाता है। ऐसे त्यौहार मनाने से अच्छा है कि हम इसे न ही मनाएँ क्योंकि उन्मुक्त होकर नाचते गाते समय परमेश्वर से दूर हो जाना कहाँ तक तर्कसंगत हो सकता है।

ऐसा नहीं होना चाहिए। चाहे आपका प्रश्न किसी भी धर्म के त्यौहार के बारे में क्यों न हो, यही सिद्धान्त उस पर लागू होता है। सोचिए, क्या आप प्रभु यीशु को उसके द्वारा महिमा दे सकते हैं, अगर नहीं तो फिर किसके लिए आप इसे मनाना चाहते हैं?

निचोड़ में हम कह सकते हैं कि हमें बुद्धिमानी से निर्णय लेते हुए ऐसा जीवन बिताना चाहिए जो बहुतों के लिए परमेश्वर के प्रेम का आदर्श बन सके।

और बाकी रीतिरिवाज़? क्या हम अपने से बड़ों के पैर नहीं छू सकते?

मैं समझता हूँ कि संस्कार तथा धार्मिक रीतिरिवाजों में अन्तर करने की समझ हमें परमेश्वर से माँगनी चाहिए। हमें पाखंड से तो दूर रहना चाहिए पर अपने किन्हीं संस्कारों को छोड़ने की ज़रूरत हमें तब ही पड़ती है जब

वो हमें परमेश्वर के मार्ग पर चलने में रुकावट डालें अन्यथा नहीं। इसके अलावा रूढ़ीवाद से ऊपर उठना आत्मिक जीवन से अलग बात है।

आपके प्रश्न के जवाब में मैं कहूँगा कि सामान्य तौर पर आप ऐसा कर सकते हैं पर इसमें किसी भी तरह से (अपने विचारों से अथवा विश्वास से) आप अपने आदरणीय को परमेश्वर का स्थान न दें।

कुछ रीतिरिवाजों में पति को परमेश्वर का दर्जा दिया जाता है, जबकि यह बात सत्य नहीं है। उस संदर्भ में जब एक पत्नी अपने पति के पैर छूती है तो वह अपने विचारों में परमेश्वर का स्थान अपने पति को देने लगती है जो कि एक पाप है। पति सिर्फ एक इंसान है जो कि परमपिता परमेश्वर की एक रचना है, और उसके चरण ईश्वर का दर्ज़ा देकर नहीं छुए जाने चाहिए।

लेकिन, यदि सिर्फ आदरवश कोई पत्नी अपने पति के पैर छुए तो इसे गलत नहीं ठहराया जा सकता। बाइबल भी पति को परिवार का अगुवा (सिर) मानकर पत्नी को उसके समक्ष नम्र बनना सिखाती है, परंतु साथ ही पति को मसीह जैसा प्रेम अपनी पत्नी से करने के लिए भी आज्ञा देती है।

उसी प्रकार बच्चों का अपने से बड़ों का पैर छूना और उनसे परमेश्वर के आशीष-वचन पाना गलत नहीं है। बाइबल हमें अपने आपको छोटा बनाने के विषय में भी शिक्षा देती है।

बाइबल की शिक्षाओं के आधार पर परमेश्वर का भय मानते हुए यदि आप प्रार्थना के साथ पवित्र आत्मा की अगुवाई में सही निर्णय लें तो परमेश्वर आपको आशीष ही देगा।

शादी और अन्य समारोह के बारे में आपके क्या विचार हैं? हमारा बाकी सारा परिवार अभी भी पुराने धार्मिक रीतिरिवाज मानता हैं, तो क्या हमें उनका विरोध करना पड़ेगा?

यह भी व्यक्तिपरक श्रेणी का एक सवाल है। मैं फिर कहूँगा कि आपको स्वयं ही परमेश्वर की अगुवाई में यह निर्णय लेना पड़ेगा क्योंकि हरेक परिस्थिति पर निर्भर करता है कि आपको क्या करना चाहिए।

आप दोनों ही छोर पर लोग पाएँगे – कुछ वे जो अपने परिवार और समाज के सामने बगावत करके प्रभु को महत्व देते हैं (जिसमें कोई गलती तो नहीं है, परंतु यह दुस्साहस है) और दूसरे तरह के लोग जो पूरी तरह से परिस्थितियों के वश में हो जाते हैं और वो सभी काम करते हैं जो कि जीवित परमेश्वर को महिमा नहीं देते। मेरे विचार में परिस्थिति के अनुसार हमारा निर्णय ऐसा होना चाहिए कि जिससे हम परमेश्वर की महिमा से तो समझौता न करें पर किसी तरह से अपने परिवार तथा समाज से भी ऐसे टूट न जाएँ कि फिर हमें उन्हें सुसमाचार सुनाने का मौका ही न मिले।

शादी इत्यादि समारोहों के तरीके से ज्यादा जैसे पौलुस कुरिन्थियों कि कलीसिया को समझाता है कि विश्वासी और अविश्वासी असमान जुए में न जुतें, यह बात समझना ज़रूरी है। विवाह एक जिन्दगीभर का निर्णय है और यह एक परमेश्वर के विश्वासी व्यक्ति के साथ ही किया जाना चाहिए।

📖 *अविश्वासियों के साथ असमान जूए में न जुतो, क्योंकि धार्मिकता और अधर्म का क्या मेल-जोल? या ज्योति और अन्धकार की क्या संगति ?*

[2 कुरिन्थियों 6:14]

खासतौर पर पहली पीढ़ी के विश्वासियों के लिए मेरा सुझाव है कि हो सके तो वे अपने पूर्वमत से मसीही विश्वास में आए विश्वासी व्यक्ति से ही वैवाहिक संबंध बनाएँ। ऐसा व्यक्ति आपकी किसी किसी बात को न कर पाने की सीमाओं को और अन्य पारिवारिक मूल्यों को समझ सकता है। इस बात से मैं कोई भेदभाव पैदा करने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ पर मैं सोचता हूँ कि पहले से ईसाई परिवार में जन्मे लड़की या लड़के के लिए किसी दूसरे धर्म में जन्में व्यक्ति की भावनाओं को तथा उसके अन्य अविश्वासी रिश्तेदारों के रीतिरिवाजों से सामंजस्य बिठाने में दिक्कत आ सकती है। फिर भी, यह कोई सिद्धान्त नहीं है, बस एक सुझाव है। हो सकता है कि परमेश्वर की आपके विषय में कुछ और ही योजना हो इसलिए पवित्र आत्मा की अगुवाई ही सर्वोत्तम उपाय है।

किसी भी हाल में शादी की बात की शुरूआत में ही अपने विश्वास की गवाही सच्चाई के साथ बताकर ही बात आगे बढ़ानी चाहिए। ऐसे में संभव है कि यदि परमेश्वर की उस व्यक्ति के उद्धार की योजना आपके जीवन से ही जुड़ी हो तो आपका निर्णय ठीक साबित होगा।

इसके अतिरिक्त जन्म तथा मृत्यु सम्बंधित अन्य समारोहों के विषय में मैं इतना ही कहूँगा कि मसीही विश्वास और बाइबल के सिद्धान्तों से समझौता न करें।

बाकी दाह-संस्कार और दफनाने के विषय में मैं कोई खास चिन्ता नहीं करता हूँ। वे लोग जो सोचते हैं कि परमेश्वर हमारे इस नश्वर शरीर को ही हमारे फिर जी उठने के समय इस्तेमाल करेंगे, संभवतया परमेश्वर को सीमित करते हैं। मैं शरीर में जी उठने का विरोध नहीं कर रहा हूँ। मैं पूरा पूरा विश्वास करता हूँ कि हमारे पुनरुत्थान के समय हमें अविनाशी शरीर दिये जायेंगे जो कभी नाश होने के नहीं जबकि हमारे दुनियावी शरीर तो नश्वर ही हैं। जो परमेश्वर मिट्टी में मिले शरीर से नया शरीर पैदा कर सकता है वो मिट्टी में मिल चुकी राख से भी ऐसा कर सकता है, उसके लिए कुछ मुश्किल नहीं है। यदि सबके साथ मिलकर एक मन होकर मृत शरीर को दफनाया जा सके तो ठीक है अन्यथा इस विषय में धार्मिक अथवा सामाजिक विवाद खड़ा करना कोई समझदारी नहीं है।

2001 में मेरी बहन का विवाह हिंदू रीति से हुआ और 2003 में स्वयं मेरा और प्रेरणा का बौद्ध रीति से, क्योंकि हमारा बाकी परिवार विश्वास में नहीं था। फिर भी हमने हरसंभव प्रयास किया कि किसी भी बात में परमेश्वर प्रभु यीशु के विरुद्ध कोई पाप न हो। मार्च 2006 में दादाजी का और मई 2006 में पापा का देहान्त हो जाने पर हमने उनका दाहसंस्कार किया।

पर मेरा प्रेम सम्बंध एक अविश्वासी से है, और हो सकता है यह प्रभु की योजना हो ताकि मैं उसे विश्वास में ला सकूँ और एक आत्मा नाश होने से बच जाए।

ऐसा हो सकता है पर ऐसा नहीं होने की संभावना ज्यादा है।

यह बात परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के बहाने हमें परमेश्वर से दूर ले जाने की शैतान की एक चाल भी हो सकती है। परमेश्वर तो आत्माओं को बचाना चाहता है पर उसके लिए वह अपने सिद्धान्तों के विपरीत कोई काम नहीं करेगा। जब वो हमसे कहता है कि असमान जुए में न जुतो तो वह चाहता है कि हम इस बात को मानें और इसका पालन करें।

और यदि आप शादी से पहले अपने प्रेम प्रसंग के दौरान अपने साथी को परमेश्वर के प्रेम के विषय में नहीं बता सके तो शादी के बाद ऐसा कर पाने की संभावना तो और भी क्षीण है। लड़कों के लिए तो यह फिर भी संभव हो सके पर खासतौर पर भारतीय समाज में लड़कियों के लिये तो अभी भी यह मुश्किल ही है। ज्यादातर ऐसा होता है कि जिस बात में पति और उसके परिवार वाले विश्वास करते हैं, उस परिवार की बहू भी उसी बात को मानने के लिए बाध्य हो जाती है।

ऐसा करके आप कहीं अपनी आत्मिक उन्नति के मार्ग में स्वयं रोड़ा तो नहीं लगा रहे हैं?

मैंने सुना है कि ईसाई लोग जबरन या पैसे इत्यादि से लुभाकर धर्म-परिवर्तन करते हैं। क्या ये बात सच है?

बाइबल इस विषय में कभी ऐसा नहीं सिखाती है कि ज़बरन अथवा लुभाकर किसी का धर्म परिवर्तन किया जाए। बाइबल और इसमें वर्णित परमेश्वर का धर्म से कोई विशेष नाता नहीं है। इतिहास में यदि ऐसा हुआ हो तो अलग बात है पर यदि आज भी कोई ऐसा करता है तो यह सच में खेदजनक बात है।

मेरा मानना है कि हमारा परमेश्वर धार्मिक नहीं अपितु आत्मिक है। और उसका उद्देश्य आत्माओं को पाप तथा मृत्यु से बचाना है। परमेश्वर हमसे प्रेम करता है और उस प्रेम के निमित्त वो हमको जीवन परिवर्तन कर (पापों से मन फिराकर) उससे प्रेम संबंध बनाने को लिये बुलाता है।

यदि हम उसके सच्चे चेले हैं तो धर्म-परिवर्तन हमारे लिए आखिरी बात होगी जो हम करना चाहेंगे। धर्म-परिवर्तन एक छलावा है, ढोंग है, दिखावा है जिससे कुछ हाँसिल नहीं हो सकता। हमारे अन्तःकरण का परिवर्तन ही सच्चा परिवर्तन है।

📖 *परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसकी आराधना करनेवाले आत्मा और सच्चाई से आराधना करें।*

[युहन्ना 4:24]

प्रभु यीशु ने किसी धर्म की शुरूआत नहीं की बल्कि उन्होनें अपने प्रेम तथा मोक्ष का सुसमाचार इस दुनिया को देने के लिये कहा है ताकि दुनिया के छोर छोर से जातिगत, धर्मगत भेदभाव और रंगभेद से ऊपर उठकर सब लोग अनंत जीवन पाएँ।

क्या ये बात सच है कि कई ईसाई लोग इंसान का माँस खाते हैं?

हाह। पता नहीं ये बात कहाँ से लोगों के दिमाग में आई, पर यह बात शत प्रतिशत गलत है।
बाइबल में इस विषय में जो एकमात्र उल्लेख है वह प्रभु यीशु का अपने बलिदान के बारे में वो कथन है जिसमें उन्होंने दृष्टांत के तौर पर इसको समझाया।

📖 *जीवन की रोटी जो स्वर्ग से उतरी, मैं हूँ। यदि कोई इस रोटी में से खाए, तो सर्वदा जीवित रहेगा; और जो रोटी मैं जगत के जीवन के लिए दूँगा, वह मेरा मांस है। इस पर यहूदी यह कहकर आपस में झगड़ने लगे, "यह मनुष्य कैसे हमें अपना मांस खाने को दे सकता है ?" यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि जब तक तुम मनुष्य के पुत्र का मांस न खाओ, और उसका लहू न पीओ, तुम में जीवन नहीं। जो मेरा मांस खाता है और मेरा लहू पीता है, अनन्त जीवन उसी का है; और मैं उसे अंतिम दिन फिर जिंदा कर दूँगा। क्योंकि मेरा मांस वास्तव में खाने की वस्तु है और मेरा लहू वास्तव में पीने की वस्तु है। जो मेरा मांस खाता और मेरा लहू पीता है वह मुझ में स्थिर बना रहता है, और मैं उस में। जैसा जीवते पिता ने मुझे भेजा, और मैं पिता के कारण जीवित हूँ, वैसा ही वह भी जो मुझे खाएगा मेरे कारण जीवित रहेगा"*

[युहन्ना 6:51-57]

उपरोक्त कथन के द्वारा प्रभु यीशु एक बहुत गहरी बात अपने चेलों को समझा रहे थे जो कि मांस और लहू से कहीं बढ़कर है। वो अपने कष्ट, मृत्यु तथा पुनरुत्थान के विषय में और लहू बहाकर पापों की क्षमा के विषय में बात कर रहे थे।

बाइबल में तो कौन सा खाना खा सकते हैं और कौन सा नहीं इसका भी स्पष्ट विवरण पुराने नियम में मिलता है।

ऊपर लिखे बाइबल वचन के अलावा बाइबल में और कोई उल्लेख नहीं है जिससे किसी को यह गलतफहमी भी हो सके कि मसीही विश्वासी इंसान का मांस खाते हैं।

क्या मसीही विश्वास में माँसाहारी (नॉनवेज) खाने पर जोर दिया जाता है?

नहीं। यह एक भ्रांति है, और इस बात में कहीं कोई सच्चाई नहीं है। मेरी पत्नी प्रेरणा वेजीटेरियन (शाकाहारी) है और पिछले 8 सालों के मसीही विश्वास में उसने कभी भी मांस का सेवन नहीं किया, और मेरे विचार में वो प्रभु से प्रेम करने वाली और उसका भय मानकर जीवन यापन करने वाली महिला है।

बाइबल में लिखा है कि कोई खास वस्तु खाना अथवा न खाना हमें स्वर्ग के राज्य के निकट नहीं ला सकता बल्कि हमारे कुछ खाने से किसी नये विश्वासी भाई या बहिन को ठोकर लगती हो तो बेहतर है कि हम ऐसा भोजन न खायें।

📖 *भोजन हमें परमेश्वर के निकट नहीं पहुँचाता। यदि हम न खाएँ तो हमारी कुछ हानि नहीं, और खाएँ तो कुछ लाभ नहीं। परन्तु सावधान! ऐसा न हो कि तुम्हारी स्वतंत्रता कहीं निर्बलों के लिये ठोकर का कारण न हो जाए।*

[1 कुरिन्थियों 8:8, 9]

ऐसा मैंने भी किया और कई साल तक मांस इत्यादि को हाथ नहीं लगाया ताकि प्रेरणा के विश्वास को ठोकर न लगे। उसकी आत्मा को स्वर्ग के राज्य में लाने और उसे विश्वास में मज़बूत करने के लिये जो ज़रूरी था मैंने किया ताकि वो मेरे उसके प्रति मसीही प्रेम को देख सके और उस परमेश्वर में विश्वास करे जो उसके पाप क्षमा कर उसे भी अनंत आशीषें देना चाहता था।

बाइबल के अनुसार हम क्या खाते हैं उससे हमारे आत्मिक जीवन पर उतना प्रभाव नहीं पड़ता बल्कि उससे जो हमारे अंदरूनी विचारों, भावनाओं, व्यवहार तथा विश्वास के कारण बाहर आता है।

📖 *क्या तुम नहीं जानते कि जो कुछ मुँह में जाता वह पेट में पड़ता है, और सण्डास से निकल जाता है? पर जो कुछ मुँह से निकलता है, वह मन से निकलता है, और वही मुनष्य को अशुद्ध करता है।*

[मत्ती 15:17, 18]

दूसरे हाथ पर यदि हम तकनीकी तौर पर जीव हत्या के पाप की सच्चाई को जाँचें तो हम पाएँगे कि हम प्राणी को मारने से अपने आपको बचा ही नहीं सकते। सड़क पर चलते कितने ही छोटे छोटे जीव हमारे पैरों के नीचे आकर मर जाते हैं, फिर क्या वो पाप नहीं? विज्ञान कहता है कि पौधों में भी प्राण है तो क्या उनको खाकर हम पाप नहीं करते? इस आधार पर तो हम जी ही नहीं सकते इसलिये मेरे विचार में इस बात पर विवाद करना व्यर्थ है।

सच्चा मसीही विश्वास किसी पर कुछ थोपता नहीं है क्योंकि परमेश्वर का पवित्र आत्मा हमें स्वतंत्रता देता है। परमेश्वर ने हमें स्वतंत्र इच्छा के साथ बनाया है। हम उससे प्रेम करें या उसका तिरस्कार, ये हमारी इच्छा है। ऐसा परमेश्वर क्या किसी बात के लिये हमें बाध्य करेगा? नहीं, आप इस विषय में निश्चिंत रह सकते हैं।

***

आपके और भी प्रश्न हो सकते हैं जो मैंने यहाँ उत्तर नहीं किये हैं परंतु परमेश्वर आपके सवालों के जवाब दे सकता है। आप प्रार्थना और विश्वास से उसके पास आइये। प्रभु आपको आशीष देंगे।

नोट बनाने के लिये जगह

जीवन से साक्षात्कार

मुझे मोक्ष तथा सच्ची शांति कैसे मिली

लेखक के विषय में

बृजेश चोरोटिया का जन्म भारत के राजस्थान प्रदेश में हिंदू परिवार में फरवरी 1977 में हुआ। उन्होंने अपनी शिक्षा जयपुर तथा रूड़की में भूविज्ञान के क्षेत्र में पूरी की।

जब वो कॉलेज में अपनी पढाई पूरी कर रहे थे तब हिंदू परिवार से मसीही विश्वास में आई एक बहन उनसे मिली जिन्होंने यीशु मसीह का सुसमाचार उन्हें सुनाया और एक बाइबल भेंट की। वे प्रार्थना करने लगे और जीवित परमेश्वर से हुए इस साक्षात्कार ने उनका जीवन बदल दिया।

धर्म तथा आध्यात्म की अपनी खोज में उन्होंने अपने निष्कर्ष निकाले। पहला कि सभी धर्म एक समान हैं और जीवन जीने के लिए नैतिक शिक्षा देते हैं परंतु परमेश्वर से मिलन कराने में असमर्थ हैं, तथा दूसरा कि परमेश्वर कोई बहुत दूर नहीं है जिस तक पहुंचा नहीं जा सकता, बल्कि वो हमसे इतना प्रेम करता है कि वो स्वयं धरती पर यीशु मसीह के रूप में उतर आया ताकि हमारे पापों को क्षमा करे, ताकि उसके साथ हम व्यक्तिगत संबंध बना सकें।

पुस्तक के विषय में

परमेश्वर ने उनके मन में एक बोझ डाला कि अपने जीवन की गवाही लिखें कि कैसे परमेश्वर ने उनके जीवन में मोक्ष का आश्चर्यजनक काम किया। यह पुस्तक ईश्वर को जीवंत रूप में दिखाने का एक प्रयास है।

यह किताब उन सवालों के जवाब देने का भी प्रयास करती है जो कि उन लोगों के मन में उठते हैं जो ईसाई परिवार में पैदा नहीं हुए परंतु जिन तक प्रभु यीशु का सुसमाचार पहुंचा है।

आप अपने विचार व अतिरिक्त सवाल ई - मेल Chorotia@gmail.com कर सकते हैं।